राजस्थान में आजादी रौ आन्दोलन

सम्पादक
जहूरखां मेहर
इतिहास विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय

हिन्दी साहित्य मन्दिर
मेड़ती दरवाजा अन्दर, जोधपुर

प्रकासक
सचिव, श्री जगदीशसिंघ गहलोत सोध संस्थान
मेड़ती दरवाँजा, जोधपुर

C. जहूरखां मेहर

पैलड़ी छपाई : 1 मई, 1986

मोल : पोथी रीठ 20 रुपिया

छापाखानो
"राजस्थान" प्रिन्टर्स
सोजती दरवाजा, जोधपुर

राजस्थान में
आजादी री अलख
जगावण वाळा सगळा
जाणिया अजाणिया
आजादी रा आगीवाना
नै
घणैं मान सूं अरपण

— जहूरखां मेहर

ओळखाण

राजस्थान रै इतिहास अर साहित्य री उणियारो करता करावता अेक खास गत थसक पकडली। टाड साब अर बीजा बिलायतियां राजस्थान रा इतिहास लिखारा न कण कण माथै थरमोपोली जेडा जुद्ध अर घर घर मे लियोनीडाज रै जोड जोग जू भार झाली अेडो भाट भेलाई क वा पीढी दर पीढी रै घटोयट बैठ अतस उतरगी। अजै घणकरा वा इज धाई वाधियोडा। राजस्थान रै इतिहास री की भणक पडी अर माई लोग सूरमाई अर दातारी रा न्यारेक बोला साफ फरा फरा होट फुरकाय दै। इण सूरमाई आळी बाता माय सू घणकरी बाता सवा सोळै आना खरी, टकै आगली साच। पण बापडा बिलायतिया इण मुलक री रग रग नै कद ओळखता। आज आळा टूरिस्ट (सलाणी) घूमर अर गिणगोर भावा रै अेयर कडीसन बगला मे रेवौ भलै ई पण मरु खेतर रै मभ रेवणिया मिनखा रै अतस मडियोडा भावा नै कद ओळखै अर इण सू उणा री तल्लो बल्लौ ई काई। नी तौ राजस्थानी रीत भात नै समभणजोग जमारो अर ठरको उणां री हूौ अर नीस ही राजस्थानी रग रग नै पपोळण री खरी मसा।

आज केई इतिहास पागी बिलायती लिखारा रै काडियोडो कू डाळियै री कार नै डाकण री खप्पत करण में लागोडा है। देस नै आजाद हुया दो बीसी बरस हूवण आया पण देस री आजादी री अलख जगावण वाळा आगीवानां बाबत अजै ठसकै सू गिणावणजोग की सामग्री चवडै आई कोयनी। खासकर राजस्थानी भासा मे तौ इण गत री सामग्री री अगेई टोटो। पीढी दर पीढी र कठा रफोळीजतो फलाणजी अर ढीकडजी री साची-कूडी बाता तो हर किणी अोमजी भोमजी अर नूरिय जमालिय रै चित चढियोडी। पण देस री भूरको वोछडी (अगरेज) सू पिड छोडावण खातर सै की होमणवाळा खुसालसिघ, मेहराबखा अर जयदयाल री करणी कुण जाण ? विजयसिघ पथिक, जोरावर-सिघ बारहठ अर गोपाळसिघ खरवा सरीसा हीर्यां हयाळी लै'र पेरामाउ ट पावर (ब्रिटिस राज) रै सामा पग रोपण वाळा री गुमेज गाथा माथै कुण गिनार करै ? कुरीता मे कळीजियोडा भूख बिखो काडता भीला न चेतावणी रा चू ठिया चमठा

अर आन्दोलन सारु अड़ीजंत करण वाळा गोविंदगरु अर भोल आन्दोलन रा सिरायत मोतीलाल तेजावत री करणी किताक मोटियारां नैं बिडदावण री काम सारै। खुदमुख्त्यार हकूमत सारु अलेखां अवखायां उखणण वाळा जयनारायण व्यास, हीरालाल सास्त्री, गोकुल भाई भट्ट अर माणिक्यलाल वर्मा सरीसा आजादी रा आगीवानां सागै जिकी अणूताई हुई उणनैं कुण चितारे ?

राजस्थान में आजादी रै आन्दोलन री बातां सावळ चावी नीं हुवण सूं लोगां नैं इण आन्दोलन री गहराई री कीं तुमार ई नीं। लोग इण बात रा म्यांना पूछता ई निगै आवै क राजस्थान में ब्रिटिस हकूमत तौ ही कोयनी पछै आजादी रौ आन्दोलन केड़ो ? जद क असल में राजस्थान में आजादी रा आगीवानां री अवखायां बीजी ठौड़ रा आन्दोलनकारियां सूं दोवड़ीज कांई तेवड़ी-चौवड़ी ही। रजवाड़ां माथै छत्तर छीयां करियोड़ी ब्रिटिस हकूमत, आप रियासतां अर जागीरदार इण तीनां री सामनो करणजोग गाढ रा धणीज अठै आजादी री अभूत चोपड़ण सारु कमर कस सकता हा। पछै राजस्थान रौ मानखौ निपट भोळौ। पीढियां सूं जुल्म जास्ती सैंवतौ घाणी रै बळद ज्यूं भेड़ी हेवा पड़ियोड़ी क सैकड़ां जुल्मां थकां सुस्कार ई नीं करतौ। सो इण गत रा साव भोळा भटूक अबूझ लोगां नैं आन्दोलन सारु त्यार करण में आगीवानां नैं घणी इज जोर लगावणौ पड़तौ।

ठीक राजस्थान रै इतिहास आळी फळाई राजस्थानी भासा ई घणकरा लोगां सारु कोरी भड़ां नैं बिड़दावण वाळी कविता इज। लोगां रै राजस्थानी साहित्य रौ म्यांनौ कवितावां समझण री कालाई सूं म्हा में ई अेकर कुजरवी घणी हुई। जोधपुर री अेक ठावी संस्था तीन राजस्थानी साहित्यकारां रौ सम्मान करण री तेवड़ी। जोधपुर रा खास चावा-ठावा लोगां री इण क्लब रा सचिव, खचाखच भरियोड़ै हाल में, हरखीजता अेलान करियौ क तीन तीन राजस्थानी साहित्यार अपां बिचै मौजूद है सो आज तो घणी रात ग्यां तांई भांत भांत री कवितावां रा लावा लूटांला। जोग री बात क उण दिन आप म्हारै समेत तीनूं साहित्यकार गद्य लिखारा। मंच माथै बैठां ई भाला कर सचिव साब नैं कनै बुला अर कान में खुसर पुसर कर समझावण रा कळाप करिया। पण भाई जाणियौ कविगण दिखावटी नखरा करै है अर मनवारां सूं मान आवैला। खट देणा माइक माथै जा अर सचिव साब तो अेक साहित्यकार रौ नाव लै अर कविता सुणावण री मनवार करता इज निगै आया। सत्ताजोग सूं जिकण साहित्यकार रौ पैलपरांत नांव बोलीजियौ वै दाठीक, पुराणा चावळ, केई दगल चीरियोड़ा सो माइक माथै जा अर करुण बहत्तरी (द्रोपदा विनय) रा दो च्यार रटिया रटाया दुवा सुणा अर ज्यूं त्यूं गाडो गुड़ा दियो। पछै म्हैं पकड़ीज्यौ। पैलां थोड़ी पोडियां धूजी पण सेवट जीव काठौ कर कैंवणौ पड़ियौ क म्हारी सात पीढी में ई कोई कविता करी कोयनी, म्हारौ कविता सूं की वास्तौ इजनीं है अर म्हारी समझ सूं वोजोड़ा साहित्यकार सूं ई कविता री फरमाइस करणी

विरथा है। उण दिन समझावण री खासी सप्पत करी पण भाई लोगा रै गळै आ बात नी उतरी क कविता करिया टाळ राजस्थानी साहित्यकार हुया तो हुया ई कीकर ? आ बात तो है मारवाड री नाक गिणीजण वाळा लोगा री जद लाई आम आदमी माथै राजस्थानी कविता री साचो सिप्पो जमियोडो है तो कांई इचरज।

आ बात है ई खरी क राजस्थानी भासा रै काव्य री माठ मरोड घणीज सरावणजोग अर इण री ओप फाब बीजी किणी भासा री जोड मे सवायो ठरको राखै। आप राजस्थानी रो सगळा सूं लाठो पातो ठेट सू ई इणरो पद्य इज है। पण सगळी बाता अगेजता थका इत्ती बात तो मानणीज पडै क वि. स. 835 सू राजस्थानी गद्य रै जोर जोबन रा हवाला मिळण लाग जावै। राजस्थानी भासा रो म्यांनो फोरो पद्य इज कोयनी। ख्यात, बात, वचनिका, दवावैत, किस्सा, पीढियावली, हकीकत, विगत, हाल, वाकिया, सूरतनामा, रुक्का, परवाना, पड अर खरीता जेडा माळोपन्ना जूनै राजस्थानी गद्य री मालदारी री साख भरै। आजादी पछै राजस्थानी गद्य नै वत्तो दाठीकपणो देवण रा केई जतन करीज्या। नाटक, एकाकी, उपन्यास, कहाणी अर निबंध विधाया खासी पागरी। इतिहास सूं जुडियोडा राजस्थानी निबधा री अेक भळै कडी इण पोथी रै रुप मे राजस्थानी गद्य मे पेडं जोडण री कोसीस है।

अठै म्हारा गरु जोधपुर विस्वविद्यालय मे इतिहास मेहकमै रा भूतपूर्व अध्यक्स डा आर पी व्यास रो किरियावर चवडै धाडै अगेजूं जिणा रै 1885 ई. सूं 1947 ताई राजस्थान मे आजादी रै आन्दोलन रै इतिहास वाळै निबध बिना आ पोथी भवै ई पार नी पडती।

राजस्थान रा खावा इतिहास लिखार स्व० जगदीससिंघ गहलोत रा जोग पाटवी सुखवीरसिंघ ई घिन रा भागी, जिणा इण पोथी साथ 'राजस्थान रो अकीकरण' निबध तो ठायो साथै ई पोथी नै छपावण रा जुगाड ई बैठाया।

पोथी आप नै सरावणजोग लागै इण बात री तो म्हैं आस इज राख सकूं पण म्हारो आ हूंस तो पूरीज ई गो क लोगा रै इतिहास नै लोगां री आपरो भासा मे लोगा सामी धरु।

आ पोथी जै राजस्थानी गद्य मे तुस्यै बरोबर बधोतरी करणजोगी निवड जावै तो घिन माग।

सिवाची दरवाजो, सिंघिया री बास,
जोधपुर
1 मई 1986

जहूरखां मेहर

विगत

क्रान्ति री कीरत-कथा

जहूरखां मेहर

राजस्थान मध्य काल मे अणी-कणी वाळो मुलक गिणीजतो अर अठा री माठ मरोड जग चावी ही। राजस्थान रा मिनखा सूरमाई अर त्याग बलिदान री नवी सू नवी धजावा फरुकाई। घणा घणा भिडमल अठी मू डो करण सूं हबक खावता। इण सारु आ बात घणीज खटकै क अेडै राजस्थान रा लोग पैरामाउट पावर री आसरो क्यू लियो ? इण बात रै म्यानै सारु उण समै रै इतिहास माथै निजर नाख्यां केई बाता उघड नै सामी आवै। अठारमै सईकै रै छेलै छेडै अर उगणीसमैं रै सरुवाद रै पन्दरै बरसा मैं राजस्थान मे अेडी जबर ऊठक पठक मची क अठै रा राव-राजा-राणा हडवडीज अर अगरेजा र खोळै मे जाय बैठा। औरगजेब पछै मुगला मे निबळाई वापरगी। राजस्थान माथै इण रो भारी असर पडियो। सर जदुनाथ सरकार लिख्यो "सगळो राजस्थान अेक अेडो अजबघर बणग्यो जिक रै पीजरा र नी तो फाटका ही अर नो कठेई पोरंदार ई हा।' [1] मराठा रो कोडो दळ फोजा रा मुणिया काना रा कोडा झडै जेडै जुलमा सू मुलक खळ बिखळ हुगो। अठै राज-पाट सारु कजिया ई इण वेळा अणूता इज हुया।[2] कदेई कोई कोई मराठा नै आपरै पक्खं रा वळु बणा लायो।[3] तो कठेई पिडारिया रा अेवड रा अेवड इण ओरण मे किणी लालचियै वाड दिया।[4] मराठा री लग्गू लूट सू कर नै घणकरा रजवाडा रै खजाना मे भूआजी थडिया करण लागा। माल-असबाब रै बाघा बोलिया फौज वळ मे मत्तं ई नाजोगापणो अर निबळाई वापरगी। अेडी रोळघट्ट मे सरदार सामन्ता रो ई वख लागो अर मत्ता-मत्तो भरं पडै ज्यू ई करण लागा। इण गत रो विपदावा मे कळीजियोडा राजस्थान रा राजा अगरेजा रो आसरो मिळिया धिन भाग गिणिया। 1818 ई० रै लगै टगै राजस्थान रा घणकरा रजवाडा रा अगरेजा सू कररनामा हुग्या।

अगरेजा सू सधिया हुवा अेकर तो उथ्थाळै आयोडै राजस्थान में ठार वापर ग्यो। धकलै दो वीसी बरसा ताई सगळी वाता ठाणं आयगी अर मानखं सोरो सास लियो। को तो 1761 ई० मे पाणीपत रै तोजै जुद्ध मे अहमदसा अब्दाली मराठा रा मक्कड भाग दिया अर बचिया कुचिया मरमट अगरेजा गाळ दिया। सो अगरेजा सू सधिया पछै मराठा इण मुलक कानी मू डो करणजाग गाड भेळो नी कर सकिया अर वा सू हरमेस वास्तं पिड छूट ग्यो। राज-पाट रा

सहायक प्रोफसर, इतिहास विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय

कजिया सूं ई उघगड मचणो बद हुगो। अगरेज जिकण रा वळु वणता उण रो पाट पक्को। पछै खोलो रो ई खटको नी। सधिया सू पैला मूछ फुरकाई मे इज हूवणकी राडा रै फाडी लागगो। अगरेजा रा दो भीड भिडै तो ब्रिटिस राज र ठवक पूगै सो वा नै भिडण कोकर देवै। घमघमिया करता ठाकर ठूमरा रो जोरो ई हेटो पडियो अर वा रै नथ घालीजगी। इण गत सधिया सू पैला हूवणकी सगळी कुपीता रै कारी लागगी।

पैला दिल्ली रै रेजिडट नै राजस्थान रा सगळा रजवाडा री देखरेख सू पीजी पण 1832 ई० मे राजस्थान मे राजपूताना रेजीडेंसी थरपीजगी अर साळ सभाळ रो काम अे जी. जी (अेजट टू दी गवर्नर जनरल) नै सू पियो।[6] सन् 1857 में राजस्थान मे 18 देसी रजवाडा, अजमेर रो ब्रिटिस जिलो अर नीमच री छावणी ही। उदैपुर, जोधपुर, जैपुर, भरतपुर अर कोटा, पाच जागा पालिटिकल अेजट हा। नसीराबाद, नीमच, देवली अर अेरनपुरा मे फौजी मुकाम हा। इण फौजी मुकामा मे सगळा रा सगळा देसी सिपाई हा। ब्रिटिस अफसरा री निगैदास्ती मे ब्यावर अर खेरवाडा मे ई छोटी छोटी फौजी टुकडिया तैनात ही जिणा मे भील अर मेर सिपाई हा। राजपूताना मे कुल पाचेक हजार फौजी हा पण आबू रै थोडा घणा गोरा टाळ, बीजी जागा सॅग रा सॅग देसी सिपाई इज हा।[7]

1857 मे क्रान्ति रै समै मारवाड मे मेक मेसन, मेवाड मे मेजर सावर्स अर जयपुर मे कर्नल ईडन पालिटिकल अेजट हा अर अजमेर मे जार्ज पैट्रिक लारेंस काम चलाउ अे जी जी रै रुप मे काम धकावता हा।[7]

सन् 1857 मे भारत मे क्रान्ति री तुरतोतुरत वजै अेन्फोल्ड राईफल्स ही जकी पैलडी वार क्रीमिया रै जुद्ध मे इज काम मे लिरीजी।[8] इण राईफल मे अेक खास गत रो कारतूस पराटोजतो जिण माथै कागद चिपियोडो रेवतो। कारतूस नै राईफल र चेम्बर मे घालिया सूं पैला सिपाई आपरै दाता सू औ कागद उखेलतो जद वात वैठती। कहीज क इण कागद नै चोकणो राखण सार इण माथै गाय अर सूअर री चरबी चापडीजती। भारत रा फौजिया मे आ बात घर कर लियो क घोळै चामडै वाळा जाणता बूझता वां रो धरम बिगाडण रै मोजू मत्तै सू अडी राईफल लाया है। 26 फरवरी 1857 रा बहरामपुर मे 19 वीं रजिमट बसेटो कर दियो। 29 मार्च रा 34 वो रजिमट रै मगल पाडै नाव रै अेक बामण सिपाई बारकपुर री छावणी मे की अगरेज अफसरा माथै हमलो कर वा नै ठडा राख दिया। 10 मई रा मेरठ मे ई मचाभच मचगो। मेरठ रा बागी छावणी लूटिया पछ दिल्ली कानी बईर हुया। देखता देखता सगळै घोराऊ भारत मेहवीड ऊठण लागा।[9]

19 मई 1857 रा राजस्थान रे ग्रे. जी जी. जार्ज पट्रिक लारेंस कनै मेरठ री क्रान्ति रा वावड पूगा। उण समै वो राजपूताना रा सगळा पालिटिकल ग्रजटा सू आबू मे सल्ला सूत करतो हो।[10] फटाफट जाव्तै री कारवाई मे ग्रे जी जी राजपूताना रा राजावा ने फरमान मेलिया।[11] ग्रबै मुद्दो ग्रो ढगडै क ग्रगरेजा सू करारनामा हुया राजस्थान मे ग्रमन वापरियो, मराठा ग्रर पिंडारिया सू पिंड छूटो ग्रर ग्रापसरा कजिया ई मोळा पडिया। वेळा माथै लाई लारेंस साब जाव्तै री सगळी कारवाई ई करली। तोई राजस्थान मे क्रान्ति री लाय लगी तो क्यू लगी? सगळी वाता माथै सावळ गिनार करिया इण बाबत जिकै मुद्दा उघडै वै इण मुजब गिणाईज सकै—

(1) भूगोल रा विद्वाना राजस्थान नै न्यारी न्यारी पातिया मे वाटियो है।[12] कुल तरेमठ फीसदी जम्मी रेतोलो।[13] ग्रडावळ सू कगूणं हिस्स मे ग्राप ग्रडावळ री लडिया ठेट दिल्लो रै कांठै सू गुजरात ताई विखरियोडी।[14] ग्रवख भूगोल रै पाण राजस्थान हमलावरा सू कोरो रैय सकियो।[15] दिल्ली रा मुलतान, मुगल ग्रर ग्रगरेज पैला भारत रा बीजा मुलक जीतिया पछ राजस्थान सामो मूडो करियो। भूगोल रै पाण ई ग्रठै मोटा साम्राज्य नी पनप ग्रर छोटा छोटाक रजवाडा ग्रर गणतत्र वसिया। घणै बरसा हमला सू कोरा रैवण ग्रर ग्रवखी जीवारी सू ग्रठ मानखै मे सुनतरता रा भाव, ग्रहम ग्राद घणाइज पनपिया। जै कदई हमलो हुवतो तो सारो घणो लखावतो ग्रर ग्रठै रा मिनख विवरणं खार सू भिडता। ग्रगरेजी राज नै हीयै सू किणी नी ग्रगेजियो। ग्राभै मे दाबै जठी उमड घुमड दीठा देवता बादळा नै वाथ मे बाधण रा कळाप कीकर पार पडै। रोईराज नै मन मरजी सू पेखडो कद भावै। सुततरता खातर मुळकता माथो देवण वाळा राजस्थानी वीरा नै ग्रगरेजी ग्रकोडियो कद ताई काबू मे राख सकतो। सेवट तो सिघ भीभरणा इज हा। ग्रो तो वीजी ठौड कजियो हुवण री मिस मिल ग्यो नी जराई राजस्थान तो ग्रापरी रुण मुजब गुलामी री गळपटियो काटण रा कळाप करतो ई करतो। सो ग्रठै रो भूगोल ग्राजादी री जिण गत री तास ग्रठै रा लोगा में बैठाणी ग्रर ग्राद जुगाद सू सुततरता रा भाव मानखै रै मन में भरिया उण नै देखता ग्रगरेज ग्रठै खटता ई किनाक, सेवट तो हवोड ऊठणा इज हा।

(2) ठेट सू ई राजस्थान मे कविया रो काम ग्रठै रा राजावा नै जुद्ध सार विलमा ग्रर ग्रेडो कोड करावणो हो क वै होयो हथाळी लै ग्रर वैरिया माथै टूट पडै। दिल्लो सल्लतन रा पठाण सुल्ताना ग्रर पछै मुगली वेळा साहितकारा ग्रठै रा राजावा न साचा लडाया ग्रर मरण मारण खातर त्यार करिया। यू करता करावता ग्रठै रो साहित ग्रेक खास गत घसक पकडली। जूनी राजस्थानी कवितावा री पडताळ करिया लखावै क कवि ग्रर उणरी कविता जुद्ध रै घेर मे बधियोडा हा। फौजा-पलटणा रा समदर उमड पडिया, मतवाळे हाथिया रो

चिंघाडणो, तरवारा रै झटका सूं हाथिया री सूडां रो चटाक चटाक पडणो, तोपा-बन्दूका अर घोडा री खुरताळा रै भचीडा सूं आभै मे गू ज, झडा रो फरफरावणो, तरवारा रै फाटका सू वास्तै री चिणका उछळणो, काळै नागा आळी कळाई जोद्धाम्रो री फु फकार, भाला अर तरवारा रै वार सू डील रो किरची किरची विखरणो, डील सू लोई रा फूवारा छूटणा फेंफडा रा टुकडा टुकडा हू'र विखरणा, लोई सू रगावण आतडिया रो पगा ताई लिटकणो, खून री नदिया वेवणो, बादळा रै गडगडाट दाई तोपा रो गर्जन, कवारी सेना सूं परणीजणो, सिंधु राग रै समद रो लेरावणो, जुद्ध खेतर री खेह सू सूरज रो ढकीजणो क उणरो तेज चन्दरमा जेडो मिगसौ हूवणो, जुद्ध रै वेग सू कच्छप री पीठ रो चरमरावणो, डाढाळै री दाड रो वडकणो, सेसनाग रै फणा रो टकरावणो, हडहडाट सू नारद मुनि रो अट्टहास, लाई सू भरियोडो राती जिवाना वाळो जोगणिया रो ताळिया वजा वजा अर उधगड करणो, जुद्ध रै टामका माथै किलकारिया करती कालिका रो नृत्य, जमदूता रो कबडो रमणो, जुद्ध री धम-चक देखण सारु सूरज रो रथ रोकणो, महेस रै मु डा री माळा पेरणो, सिव रो भिडमला साथै ताळी वजा वजा'र ताटव नृत्य[10] जोगणिया रा खप्पर लोई सूं भरीजणा, अप्सरवा रो वर माळावा लिया भिडमला री वाटा जोवणो, तरवारिया रा पोखाळा हूवणा, डील री किरचिया किरचिया हू र तरवारा रै चढणो इत्याद इत्याद।

जुद्ध रै वखाण अर भडा नै विडदावण री आट माथै राजस्थानी साहित-कारा रो कदीमी कब्जो। साहितकारा न मान सम्मान री ई अठै पुरानी परपरा। साहित रचै तौ लाख पसाव, क्रोड पसाव अर पट्टा पावै। अगरेजा सू कराररनामा हुया पछकरा साहितकार जुच्च हुय्या। अगरेजा नै विदेसी वता विरोध करै तौ आप राजाजो नै भोपणा चढावणा पडै। ठाकरी ठरकै री मरोड माथै मोद करै तौ की पार पडै नी। मधिया पछ सिरदारा रा ई मरमट गळण लाग ग्या। अगरेजा रा भायला नै आपस मे भिडावण रा कळाप करै तोई विरथा जावै। मुगल पठाण अर मराठा रै हमला र दावौ लाग सोपो पडग्यो। अठी मे पडी जुद्ध रै वखाण आळी विधा ओदीजण लागी। कलमा रै काट चढण लागो अर पोथी पानडा रै उदई रो भख वणण री नौवत आय पूगी। साहितकारा रा काळजा कळपीजण हूवा। जीव धमटीज धमटीज अर माय री माय धपळका ऊठण लागा। केइ सोजीवान साहितकारा न आपरी जात जमात री इण दुरगत रो भान हुयो जद उणा ई चापळ तोडावण सारु चेतावणी रा चूठिया चमठाया। अगरेजा सू गल छोडावण मे इज सार लखायो। सेवट माय री माय खदनदती अगरेजा सू वर रो ज्वाला मुखो फूटो। वाकीदास अर सूरजमलजी सरीसा समझवाना न भूरको चीछडी मुलक रो लोई चूसती निगै आई। राजस्थानी साहितकार री कलम ठेट सू ई तरवार सू सवायो घाव पाडण वाळी री है। साहितकारा अगरेजा रो पापो काटण री धार ली पछै लाई अगरेजा री खिलाफ

प्रसग । जोधपुर महाराजा मानसिंघ रैं कह्यो चेतावणी रो गीत

आयो इंगरेज मुलक रैं ऊपर, आहस लीधा खेंचि उरा।
धणिया मरैं न दीधी धरती, धणिया ऊभा गई धरा॥
फौजा देख न कीधी फौजा, दोयण किया न खळा-डळा।
खवा खाच चूड़ै खावद रैं, उण हिज चूड़ै गई यळा॥

छत्रपतिया लागी नह छाणत, गढपतिया घर परी गुमी।
बळ नह किया बापडा बोता, जोता जोता गई जमी॥
दुय चत्रमास वादियौ दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस।
पूगो नही, चाकरी पकडी, दीधो नहीं मरैठा देस॥

बजियौ भलो भरतपुर वाळो, गाजै गजर धजर नभ गोम।
पहिला सिर साहव रो पडियो, भड ऊभा नह दीधी भोम॥
महि जाता चीचाता महिला, अै दुय मरण तणा अवसाण।
राखो रैं किहिक रजपूती, मरद हिन्दू को मुसलमान॥

पुर जोधाण, उदपुर, जपुर, पह थारा खूटा परियांण।
आक गई आवसी आक, वाक आसल किया वखाण॥

ठीक बाकीदास दाई 1857 सू पंला अगरेजा रो विरोध करण वाळा बू दी रा सूरजमल मीसण राजस्थानी मानख री ऊघ उडावण रैं मस्त सू 'वीर सतसई' रची अर केई कवित्त रच'र अठै रा राजावा नैं अगरेजा री छुट्टो करण सारु घणाई विडदाया।[17] गीत-कवित्त लिखण रैं साथ उणा राजावा अर ठावका सिरदारा न अगरेजा सू मुलक री पिंड छोडावण खातर अरदास री चिट्ठिया ई मेली।[18] जीविया जित अगरेजा सू वर पाळण वाळा जोधपुर रा महाराजा मानसिंघ साहितकार आळै रुप मे ई अगरेजा रो विरोध करियो अर 1857 री क्रान्ति सू पला मानखै रैं मन मे आपरी कलम रैं जोर सू अगरेजा सारु खार निपजावण रा कळाप करिया।[19] आढा जवानजी,[20] बारहठ दुर्गादत्तजी,[21] आढा जादूरामजी,[22] आसिया बुधजी,[23] तिलोकदानजी,[24] आढा चिमनजी,[25] गोपालदानजी दधवाडिया,[26] लाळस नवलजी[27] आदि अेडा कित्ताई साहितकारा रा नाव गिणाईज सकै जिका 1857 री अलख जगावण मे आप री कलम री कारीगरी बताई।

'फ्रासनी राज्य क्रान्ति' री वेळा रुसो, वाल्टेयर, मान्टेस्क्यू, दिदरो अर कोलीन जेडा विद्वाना अर रुस री बोल्सेविक क्रान्ति सू पंला मार्क्स, टालसटोय, गोर्की अर दस्तोव्स्की जेडा विद्वान जिको काम साजियो सागण वो इज काम राजस्थान मे 1857 री क्रान्ति री वेळा राजस्थानी साहित्यकारा करियौ। राजा सू लेर रंक ताई रैं जीव मे अगरेजा सारु खार रा बीज वाय अर 1857 री

क्रान्ति सारू वातावरण त्यार करण री जस इण साहितकारा रै खवै है।

(3) क्रान्तिया सरीसा मोटा काम साधारणी लोगा रै भेळ टाळ भवै ई पार नी पडै। राजस्थान मे 1857 री क्रान्ति री वेळा भठै रा भोमजी-भोमजी भर नूरियै जमालियै रै मन री धाम लोया लपावै जाणै सगळा भगरेजा नै काटण भाढण सारू धुमधरिया खावता हा। लोक गीत भाम मिनखा रै मन रा भसल भारसी गिणीजै। मिनखा रै मन माथै भगरेजी राज री केडीक सूगली चितराम कोरीज्योडी ही इण बात री साख भो लोक गीत भरै—

मोडको मगरो रो पाणी ढाळो ढाळ ढळियो रे
भायू थारै पा'डा मे भगरेज बडियो रे
क काळी टोपी रो वा वा काळी टोपी रो
देस मे छावणिया नाखीरे काळी टोपी रो
देस मे भगरेज भायो काई काई लायो रे
फूट म्हाखी भाया मे वेगार लायो रे
क काळी टोपी रो वा वा काळी टोपी रो
घोडा रोवै घास नै टाबरिया रोवै दाण नै
बुरभां मे ठकराणिया रोवै जामण जाया नै
क रोळो वापरियो वा वा रोळो वापरियो

इण भेक लोक गीत सू ठा पडै क राजस्थान भापरी रीत पात री रुखाळ मे मगन मस्त ही। भगरेज भठ माडै भडथडियो भर हसत मुळकतै गाव ढाणिया नै घघकती छावणिया वणा काडिया। भो कातरो भठै र काचरै न कुतरण ढूको। भठै री सेठाई ने लूट र विलायता पुगावण लागो। भाया रा भेजका भिडावण लागो। भठ रा टाबरिया बिलख बिलख भर दाण दाण सारू कालिया जिला-लिया करण लागा। जिनावरा सारू घास निठग्यो, ठकराया बोतण ढूकी। च्यारू मेर कूकारोळो मचग्यो। रोळो वापरियो मानखै री पाणियो हूवण लागो। जामण भापरै जायोडै सारू बिलखण ढूकी[26]

जैपुर रै राजा न लोक गीता मे मोसा बोला री मार इण सारू खावणी पडी क उण साभर भगरेजा रै सुपरत कर दियी—

म्हारो राजा भोळो साभर तो दै दोनी भगरेज न
म्हारा टावर भूखा रोटी तो मागै तोखै लूण रो।[27]

जयपुर मे कप्तान ब्लक री हत्या री वजे ई भा क भगरेजा साभर लै लियी।[30] लागा भगरेजा रो भ्रेडो सिरगो पकड लियो क डूगजी-जवारजी सरासा धाडायतिया री इण सारू गीता मे सोवा करण लागा क उण भगरेजा री छावणी लूटी ही।[31] बीकानेर रा महाराजा रतनसिंघ रो जस गीता मे इण

साह गाईजियो क वे जवारसिंघ नै अगरेजा ने सौपण सू सफा नटग्या अर जोधपुर रा तखतसिंघ रा कावडा इण सारु हुया क उण डू गजी नै अ गरेजा रै सुपरत कर दिया।[32]

इण गत लोक गोता सू पत्तो पडै क मानखै रै मन मे अगरेजा सारु खार रा काट रा कोट चुणिज्योडा हा।

राजस्थानी मानखो ठेट सूं ई आपरै रीत-गात अर धरम सूं अणूतो मोह राखण वाळो, धरम नै की जोखो दीसै तो भचक स्सै की होमण सारु त्यार हुजावै। 1857 सू पैला अगरेज, फ्रांसीसी अर डच मिसनरिया मुलक मे आपरै धरम री जडा जमावण रा जतन सरु कर दिया हा। अगरेजी स्कूला, अनाथालय अर अस्पताल खोलोज्या। काळ री वेळा गरीब गुरबा न गावा लत्ता अर धान-चून साज अर पादरी आपरै धरम नै बधावण मे जुन ग्या। नीची जात रा कित्ताई लोग धडाधड इसाई धरम अगीकारियो। इण गत ईसाईयत रै प्रचार सू आम आदमी रिसीज ग्यो।[33] सतो प्रथा नै खतम करण सारु अगरेजा रा कळाप ई ऊंदो असर कर्रियो। पीढी दर पीढी चालता रीत रिवाजा रै ठबक पूगावण सू ई लोग अगरेजा रा वैरी बणग्या।[34]

इण गत 1857 सू पैला राजस्थान रो आम आदमो अगरेजा माथै खार खावतो। मानख री रुण आजादी रा आगीवाणा री जाव बधायो अर व अगरेजा रै राज न जडामूल सू काटण वाडण रै जतना मे जुन आजादी री अलख जगायो।

(4) राजस्थान रा घणकरा रजवाडा री थरपणा री वेळा सू ई सिरदार सामन्त घणा गाडवाळा अर सुततर हा अर राजावा नै उणा नै काबू मे राखण सारु घणा पापड वेलणा पडता।[35] मारवाड मे तो आ कावत चावी हा 'रिडमला थाप्या तिक राजा' राज री फौज बळ सिरदार ई हा। अगरेजा सू रजवाडा री संधिया हुया ठाकरा री ठरको ठडो पडग्यो। राजावा रै पाट रा पागा सिरदारा रै खवा सू आगा हुय अर अगरेजा रो आसरो लै लियो। नी तो बारला रा हमला री भै रियो अर नी सिरदारा न माथै चढावण रा जरूत। राजावा सारु सगळं दुखा री अ क रामबाण दवा अ गरेज, सरकार हुगी। आप राजवा अर ठाकरा रै झगडा री पचायती अ गरेज सरकार करती। सामन्त आपरै विख री जड अ गरेजा नै गिणता। वाता मे सराईजणियो गोता मे गाईजणियों अउवा ठाकर कुशालसिंघ अ गरेजा रा महा वरो। उणरी मानणो हो क अ गरेज जोधपुर दरबार रा उण रै खिलाफ कान भरै।[36] उदपुर मे सिरायत ताजोमी सरदार अजीतसिंघ कर्नल जेम्स टाड अर महाराणा दोनां सू बेराजी हो। जोधपुर महाराजा मानसिंघ सामता मे घणा बेला बीताया अर कैया नै प्याला पाया[37] सलूबर ठाकर केसरीसिंघ अ गरेजा न आफत री जड मानतो।[38]

सिरदारा रो जोर कम करण री मसा सूं अंगरेजी सरकार मेई जूनी बाता रं खातमै रा कळाप करिया। मेवाड मे सलूंवर रावत री राय सू नवो महाराणा गादी बंठतो।[39] मेवाड रा महाराणा जं किणनं ई खोळं लेवता तो खास सिरदारा सार्थं सलू बर रावत री मजूरी जरुरी ही अंगरेज सरकार सलू बर रावत रा अं अधिकार खतम कर दिया। ठाकर ठूमरा नं आपरी सरण आयोड नं आसरो देवण रो हक हो[40] अंगरेज सरकार सरणं रो हक ई खतम कर दियो। सामता रन्याय करण रो अधिकार ई ब्रिटिस सरकार ल वठो। बीकानेर मे मामूली न्यायालया नै सामता रा मुकदमा सुण अर कुडकी रा होकम रो हक मिळ ग्यो। ब्रिटिस हकूमत जागीर रा लोगा माथै ऊ ठाकरा रो सिप्पो खतम करण रा कळाप ई करिया। पैला जागीर रा रंवासी आपरं सामन रो रजामदो बिना कठंई दूजी जागा जा'र नी बस सकता हा। राजपुताना रा अं. जी जी लारस री मभा मुजब ठाकरा रो औ ठरको ई ठडो करीजग्यो। पला बिणज-बोपार करण वाळा माथै सामता रो दबदबो हो। राहदारी दानापाणो जेडा टेक्स सामत वसूल करता जका रो ई अंगरेजा खातमौ कर दियो।[41] पला सामता रं नाव सू आवण वाळं माल माथै चूंगी माफ ही पण अंगरेजा इण रीत र ई लापो लगा दियो।

इण गत अंगरेजा री करणी सू सामत साव अदना आदमी री पगत मे आय पूगा। सगळा अंगरेजा माथ किडकिडिया खावता हा अर बख लागता पाण हबोड उठावण री ताक मे हा।

(5) राजस्थान रा राजा अंगरेजा सू सधिया करी जद वा रं जीव म मराठा, पिंडारिया अर सामता रो डर बेठोडो हो। अंगरेज ई इण राजावा न पुचकार पुचकूर न सधिया करी ही। सेवट आगळो पकडता पकडता पुणछो पकड लियो। राजा अंगरेजा रा मातहत हुग्या घणकरा नै आ मातहता खटकण ढूका। जिकण राज री राग वार वडेरा रं लोई रं पाण भरीजी उण राज माथै हकूमत करण मे अंगरेजा रो केडो किरियावर। अंगरेज नित रं काम मे अडगा लगावण लागा जद राजावा नै घणो इज अखरियो। जोधपुर रा मानसिंघ सरीसा राजा तो भीभर नै भाभरा भूत हुग्या। मानसिंघ रो राज आखं भारत रं अंगरेजा रा वैरिया रो अखाडो इज बण ग्यो। सिंधी साहजादे अर नागपुर रा आप्पा सहाब भोसले जेडा अंगरेजो राज रा दुस्मिया नै मानसिंघ आसरो दियो।[42] गवनर जनरल लार्ड विलियम वैंटिक अजमेर मे लागण वाळे दरबार मे सगळा राजावा नै बुलाया। मानसिंघ इण दरबार मे भिळण सू सफा नटग्यो इण बात सू अंगरेजी सरकार री घणीऽमोभी बळी।

भरतपुर कोटा अलवर इत्याद मे राजगादी सारु आपसरा भगडा मे अंगरेजा रो अडगो घणा नं अखरियो। केई रजवाडा रा कदीमो इलाका माथै ब्रिटिस राज रं कब्ज सू वै नाराज हुग्या। केई सोजोवाना नं अंगरेज वारो मुलक लूटता ई निगै आया व्हेल। आपरी जनता अर सामता रो रुण देख ई कोई कोई

करारनामो मायं पिस्तायो व्हैला। समझणा अर हिम्मतवान लोगां मांजणां ई पाढ़ियां। सूरजमल मीसण वि. सं. 1914 में पीपल्या ठा. फूलसिंघ नें लिखो चिट्ठी में राजावां नें इण मुजब लतेड़ियां "ये राजा लोग देसपति जमो का ठाकर छे जे सारा ही हिमाळय का गळ्या ई नीसर्‌या, सो चाळीस से ले र साठ सत्तर बरस तांई पाछा मट्‌क्या छे तो भो गुलामो करे छे। पर यो म्हारो वचन राज याद राखोगा कि जे अबके अंगरेज रह्यो तो ईको गायो ही पूरो करसो। जमी को ठाकर कोई भी न रहसी। सब ईसाई हो जासी, तींसो दूरन्देसी विचारें तो फायदो कोई के भी नंही, परन्तु आपणो आछो दिन होय तो विचारें और राज जिसो सुहृत म्हारे होय ता बड़ाई तरीके लिखो जावे, तीसूं थोड़ी में बहुत जांण लेसो।"[43]

-अठै आ वात गिणावणी वाजब लागै क 1857 आळी क्रान्ति री मचामच राजस्थान मे मची जद राजा कैं तो चापळ ग्या अर कैं अंगरेजां रा खास पिट्ठू अर खरीका वळ्ळ गिणीजण रै कळापा में जुत ग्या। अकैं राजा अंगरेजां मायं फिड़किड़ियां खावता वे अंन टीकें रो वेळा लोलाड़ आगे क्यूं करियो ? इण बात री म्यांनी सोषण वैठां सौ दो बातां लखावें। पैलड़ा बात तो आ क इण राजावां माथै अंगरेजां री अणूतीज धौंस जमियोड़ी ही अर दूजी आ क वे क्रान्ति री व्यापकता रो तुमार नीं लगा सकिया। वानें इण बात री गिनार ई नीं व्हैला क सगळै देस में क्रान्ति री फोळो जगजगती है। अंगरेज वानें कीं गिनार हुवण देवता कोयनी, आप रजवाड़ा सं सू छोड बावड़ लेवण री खप्पत करी कोयनी अर क्रान्ति रा आगीवांण फौजियां सगळो जागा सावळ तोजी बैठाया बिना मत्ता-मत्ती जागा जागा भचाभच मचा दी। वजे दावें जको ई व्हो राजावां री चापळ सगळै देस नें भारी पड़गी। जे सगळा सलामी री तापा रैं घड़िदां री गिणती वधावण री ताक तोड़, तगमां रो आस रैं तुणी लगा अर आपरै सगळै फोजबळ समेत आजादी री इण आंधी में रम जावता तो अगरेजां रा फूंतरा बिखर अेड़ा वे ला पीतता क वांरी दुरगत रा बावड़ विलायत पूगणा ई भारी पड़ जावता।

(6) अेड़ी बात नीं है क राजस्थान मे हूवण वाळी क्रान्ति रौ 1857 में देस रैं बीजे ठिकाणां हूवण वाळी क्रान्ति सूं की लल्लो वल्लो इज नीं हो। ब्रिटिस सरकार री पलटणा रा देसो सिपायां साथै जो दुभांत बरतीजतो वा राजस्थान री छावणिया रैं सिपायां रैं काळजां में ई धुक्कण उठायोड़ी ही। साधू अर फकीरां रैं वेस में दिल्ली रा सं सू राजस्थान आया अर गाय सूअर री चरबी वाळा कारतूसा री फुसफुस अठै रा सिपायां विचै छोड दी।[44] राजस्थान री छावणियां में अेक आ वात ई घणो रंग लाई क फौज नें जिको आटो सप्लाई व्है उण में मिनख रा हाडका पीस अर मिळायोड़ा व्है।[45] मेवाड़ रै अर्जुनसिंघ नें तो सिपायां रैं सामोसाम इण आटै री रोटिया बणवाय अर अरोगणी पड़ी।[46] चरबी रैं कारतूसां अर आटै में हाडकां री बातां देसो सिपायां रैं मन में घाव पटक दिया अर उणा इण वातां नें अंगरेजां री, वांरो धरम मिस्ट कर इसाई बणावण री कुबद

गिणी। 1857 रै अमर सहीद रिसलदार मेहराबखा,[37] हीरासिंघ[48] अर वन्दूखो गुल मोहम्मद[39] सरीसा आजादी रा आगीवाणा रै जीव मे देस नै फिरंगिया सू आजाद करावण री हूस हब्बोळा खावती ही।

इण गत राजस्थान मे 1857 री क्रान्ति री जडा जजेडण बैठा तो लखावै क आम जनता, साहितकार, सिरदार, राजा अर देसी सिपाई सगळा रा जीव खुमखरिया खावता हा। सगळा रै भूरकी चीछडी नै पिवडण री घारियोडी ही। राजस्थान मे क्रान्ति अचाणचक अणफै मे इज नी हुगी। अंगरेजा सू खार वैर रै बारुद रो भाखर तो घणो पैला चुणीजण लागगो। वीजी जागा क्रान्ति रै बावडा उण भाखर रै चू चको चेपण रो काम इज साजियो। पछैस तो नसीराबाद, कोटा, उदैपुर, अलवर देवली, अजमेर, जोधपुर (अउवा), भरतपुर, टौंक इत्याद मे मेडा भचोड उठिया क केई अंगरेजा रा पोखाळा हुया अर ब्रिटिस राज री जडा दुरादुर जागा छोड दी अर सगळो राज खळ बिखळ हुगो।

आबू मे मौज मस्ती सू फुदडका करता अ जी सारैस कनै मेरठ आळो घमचक रा 19 मई 1857 रा बावड पूगा अेकर तो सिट्टी पिट्टी गुम हुगी। इण बात री भणक पैला ई पडगी व्हैला क राजस्थान मे लोगडा अंगरेजा सू काठा धाया हुयोडा वस लागण री बाट इज जोवै है। आगै आवण वाळी अबखाया रा भत्तामत्त गू थीयोडा आळ जजाळा सू डाफी चढ गताधम मे पजग्या। सेवट ज्यू त्यू जीव काठो कर सज आवनो डाड पटळाई मायं उथरिया। राजपुताना रा राजावा नै चिठ्ठया मेली क वै आपरा रजवाडा मे वखेडो रोकण सारु पाळ बाधं धारला वाणिया नै आपरी सीव मे भवं ई नी वडण दै[50] अर अंगरेजा री आडी वेळा मे आडा आवैं।

डर पर हुयोडा अे जी जी साव रै मन मे हडबडाट मची अर अजमेर सारु गोडा ऊठिया। सगळो सरकारी खजानों अर सस्तर अजमेर मे इज हा।[51] राजस्थान मे अंगरेजी राज री जीव उठै इज अटकियोडो इण सारु उठै उथगड मच ग्यो तो भवं ई की कारी नी लागैला। साई साव री फौं इण बात [illegible] छूटती ही क अजमेर रै जाब्तै मारु पन्दरवी नेटिव इन्फेंटरी री दो टुकडिया तैनात ही व हमार हमार पल्टी ऊ'र मेरठ सू आईज ही। सो अेक तो राजस्थान मे आजादी रै आड ग रा चितराम आळजै न पैलाई घुकघुको छोडावै हा अर पछै मेरठ री क्रान्ति रा बावड मिळग्या जद होड ऊठ जीव जागा छोडण लागो। अजमेर रै जाब्तै रै वळाण मारु डारी चढियोडा साव पैली कारवाई आ करी क 15 वी नेटिव इन्फेंटरी री दो टुकडिया नै अजमेर सू हटा'र नसीरावाद मेलदी जठै इण इन्फेंटरी रा वाको सैनिक तैनात हा।[52] इण मू ईहोड घेठो नी जद छावणी मे तोपा दूजी त्यार करवा अर दूजी पलटणा रा वफादार फौजिया सू मोरचा रोपाय दिया। डापाचूक हुयोडा गडवड लागोडा साव री अजमेर रै जाब्तै आळी कारवाई मेडी भारी पडी क राजावा सू थोडीक चूक हुगी नी जरा सगळो ब्रिटिस

राज ई गपिंदा खावतो जातो कठैई समदा पार। इण सूं 15 वी नेटिव इन्फेंटरी रा सैनिका नै रोस चड झाळ झाळ छूटगो। बख्तावर सिंघ नाव रै अेक सिपाई अंगरेज अफसर प्रिचार्ड कनै जा'र पूछियो क "काई आ वात साची है क अठै यूरोपियना री फौज बुलाइजी है।" 28 मई 1857 रा मुसी मीर बाकर अली प्रिचार्ड नै बतायो क सगळा फौजी इण बात सू भोभरियोडा है क वानै जको आटो मिळै उणमें हाडका पीस अर मिळायोडा व्है। प्रिचार्ड को ठावको पडूत्तर नी दै सकियो अर सगळी रपोट ब्रिगेडियर कनै मेल'र जोईजती कारवाई रो थावस धधावण रा कळाप करिया। बेफार रा दो बजिया प्रिचार्ड बेफारै सूं निवड'र हाथ घोवतो इज हो क तोप छूटण रै मीडदै सू उण रै काना रा पडदा फाटण ढूका। घर बारै झाकिया साचो कूकारोळो मच्योडो लखायो। 15 वी नेटिव इन्फेंटरी रा सिपाया तोपखानो काबू कर लियो। छावणी मे भगदड मचगी। पैला घुडसेना अर पछै दूजी पलटण न तोपखान कानी वढण रा होकम दिरिज्या पण किणी गिनार ई नी करियो। तोपखानै सू लगू भचोड ऊठता हा। स्पोटिसवुड नाव रो अेक मेजर तोपखानै सामी पग उठाया पण च्यारेक पावडा भरिया इज हा क अेक भोटको हुयो अर मेजर तडाच खा र ठोकीज्यो गोळी उणरो भेजको बिखेर दियो। कर्नल न्यूबरी रा ई तिक्का कर काडिया। छावणी रै कर्नल समेत केई अंगरेज अफसर घायल हुग्या। जीव जागा छोडियोडा अंगरेज अफसर नीठा टावर टोळी समेत छावणी सू निकळिया। इण बात रो अंदेसो हो क बागी अजमेर लूटण जावैला। इण सारु मग्गु अंगरेज ब्यावर थकी वईर हुया। छावणी रा फौजी मत्ता मत्तो आपरी खार काढण ढूका, चर्च अर अंगरेज अफ्सरा रै बगला रै लापो लगा दियो, तिजोरिया तोड हथ्थै चढियो जको माल आपस मे बाटियो अर मेम-डिया रै गैणा गाठा, गाबा लत्ता अर बीजी चीज वस्त रो मैदान मे ढिगलो लगा दियो। छावणी रा परखच्चा उडाया पछै अे सैनिक दिल्ली थकी वईर हुग्या।[63] अठ आ बात खरावणी वाजब लागै क औ कोरो फौजिया रो उबगड क फालतू रो मचाणचक हुयोडो कजियो नी हो पण सावळ धारिया विचारिया पछै अंगरेजी राज नै जडामूळ सू उखाड फैंकण री क्रान्ति ही। पेलडो बात तो आइज क सगळै जात घडा रा सैनिक इण क्रान्ति मे भेळा हा अर पछै अंगरेजा नै मारकूट जे लूट रो माल काबू कर सगळा आप आप रै घरा कानी ठेका दै तेतीसा मना लेवता जद तो बात बीजी हूवती। पण सगळा दिल्ली थकी मूडो करियो अर मारग मे मरता मारता सेवट दिल्ली पूगा परा।[64] उठै पूगा दिल्ली री घेरो घालियोडी अेक अंगरेज पलटण माथै टूट पडिया अर उण री हिरड काढ दी।[65] इण बात रो सोधो म्यानो ओ है क अे क्रान्तिकारी भारत भोम सू अंगरेजा री काळो मूडो लीला पग करण माथै तुलियोडा हा अर दिल्ली रा बादसा बहादुरसाह जफर नै मदद करण रै मोजूमत्तै दिल्ली पूगा हा। अेक बात खटकणजोगी आ क अंगरेज तो हाय अजमेर हाय अजमेर बंलता अर नसीराबाद रा फौजी अजमेर कानी फुरकिया ई कोयनी। जावता जावता जै अजमेर रा बाघा बोलावता जावता तो अंगरेजा री कमर साची भागतो। उदपुर मैं पालिटिकल

मजट साबर्स मा बात लिसी है क दिल्ली रा बागियाँ इणां नै दिल्ली पूगण रो मेतो दियो हो ।[58] इण सारु भल्ला भाया रै फाठाफठ दिल्ली पूगण री धुन चढियोडी ही । आ री इण धुन रो पत्तो इणां वात सू पड़ै क सातावळ में मेया मापरै रूटियोडो माल मारग रै गावां मे फेंक मणूतं भार सूं पिंड छोडायो ।

नसीराबाद पछै क्रान्ति री झाळा नीमच मे जगी मर साची लाय लगी । नीमच री छावणी नसीराबाद सू तीन बीसो कोस (120 मील) रै मांतरै माथै ही । उठै मेरठ रा बावडां सू डरपीज्योडै कर्नल मेवाट नै नसीराबाद रा समाचार लागां धूजणी छूटगी । साथिया मागैं मौत चकारा काटण लागी मर मगरेजा मे पडण वाळै बिखे रा भात भातीला घण लख ग्या । देसी सिपाया नै भेळा कर नै लल्लू चप्पू करण लागो । बाईयल माथ हाथ धर सौगन खाई क देसी फौजियां माथै पूरी भरोसो राखला ।[57] पछै कुरान मर गगाजळ माथै हाथ धरा मर देसी फौजिया नै सौगन खवाणी क वै सामखोर रैवला । 2 जून रा नीमच मे घुडसवार मोहम्मद मली बेग भल देणी कनल मेवाट रै सामी छाती माय दड़ूकियो ' मगरेजा मापरी सौगना कद पाळी । काई माप मवध मे मापाधापी मचा'र माडाणी नी बडिया । मद्ध कोरा हिन्दुस्तानीज सौगन निभावण सारु तुलियोडा क्यू रेवे ।'[58] उण वेळा तो मेवाट मोहम्मद मली नै ज्यू त्यू ठडी मीठी कर दियो पण मागलै दिन तडकै नीमच मे नसीराबाद रा सगळा हाल खुलासै पूग ग्या। दिन रा इग्यारै बजता बजता तो छावणी मे भचाभच मचगी । तोपखानाँ काबू कर छावणी नै तुळी वता दी । भीभरियाडा फोजोडा मेक मगरेज 'सर्जेंट' रै टायरा नै टागा पकड पकड वास्तै री भाळा मे भाक दिया । नीमच रा चाळीसेक मगरज भरता खपता छावणी सू साळोबारै हू मर मेवाड सामो मू डो करियो । छावणी रै कैदिया नै छोडा, खजानो लूट, छावणी रै लापो लगा मर फौजी माठोडै मगरजा लारै वार चढिया । डू गला गाव पूगां कप्तान साबर्स मर बेदला राव बख्तावर सिंघ री मगवाई मे मायोडी मेवाडी फौजा री मासरो मिळिया इण मगरजा रो जिन छूटो ।

नीमच रा फौजी सूबेदार गुरेसराम नै कमाडर, सुवेदार सूदेरीसिंघ नै ब्रिगेडियर मर जमादार दोस्त मोहम्मद नै मेजर मुकर कर वेड बाजा सू वहीर हुया । चित्तोडगढ, हमीरगढ मर बनेडा र सरकारी बगला नै लूट उण नै बाळ मर साहपुरा, निम्बाहेडा हूवता देवलो पूगा। देवली मे ई छावणी हो मगरेज तो पैला ई माग छूटा बोजा देसी सैनिक इणा साथै मिळग्या । मठै सू टौंक पूगा जद जनता इणां नै उछन खम्मा कर वारणा लोया मठै कोन रा कितांई फौजी इणा सू आ मिळिया । टौंक रो नवाब जूतिया भटकावतो ई रैय ग्यो मर उण री फौज नीमच र क्रान्तिकारियां रै खवा ऊ खवा मिळालिया । उठै सू सगळा दिल्ली पूगा मर मगरजा र खिलाफ जूझण वाळा रै भेळा माप माप री गरबजोग रम्मत माड दी ।[60]

1836 ई० में अंगरेजां जोधपुर लीजियन नांव री अेक फौज त्यार करी। मारवाड़ में 1857 री कीरत-कथा इण लीजियन सूं जुडियोड़ी है। अेरनपुरा मुकाम री जोधपुर लीजियन री अेक टुकड़ी रोवा रै ठाकर रै बखेड़ै नै सलटावण सारु 18 अगस्त रा आबू री जड़ा मे बस्योड़ै गांव अनादरा पूगी। 21 अगस्त री रात अनादरा सूं पचासेक फौजी माउंट आबू चढिया। सवार रा तीन बजिया कोहरै रै गुप्पम गुप्प में यूरोपियन सोल्जरां री बैरेकां अर जोधपुर लीजियन रा कप्तान हाल रै बंगलै माथै गोळियां रा बटीड़ ऊठण लागा। हाल साब रै घरै अे. जी जी. रौ बेटो अे लारेंस घायल हुयो।[63]

आबू मे थोड़ो घणो खटपड़ इज हुई पण इण रा बावड़ जोधपुर लीजियनं रै सदर मुकाम अेरनपुरा पूगा गजब हुग्यो। 22 अगस्त रा अेरनपुरा मे ई क्रान्ति रा ढोल धुराईज्या अर उणीज दिन आबू मे धमचक माढण वाळा फौजी ई अेरन-पुरा आय पूगा। भीभरियोड़ा सैनिकां छावणी अर टेसण लूट लियो। मेहरबान सिंघ नै आपरौ जनरल मुकर कर अजमेर कानी वहीर हुया। थोड़ी भौं माथ इज आनै खबर लागी क जोधपुर महाराजा तखतसिंघ री किलेदार अनाड़सिंघ री अगवाई मे आयोड़ी फौज पाली मे पड़ी है, जद अे फौजी खेरवा आळी गेली पकड़ियो अर आउवा रै पागती अेक गांव मे पूग डेरा करिया।[64]

आउवा ठाकर खुसालसिंघ चांपावत रै महाराजा तखतसिंघ सूं खटपट। ठाकर अंगरेजां नै कळा रा मूळ गिण किडकिडिया खावतो। आ बात आज ताई चोपाळां आळी बतळ मे चावो क खुसालसिंघ दस माथा अर चौपन हाथां वाळी आपरी कुळदेवी सुगाली माता री मूरत कनै पूजा सारु बैठो जद उणनै अेरनपुरा आळ बागियां रै आवण रा समाचार लागा। अख देणी सामा पगां जा'र ठाकर फौजियां नै घणै मान गढ मे बधा लायो। हाजरियां समझियो क देवीमा री हौकम हुयां ठाकर क्रान्तिकारियां नै अछून खमा करै। आ बात चायाळ चावो हुगी। आसोप ठा. सिवनाथसिंघ गूलर ठा बिसनसिंघ अर आलणियावास ठा. अजीतसिंघ ई आप आप री फौजां समेत आउवा आ ग्या।[65] आरै टाळ लाम्बिया, बाटा, भीवालिया, राड़ावास अर बाजावास रा ठाकर ई खुसाल सिंघ रा वळु हा। खेजड़ला अर मेवाड़ रा सलूंबर, रूपनगर, लासाणी अर आसींद रा ठिकाणा री फौजां ई आउवा आय पूगी।[64] हजार खड सिपाई अर छः सौ घुड़सवार तो अेरनपुरा सूं आया इज हा सगळा मिळिया छः हजार रै लगैटगै पढोजत फौज हुगी।

किलेदार अनाड़सिंघ री अगवाई मे आयोड़ी तखतसिंघ री फौज साथै अे जी. आे. री गुरगो लेफ्टीनेंट हीथकोट ई हो थोड़ी घणी टचरां पछै बिथोरा गांव कनै, घमसाण मच्यो। आउवा ठाकर अर अेरनपुरा रा फौजी जीव हथाळी लै नै अेड़ा खार भिड़िया क जोधपुर री फौज रा पग पाछा पड़ण लागा। कुसलराज सिंघवी अर मेहता विजैसिंघ जुद्ध खेतर सूं भाग छूटा। हीथकोट नीठा पड़तो गुडतो नाठ अर

जीव बचायो। अनाड़सिंघ लड़तां भिड़तां सेवट आडो पड़ियो, उणरै साथै दरबार री फौज रा छीयतर मिनख मरिया। बाकी फौज फौ छोड भाग छूटी। दरबारी फौज रै डेरां रो सगळो असबाब खुसालसिंघ अर उण रै भायला लूट लियो।[65]

अनाड़सिंघ रै फौत वेलण अर आपरी फौज री दुरगत रा बावड़ लागा तखतसिंघ जोधपुर किले मे सवार सिंझ्या दो टक बाजण वाळो नौपत नै अेक टक बंद करा'र मातम मनायो।[66] अे जी. जी. लारेंस तो रीम सूं बावळो इज हुयो अर भठाभळ ब्यावर सूं फौज भेळी कर अउवा धकी वईर हुयो। जोधपुर सूं पालिटिकल अजंट कॅप्टिन मांक मेंसन ई अे जी जी री हाजरी साजण सारू पूगो। 18 सितम्बर 1857 रा फेरू भारी भिड़त हुई। अे जी जी. री फौज अबर कुटीजी। अंगरेजी सरकार रै भारी काळस आ येयडीजी क माक मेंसन बागिया रै हथै चढगो। लाई मेंसन नै मार'र मल्ला आया उण री ल्हास अउवा गढ री फाटक रै सामी रुंख रै डाळै सूं लिटकाय दी। मावळ भळ भळ भागा अे जी जी. नै पाछो अजमेर जावणो पड़ियो। बापडो माक मेंसन साव अणखादी में इज जीव गमायो। जनता रै डर सूं महाराजा उण रै मारण रै मातम म नौपत बाजणोई नी रोका सकिया।

अउवा रै आजादी रै आगीवाणा री तोजी ठेट दिल्ली सूं बेठोडी ही अर मारवाड़ री जनता री आसीस वार साथ ही।[67] लारला दो बरसा सूं खुसालसिंघ रो जोड़ीदार सिमरथसिंघ मारवाड़-मेवाड़ रा सगळा जागीरदारा बिच अको करावण रै कळापा मे जुतियोडो हो। अेक जुट हु'र मारवाड़-मेवाड़ सूं अगरेजा री पापी काटण री धारियोडो ही।[68]

10 अकटूबर 1857 रा जोधपुर लिज्यिन रा फौजो अर खुसालसिंघ रा वळ ठाकर दिल्ली सामो कूच कियो। दिल्ली कानी कूच री बज आ क सगळा बहादुरसाह जफर रै फरमान अर उण री फौजी मदद सूं अजमेर माथै हमलो बोल अर मारवाड़-मेवाड़ नै अगरेजा सूं आजाद करावण री हूं स पाळ राखी ही।[69] दिल्ली धकी कूच करण वाळी इण फौज मे चार हजार रै लगै टगै मरण मारण सारू कमर कसियोडा क्रान्तिकारी सैनिक हा। ठेट रेवाडी माथै कब्जे पछ दिल्ली माथै अगरेजा री फत रै समाचार सूं जीव कुद पड़ियोडा इण सूरवारा री 16 नवम्बर रा नारनोळ मे ब्रिगेडियर गेराड सूं भिड़त हुई। जोधपुर लिज्यिन री हार सूं अगरेजा री पापी काटण री मसावा मम्मोसोजगी।

सगळी जागा सावळ जाब्तो करिया पछै जनवरी 1857 मे बवई सूं नवो कुमक दूजा आय अवायगी जद भूरिया पिल्ला पाछो अउवा कानी मू डो कर ग री गाड भेळो करियो। कर्नल हाम्स री कमान मे बवई री पलटण अर 12 वी नेटिव इन्फेंटरी अउवा री घेरावदी करो। जोधपुर महाराजा रा की फौज ई इण रै साथै ही। 20 जनवरी नै युद्ध मंडियो। चार दिन ताई दोनू पख्खा तोपा रा हबीड उठामा। उण समै अउवा री रुखाळ सारू सात सो सैनिक इज हा। 23

जनवरी री रात रा श्राथँ मे मारो श्राडग मडियोडो श्रर मेह री झडो वधियोडो ही जद भाया श्रर कामदार री सल्ला मुजब घेरँ री घाय घी विचँ ऊ निकळ'र श्रजँ मेवाड सू फौजी मदद री श्रास लिया श्रो श्राजादी खातर ग्रां की हामरा री मसा राखरा वाळो सिरायत सूरमा खुसालसिंघ मेवाड जा भिळियो ।[70] सारला गढ री रुखाळ सारु घरगोऽ खप्पत करी परग श्रगरेजा री कीडीदळ फौज श्रोर जगी तोपा भारी पडगी । 24 जनवरी रा गढ भिळियो । पछँ तो श्रगरेजा उठँ बिताई जुलम करिया ।[71]

घकँ मानता श्रगरेजी सरकार खुसालसिंघ माथँ मुकदमो चलावरग री मिस मिळायी परग सजा बोलरग री छाती की पडीनी जद थोडी मिसमिसियँ री इल्लम टिल्लम पछँ सेवट वरी करियो । 25 जुलाई 1864 रा श्राजादी रो श्रागीवारग उदँपुर मे सरग सिधायो । जुगा जुगां सारु राजस्थानी मानखँ रँ मन माथँ इरग मोदीलँ जू झार री कररगी री छाप कोरीजगी । गीता श्रर बाता मे उरग रँ जस रा ढोल श्रयवा श्रल ताई घुरबो इज करँला ।

कोटा मे क्रान्ति री ठरकी इरग सारु भारी गिरगीजे क छ मईना ताई पूरँ कोटा माय क्रान्निकारिया री कब्जो कायम हुगो । सगळी जनता क्रान्ति री भीड्ू वरगगी । मारकाट ई घरगी मची । सितम्बर मईनँ मे दिल्ली री बादसा जफर कँद हुग्यो, लालकिलँ माथँ श्रगरेजी धजा फरुकायगी तोई कोटा रा क्रान्तिकारी श्रापरँ गाड र पारग फिरगिया नँ फकेड दिया । 1838 ई० मे कोटा महाराव रँ खरचँ सू थरपीज्योडी कोटा कटिंजट नाव री श्रगरेजी फौज रा देसी सिपाई मेरठ, नसीराबाद, नीमच इत्याद मे क्रान्ति रँ समाचारा सू धुमखररिया खावरग लागा । श्रेड मे 'पायगा पलटरग' र रिसालदार मेहराबखा रँ सई करियोडी (दस्खता सुदी) श्रेक श्रपील फौजिया कनँ पूगी जिरगमँ चरबी रँ कारतूसा श्रर श्राटँ मे पीस नँ मिळायोडा हाडका रा हवाला पछ मुलक सू श्रगरेजी राज री बू ठ बाळरग री श्ररज करियोडी ही । 15 श्रक्तूबर रा श्राक कोटा फौज बगावत करदी । दो तोपा श्रर दो घोमला (ऊट माथँ धरियोडी छोटी तोपा) समेत महराबखा री श्रागीवारगी मे कोई तीनेक हजार नेडा सिपाई श्रेजसी हाऊस न घेर लियो । बगलँ रँ श्राग लगा श्रर मल्ला भाई निसडी लगा र ऊपरल कमर म पूगा जठ कोटा री पालिटिकल श्रजट मेजर बर्टन श्रर उरग रा दो मोटियार बेटा लुकियाडा हा । श्रोमरियोडा फौजीडा भचाभच तीना रा तिक्का कर काढिया ।[72] दो श्रगरेज डाक्टर ई श्रजेंसी हाऊस माथँ हमल री बेळा मरिया ।मेजर बटन रो माथो वाड श्रर सगळँ स्हैर मे फेरीज्यो । छ मईना ताई जयदयाल श्रर मेहराबखा री श्रागवारगी मे फौजिया धमा चौकडा मचाई । श्रगरेजा रा चमचा न तोपा रँ मू डँ बाध श्रर धमोडा बोलाईज्या ।[73]

सगळी कारवाई पछँ क्रान्तिकारी जुच्च हुग्या । दिल्ली सू की श्रास री कोयनी । ग्वालियर मे सभलगढ रँ राजा गोविंदराव विठ्ठलनँ मदद सारु श्ररदास करी वा चिट्ठी श्रगरेजा नँ सुपरद करीजगी ।[74] महाराव री सिट्टी पिट्टी गुम

हुयोडी ही। पछै ग्रेडी ग्राडो वेळा में कुण टेवको राखै। मार्च 1858 मे ववई सूं ग्रायोडो जगी फौज लेर कर्नल राबर्ट कोटा पूगो। महाराव री सामधरमी फौज, करौली राजा री फौज अर गोटेपुर धणी री फौजा ई इण अगरेजी फौज साथै भिळगी जागा जागा घमसाण मचिया। मिनखा रा कच्चर घाण हुया। केई दिन सामा पग रोपिया पछै सेवट वागिया री सफायो हुग्यो। वारै ग्रागोवाणा मे अगरेजा नी नी जेडी कुवोता करी। मेहरावखा अर जयदयाल माथै मुकदमा री इल्लम टिल्लम पछै भारत रा गवर्नर जनरल री मसा मुजब वानै उण सागै एजेंसी हाऊस मे सूळी चढाया जठ उणा वर्टन नै मारियो हो अेकर क्रान्ति माथै काबू पाया पछै तो अगरेज जुलमा री सगळी सीवा पार करली।[7,8]

नबाब रै मामै ग्रालमखा री ग्रगवाई मे टौंक री फौज ई विडगी। नबाब री सामधरमी फौज सू लडती ग्रालमखा तो खेत रियो पण टौक रा छ सौ क्रान्तिकारी सैनिक लडता भिडता 'ज़फर' री मदद मे ठेट दिल्ली जाय पूगा। भरतपुर, धौलपुर, ग्रलवर, मेवाड अर जयपुर सगळी जागा की न की वखेडो जरूर हुयो। उण समै राजस्थान रो अगरेजा सू वैर ग्राभी ग्रागी भौं ताई अेडो चावो हुयो क तात्या टोपे सरीसो क्रान्तिकारी ग्रलीपुर मे चार्ल्स नेपियर सू हारियां पछै राजस्थान नै ग्रापरै वेखटक बमणजोग जागा गिण ग्रठी ग्रा पूगो।

इण गत 1857 री क्रान्ति री वेळा राजस्थान रै कण कण माथै लाय लागगी अर चोफेर घपळका ऊठण लागा। मर खप नै अगरेजा इण लाय नै बुझाई तो परी पण इण सू वा धुणी चेतन हुगी जिण री भभूत लगा लगा'र ग्रर्जुनलाल सेठी, गोपालसिंघ खरवा, विजयसिंघ पथिक ग्रर जोरावरसिंघ बारहठ सरीसा क्रान्तिकारिया पेरु ग्रलख जगायो ग्रर सेवट अगरेजा न इण मुलक नै ग्राजाद कर नै ग्रठै ऊ काळो मू डो लीला पग करणा पडिया।

टीप –

1 (ग्र) शर्मा ग्रर व्यास, राजस्थान का इतिहास, 342
(ब) जदुनाथ सरकार, मुगल साम्राज्य का पतन, 1, 127

2 (ग्र) सूरजमल मीसण, वश भास्कर, 3096-3100
(ब) जोधपुर मे बखतसिंघ रामसिंघ री बखेडो

3 मेलीसन, द इडियन म्यूटिनी ग्राफ 1857, 264

4 टी ग्रार होम्स, ग्रे हिस्ट्री ग्राफ दी इडियन म्यूटिनी, 149

5 फोरेन, पालीटीकल कसल्टेसन, 16 ग्रप्रेल 1832, न० 22

6 ग्रादर्श सरमा 1857 ग्रौर राजस्थान, कथा क्रान्ति की।

7 शर्मा, व्यास, राजस्थान का इतिहास, 397-8

8 टर्की रै वखेडै सू 1855-56 म यूरोप मे भारी घमसाण मच्यो। अेकण कानी इगलैड, फ्रास, टर्की ग्रर इटली हा ग्रर बीजै कानी ग्रेकलो रूस। इण जुद्ध मे रूस हारो हुटोग्यो।

9 डा. व्यास, राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम, 71

10 (अ) एजेन्सी रिकार्ड, लेटर बुक नं० 13 पेज, 43

(ब) सावर्स, अ मिसिंग चेप्टर आफ द इंडियन म्यूटिनी, 8-9.

11 (अ) फारेन, पालिटिकल कंसल्टेसंस, 26 जून 1857 न० 113-116

(ब) व्हेई, 31 दिसम्बर 1858 नं० 3146-7

12 (अ) अमल कुमार सेन, ज्योग्राफिकल रीजन्स आफ राजस्थान, ट्राजेक्सन आफ द इण्डिया कासिल आफ ज्योग्राफर्स स्पेसल आई. जी. यू. वोल्यूम, 99-104

(ब) धरमपाल इण्डिया लैंड अेंड द पीपल, राजस्थान 1-7

(स) वी सी मिश्र, ज्योग्राफिकल रीजन्स आफ राजस्थान, दी इण्डियन जनरल आफ ज्योग्राफी, 1, 1, 1966 पे. 35-48

13 वी. सी. मिश्र, राजस्थान का भूगोल 23

14 (अ) राजस्थानी संस्कृति रा चित्तराम, 92

(ब) धरमपाल, इण्डिया लैंड अेंक पीपल, राजस्थान, 1,

15 (अ) चित्तराम, 96

(ब) फरिश्ता, 228

16 परम्परा, गोरा हट जा, पेज 37-38

17 जिण वन भूल न जावता, गैंद, गवय, गिडराज।
तिण वन जंबुक ताखड़ा, उघम मांडे आज॥

18 परम्परा, गोरा हट जा, 141-42

19 राणियां तळेटिया उतरें, राजा मुगतें देस।
गढ ऊपर गोरा फिरें सरग गया सगतेस॥

20 हुवें फैल धरण हेकंप हुवें
चढ तुरा रखे कुण लाग चाळो।
गढपति आज दूसरा नमिया घणा
अेक रहो अनम गुमान वाळो॥

21 अे जोधपुर रै लोळावास गाव रा वासी अर सूरजमलजी मीसण रा खास भायला हा।

22 ठाकर कर फिरग फेरें गिर धोळा
अें खग ठाकर केम झलें।
ऊभां पाखर 'बलू' अमनमो
भाखर ढाणो केम मळें॥

23 अे कविराजा बाकीदास रें चार भाया मे सगळा ऊ छोटा भाई हा।

24 महाराजा मानसिंघ रें समैं रा चावा कवि।

25 पाँचेटिया रा वासी अर मानसिंघजी रै समैं रा चावा कवि।

26 फिरें फिरंगी के हका काज सुधारें हकारें फौजा,
घू कळी उबारें रका मारें बका धीग।
सवादी मेंमीत होय नगारा घुरावें सारें
माझो थारें भरोसें नचीता मानसींग॥

27 माया लाट रा खलीता बाचता घके लाय ऊभौ,
घरै हाथ मूछां[1] छाय ऊभौ क्रोध धीग ।
मापरै भरोसै राग जागडो दिराय ऊभौ,
साय ऊभौ जनेवा खांगडो मानसिंग ।।

22 जहूरखां मेहर, धर मजलां धर कोसां, 105-6
29 प्रकास व्यास, राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम, 67
30 जगदीसंसिंह गहलोत, राजस्थान का इतिहास, 3, 149-50
31 (म्र) निर्मला गुप्ता, राजस्थान अराजकता से व्यवस्था की ओर, 117
(ब) अजमेर रा सुपरइंट सी जी. डिक्सन री अे जी. जी. सदरलैंड नै चिट्ठी तारीख 1 मई 1848 अेन्कलोजर न० 2, करेस्पोंडेंस 26 अगस्त 1848, न० 101 अेफ अेंड पी
(स) परम्परा, डूगजी-जवाहरजी री पड, लोक काव्य परम्परा, 125-135
32 (अ) खड़गावत, राजस्थान्स रोल इन दी स्ट्रगल आफ 1857 वे 123
(ब) राजस्थान हिस्ट्री कान्ग्रेस प्रोसीडिंग्स, VII 118
33 (अ) निर्मला गुप्ता, राजस्थान अराजकता से व्यवस्था की ओर, 179
(ब) प्रकास व्यास राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम, 61
(स) वि० स० 1814 म सूरजमल मीसण पीपल्या ठा पूर्णसिंघ नै आ चिट्ठी लिखी—
"ये राजा लोग देसपति जमी का ठाकर छ जे सारा ही हिमाळय का गळ्या ई नीसर्‌या, सो चाळीस से ले'र साठ सत्तर बरस ताई पाछा पड्या छै तोई गुलामी करै छै। पर यो म्हारो वचन राज याद राखोगा कि जे अबकै अंग्रेज रह्यो तो इको गायो ही पूरो करसी। जमी को ठाकर कोई भी न रहसी। सब ईसाई हो जासी

परम्परा, गोरा हट जा, 141

34 मुंसी ज्वाला सहाय, लायल राजपूताना, 278-80
35 (म) टाड, अेनल्स अेंड अेंटीक्वीटीज आफ राजस्थान, 1,560
(ब) स्यामलदास, वीर विनोद, 806
(स) तवारीख-जोधपुर, बडल 40, ग्रथ 7, (पुरालेखागार, बीकानेर)
(द) तबकात-अे नासीरी, 465
(ध) सरमा जी० अेन०, सोसियल लाइफ इन मेडिवल राज, 512
(ई) जहूरखा मेहर, राजस्थानी सस्कृति रा चितराम, 97
36 (म) निर्मला गुप्ता, राजस्थात अराजकता से व्यवस्था की ओर, 176
(ब) स्यामल दास वीर विनाद, 2, 1815
37 टाड अेनल्स अेंड अेंटीक्वीटीज आफ राजस्थान, 2, 121
38 स्यामलदास, वीर विनाद, 2 प्रकरण 18
39 (म) डा प्रकास व्यास, राजस्थान का स्वतत्रता सग्राम, 54-55
(ब) मेड़ता सग्रामसिंघ कलेक्सन हवाला न 28

40 (म) डा. व्यास, राज. का स्वतन्त्रता सग्राम, 54
(ब) फो पो कस्लटेसस, 31 अक्टूबर 1833 न. 37-44
(स) मेहता संग्रामसिंघ कनेक्सन, हवाला न. 787
(द) अंग्रेजी रेकार्ड हिस्टोरीकल रेकार्ड 215, जोधपुर फाइल न. 5 खड 1, सन् 1834 पेज 19.

41 डा व्यास, रा. का स्व. सं., 56

42 (म) 1857 और राजस्थान, कथा क्रान्ति की, 3
(ब) परम्परा, गोरा हट जा, 145

43 परम्परा, गोरा हट जा, 141

44 (म) आई टी प्रिचार्ड, द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, 19-20, 29-30 अर 99
(व) जी ऐच ट्रेवर, ओ चेप्टर आफ इ डियन म्यूटिनी, 4

45 (म) राजस्थान का स्वतन्त्रता आन्दोलन, 74
(ब) आई टी. प्रिचार्ड, द म्यूटिनीज इन राजपूताना, 29 अर 99
(स) सावर्स, 48-85

46 सावर्स, 48-85

47 अंगरेजा रै खिलाफ कोटा में 1857 मे क्रान्ति करण वाळा फौजियां रा नेता रिसालदार मेहराबखां करौली मे जाया जलमिया । कोटा रै अेजेंसी हाउस मार्थ हमलो बोल मेजर बर्टन, उण रै दो बेटा अर केई अगरेज अफसरा नै मारण वाळा मेहराबखां नै सेपट 1860 मे अंगरेजा सूळी चढा दिया ।

48 मेहराबखां रै जोडीदार हीरासिंघ रो जलम कोटा रै नाता गाव मे हुयो । अेजेंसी हाउस मार्थ हमले रा खास भागीदार । 1857 नवम्बर में कोटा मे अगरेजा री वळु फौज सूं लडता काम आया ।

49 चित्तोड रै टोंक रा अब्दुलची गुलमाहम्मद क्रान्तिकारी सेना में लडता भिडता टेट दिल्ली जाय पूगा अर अठै 1857 मे अगरेजा सूं जुद्ध मे खेत रिया ।

50 (म) राजस्थान का स्वतन्त्रता आन्दोलन, 72-87
(ब) फो. पो. कसल्टेसन (खाना) 26 जून 1857 न. 113-116
(स) ब्हेई, 31 दिसबर 1858 न. 3146-7

51 (म) जी ऐच ट्रेवर, ओ चेप्टर आफ इ डियन म्यूटिनी, 3-4
(ब) टी. आर. होम्स, ओ हिस्ट्री आफ दी इंडियन म्यूटिनी, 150

52 (म) खड्गावत नाथूराम, राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, 17
(ब) आई टी प्रिचार्ड, द म्यूटिनीज इन राजपूताना, 39

53 फारेस्ट, हिस्ट्री आफ दी इ डियन म्यूटिनी, 3, 450

54 (म) राजस्थान का स्वतन्त्रता आन्दोलन, 79
(ब) टी. आर, होम्स ओ हिस्ट्री आफ दी इ डियन म्यूटिनी, 151
(स) आई. टी. प्रिचार्ड, द म्यूटिनीज इन राजपूताना, 89-90
(द) फो. पो. कस्लटेसन, 27 जुलाई 1858 न. 3146-7

27 आया लाट रा खलीता बाचता धकै लाय ऊभो,
घरै हाथ मूछां खाय ऊभो क्रोध धोग ।
आपरै भरोसै राग जागडो दिराय ऊभो,
साय ऊभो जनेवा खागडो मानसिंग ।।

22 जहूरखां मेहर, धर मजला धर कोसां, 105-6
29 प्रकास व्यास, राजस्थान का स्वाधीनता सग्राम, 67
30 जगदीसंसिह गहलोत, राजस्थान का इतिहास, 3, 149-50
31 (अ) निर्मला गुप्ता, राजस्थान अराजकता से व्यवस्था की ओर, 117
(ब) अजमेर रा सुपरडंट सी. जी. डिक्सन री ग्रे. जी. जी. सदरलैंड ने चिट्ठी तारीख 1 मई 1848 ऐन्कलोजर न० 2, करेस्पोडेंस 26 अगस्त 1848, न० 101 ओफ अँड पी
(स) परम्परा, डूंगजी-जवाहरजी री पड, लोक काव्य परम्परा, 125-135
32 (अ) खडगावत, राजस्थान्स रोल इन दी स्ट्रगल आफ 1857 पे. 123
(ब) राजस्थान हिस्ट्री कान्ग्रेस प्रोसीडिंग्स, VII 118
33 (अ) निर्मला गुप्ता, राजस्थान अराजकता से व्यवस्था की ओर, 179
(ब) प्रकास व्यास, राजस्थान का स्वाधीनता सग्राम, 61
(स) वि० स० 1814 मे सूरजमल मीसण पीपल्या ठा. फूलसिंघ नै आ चिट्ठी लिखी—
"ये राजा लोग देसपति जमी का ठाकर छ जे सारा ही हिमाळय का गळ्या ई नीसर्‌या, ऐ चाळीस स लें'र साठ सत्तर बरस ताई पाछा पड्‌या छै तोई गुलामी करै छै । पर यो म्हारो वचन राज याद राखोगा कि जै अबकै अग्रेज रह्यो तो इको गायो ही पूरो करसी । जमी को ठाकर कोई भी न रहसी । सब ईसाई हो जासी. ....
परम्परा, गोरा हट जा, 141
34 मु सी ज्वाला सहाय, लायल राजपूताना, 278-80
35 (अ) टाड, ऐनल्स अँड अँटीक्वीटीज आफ राजस्थान, 1,560
(ब) स्यामलदास, वीर विनोद, 806
(स) तवारीख-जोधपुर, बस्ता 40, ग्रथ 7, (पुरालेखागार, बीकानेर)
(द) तबकात-ऐ नासीरी, 465
(ध) सरमा जी० ऐन०, सोसियल लाइफ इन मेडिवल राज , 512
(ई) जहूरखा मेहर, राजस्थानी सस्कृति रा चितराम, 97
36 (अ) निर्मला गुप्ता, राजस्थात अराजक्ता से व्यवस्था की ओर, 176
(ब) स्यामल दास, वीर विनोद, 2, 1815
37 टाड ऐनल्स अँड अँटीक्वीटीज आफ राजस्थान, 2, 121
38 स्यामलदास, वीर विनोद, 2 प्रकरण 18
39 (अ) डा प्रकास व्यास, राजस्थान का स्वतत्रता सग्राम, 54-55
(ब) मेहता सग्रामसिंघ कलेक्सन हवाला नं. 28

40 (अ) डा. व्यास, राज. का स्वतंत्रता संग्राम, 54
(ब) फो पो कस्लटेसस, 31 अक्टूबर 1833 नं. 37-44
(स) मेहता संग्रामसिंघ क्लेक्सन, हवाला नं. 787
(द) अेजेंसी रेकार्ड, हिस्टोरीकल रेकार्ड 215, जोधपुर फाइल न. 5 खंड 1, सन् 1834 पेज 19.

41 डा. व्यास, रा. का स्वं. सं., 56
42 (अ) 1857 ग्रोर राजस्थान, क्या क्रान्ति की, 3
(ब) परम्परा, गोरा हट जा, 145
43 परम्परा, गोरा हट जा, 141
44 (अ) आई टी. प्रिचार्ड, द् म्यूटिनीज इन राजपूताना, 19-20, 29-30 अर 99
(ब) जी. अेच. ट्रेवर, अे चेप्टर आफ इंडियन म्यूटिनी, 4
45 (अ) राजस्थान का स्वतत्रता आन्दोलन, 74
(ब) आई. टी. प्रिचार्ड, द म्यूटिनीज इन राजपूताना, 29 अर 99
(स) सावर्स, 48-85
46 सावर्स, 48-85
47 अगरेजा रै खिलाफ कोटा मे 1857 मे क्रान्ति करण वाळा फौजिया रा नेता रिसालदार मेहराबखा करौली मे जाया बसमिया। कोटा रै अेजेंसी हाउस माथै हमलो बोल मेजर बर्टन, उण रै दो बेटा अर केई अगरेज अफसरा नै मारण वाळा मेहराबखा नै सेवट 1860 मे अगरेजा सूळी चढा दिया।
48 मेहराबखा रै जोडीदार हीरासिंघ रो जलम कोटा रै नाता गाव मे हुयो। अेजेंसी हाउस माथै हमलै रा खास भागीदार। 1857 नवम्बर मे कोटा मे अगरेजा री वळू फौज सूं लडता काम आया।
49 चित्तोड रै टोंक रा बन्दूकची गुलमाहम्मद क्रान्तिकारी सेना मे लडता भिडता टेट दिल्ली जाय पूगा अर अठै 1857 में अगरेजा सूं जुद्ध मे खेत रिया।
50 (अ) राजस्थान का स्वतत्रता आन्दोलन, 72-87
(ब) फो. पो. कसल्टेसन (खाना) 26 जून 1857 न. 113-116
(स) अठेई, 31 दिसबर 1858 न. 3146-7
51 (अ) जी. अेच ट्रेवर, अे चेप्टर आफ द इंडियन म्यूटिनी, 3-4
(ब) टी. आर. होम्स, अे हिस्ट्री आफ दी इंडियन म्यूटिनी, 150
52 (अ) खडगावत नाथूराम, राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857, 17
(ब) आई टी प्रिचार्ड, द म्यूटिनीज इन राजपूताना, 39
53 फारेस्ट, हिस्ट्री आफ दी इंडियन म्यूटिनी, 3, 450
54 (अ) राजस्थान का स्वतत्रता आन्दोलन, 79
(ब) टी. आर., होम्स अे हिस्ट्री आफ दी इंडियन म्यूटिनी, 151
(स) आई. टी. प्रिचार्ड, द म्यूटिनीज इन राजपूताना, 89-90
(द) फो. पो. कस्लटेसन, 27 जुलाई 1858 न. 3146-7

55 (अ) जी. ग्रेष. ट्रेवर, ग्रे चेप्टर ग्राफ द इंडियन म्यूटिनी, 5
(ब) मुंसी ज्वाला सहाय, लायल राजपूताना, 200–1
56 ग्रेजसी रेकार्ड मेवाड 1857, न. 88, क्प्तान सावर्स रौ ग्रे. जी. जी. रै नांव खलीतो, 25 मार्च, 1858
57 (अ) प्रिचार्ड द म्यूटिनी इन राजपूताना, 121-28
(ब) नीमच रा कप्तान लायड री ग्रे. जी. जी. ने रपोट, 16 जून 1857
58 सी. ग्रेल. सावर्स, ग्रे मिसिंग चेप्टर ग्राफ द इंडिन म्यूटिनी; 27
59 व्हैई, 27–29
60 राजस्थान का स्वतंत्रता ग्रान्दोलन,
61 डा. जबरसिंघ, द ईस्ट इंडिया कपनी ग्रेंड मारवाड, 120
62 हकीकत बही न. 18, 384
63 (अ) ग्रोलिया रा कोठार, न. 59 ग्रर 63
(ब) जोधपुर राज्य रेकार्ड्स, सनद बही 126 पेज 546
(स) जबरसिंघ, द ईस्ट इंडिया कपनी ग्रेंड मारवाड, 126
64 मारवाड मे सन् सत्तावन की चिंगारी, 2
65 हीयकोटर्स रिपोर्ट ग्राफ दि प्रोसिडिंग्स ग्रगेंस्ट द म्यूटिनीयर्स ग्राफ जोधपुर लिजियन, 13 सितम्बर, 1857
66 (अ) हकीकत बही, 18, 384
(ब) नाथूराम खडगावत, राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, 180
67 (अ) फो. पो. क., 27 दिसम्बर 1857
(ब) खडगावत, 152
(स) डा. व्यास, राजस्थान का स्वाधीनता सग्राम, 107
68 खडगावत, 153–55
69 दिल्ली कानी कूच करण वाळा मे सिवनाथसिंघ ग्रासोप, बिसनसिंघ गूलर, ग्रजीतसिंघ ग्रालणियावास, जोधसिंघ बाजावास, चांदसिंघ सिनाली, रा ठाकर ग्रर ग्रठा कानी सूं पहाडसिंघ ग्रर सलूंबर कानी सूं सयतसिंघ रा नाम खास गिणावण जोग है।
70 डा. ग्रार. पी. व्यास. रोल ग्राफ नोबिलिटी इन मारवाड, 138
71 व्हैई, 139
72 फारेस्ट, हिस्ट्री ग्राफ द इंडियन म्यूटिनी, 3, 555–6
73 (अ) जी. ग्रेष. ट्रेवर, ग्रे चेप्टर ग्राफ द इंडियन म्यूटिनी, 12
(ब) खडगावत, राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ग्राफ 1857, 62
74 (अ) डा. प्रकास व्यास, राजस्थान का स्वाधीनता सग्राम, 131
(ब) फो पो. क. (सीक्रेट), 28 मई 1958 न. 136-39
(स) गवर्नर जनरल री सीक्रेट कमेटी नै डिस्पेच, 1858 न. 14
75 (अ) खडगावत, 66–68
(ब) वीर सतसई (सहल), 77–78
(स) कोटा महाराव री सलामी री तोपां री गिणती घटा दी, खिराज री रकम घणी बधा दी ग्रर कोटा पलटण में सिपाई साव कम कर दिया।

राजस्थान में आजादी रौ आन्दोलन

डा. आर. पी. व्यास

राजनीतिक चेतना अर क्रान्तिकारी हंळगळ (1885-1924),

भारत री आजादी रो आन्दोलन घणो विस्तृत है। घणी बेळा तांई घमचक मचियोड़ी रैई। उगणीसवी सदी री छेलो छेडो अर बीसवी री आदेटी इण घमचक मे इज बीतियो। करता करता सगळे देस मे आजादी री आडग तर तर सवायो मडण लागो अर राष्ट्रीय भावना दिन दूणी रात चौगणी बधण लागी। उण बेळा राजस्थान उगणीस छोटा मोटा रजवाड़ां अर तीन खुद मुख्तार ठिकाणां में बटियोड़ो हो। इण टाळ अगरेजी सरकार जमियोड़ो अजमेर-मेरवाड़ा ई इण में भेळो हो। रजवाड़ा मे राजावां रा डका बाजता अर ठिकाणा मे ठाकरी ठरको चलतो। दमन, सोसण अर जुल्मां री जाजम जमियोड़ी ही, रियासती जनता साव अणपढ अर नेतृत्व रो नाव ई नी। राजस्थान रो आर्थिक, सामाजिक अर राजनैतिक ढांचो ठेट मध्य जुग रै कृसक- सामन्ती स्तर रो इज हो। अंगरेजां रो आसरो लिया पछै जीको फेर बदळ हुयो उण सूं करनै आपरै नीजू बूतै माथै जीवारी रो गाडो गुडावण वाळै मध्यम वर्ग रो सफायो हुय्यो अर कोरा दो वर्ग इज बाकी बच ग्या। अेक ऊचो वर्ग, खास खासरी जोग, जिणमें राजा, सिरदार अर मोटा मुत्सद्दी हा अर दूजी साव मोमजी मोमजी री अणपढ भूख सूं कड़ाका काढतो वर्ग। आ दोना वर्गां रै गळै मे गुलामी री विदेसी गळपटियो घालोड्योड़ी हो जिण सूं वै मन मरजी सूं हाथ पग ई नी हिला सकता हा। इण हालत मे राजस्थान मे राजनीतिक ऊघ थोड़ी मोड़ी उडी अर राष्ट्रीय भाव थोडा धीमें धीमें इज पनपिया पण फेर ई अगरेजी हकूमत वाळा इलाका मे राजनीति री जको धमाधम मच्योड़ी ही उण रै असर सूं राजस्थान रो जनजीवन ई कोरो नी रै सकियो।

1885 ईसवीं में इण्डियन नेसनल कांग्रेस री थरपणा हुगी आयो बरस इण रा इजलास हूवण लागा। गवर्नमेंट कालेज रा की छोरा मिळ अर अजमेर में कांग्रेस समिति बणाई। कांग्रेस रै चोथै इजलास मे मिळण सारु पेलपरात अजमेर रा गोपीनाथ माथुर अर किसनलाल इलाहबाद पूगा। तठां उपरात इण्डियन नेसनल कांग्रेस में राजस्थान री नुमाइंदगी हरमेस बणियोड़ी री। होळै होळै अजमेर-मेरवाडा अर राजस्थान री बीजी केई जागावा कांग्रेस रो जोर वधण लागो जिण सूं जन जाग्रति अर राजनीतिक चेतना रो माहोल बणण लागो।

भूतपूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय

राष्ट्रीय अखबार वाचणिया री गिणती ई लगू वधण लागी । ग्रां रै टाळ 1885 ई॰ मे अजमेर सू 'राजस्थान टाइम्स' अर इणरो इज हिन्दी मे उथलो 'राजस्थान पत्रिका' रै नाव सू ग्रेकै साथै छपीजण लागा । ग्रा रो सम्पादन वख्सी लक्समणदास करता । 1889 मे मुसी सिमरथदान चारण 'राजस्थान-समाचार' नाव रै छापै रो सम्पादन करण ढूका । करता करता राजस्थान मे केई थोजा अखबार ई निकळण लागा । इणा छापा सू राजस्थान मे नवी दीठ (प्रगतीसील विचारा) री कूपा फूटण लागी, राष्ट्रीय विचार चावा हुवण लागा ग्रर मानखै रै मन मे ग्रेक नवी फुडती निपजण लागी ।

'स्वदेसी' नारो राजस्थान मे पैलपांत ग्रार्य समाज रा थरपणहार स्वामी दयानन्दजी सरस्वती लगायो । *'स्वराज्य' री सोवा वखाणता स्वामीजी सत्यार्थ* प्रकास' मे लिख्यो क चोखै सू चोखो विदेसी राज स्वदेसी राज सू फोरो व्है । सागण इणीज गत री वाता घणै भावता ग्राजादी रा ग्रागीवाण व्हो । स्यामजी क्रस्ण वरमा स्वामीजी रै स्वदेसी विचारा सू घणा प्रभावित हुवा । स्यामजी क्रस्ण वरमा क्रान्तिकारी विचारा रा मिनख हा । इगलैड मे बेरिस्टरी पास करिया पछै उणा अजमेर मे वकालत रो धधो धारियो । दामोदर राठी सू सल्लासूत पछै उणा व्यावर मे 'क्रस्णा मिल' थरपी । इण मिल मे केई दिना स्यामजी मेनेजरी ई करी । स्यामजी री करणी सू दामोदर राठी री दण ई क्रान्तिकारी ग्रान्दोलन कानी हुवण लागी । राजस्थान मे ग्राजादी रा ग्रागीवाना ग्रर क्रान्तिकारी उथेड पछाड सारु राठीजी रो खजानो ग्रम्टपोर खुलो रेवतो । 1907-8 ई॰ मे जद ग्ररविंद राजस्थान दोरै माथै ग्राया तो नै राठीजी री ई मिजमानी कबूली ही । उणा चवडै धाडै देसी गाबा ग्रर बीजी देसी चीजा वरतण सारु हेलो पाडियो ग्रर लोगा मे राष्ट्र भक्ति रा बीज वाया ग्रर ग्रगरेजा सारु वैर री जडा जमाई ।

स्वामीजी रा इज ग्रेक चेला गोविंद गुरु, डूगरपुर, बासवाडा, लकाउ मेवाड, सिरोही, इडर, गुजरात ग्रर मालवा रै भाखरा रै मझ रेवणिया भीला विचै ग्राजादी री ग्रलख जगायी । पूर पच्चीस बरसा ताई (1881-1908) गोविंद गुरु भीला न चेतावण रा कळाप करिया । 'सप सभा' नाव रै ग्रेक सगठन रै जरियै भीला नै चेता, ग्रमल दारु सरीसी नसीली चीजा री लत छोडा, विदेसी चीजा नै ठोकर ठोका ग्रर देसी चीजा नै ग्रगेजण सारु त्यार करिया । भीली इलाका मे पचायता नै पाछी पगा कर न देसी रजवाडा माथै प्रसासनिक सुधारा सारु जोर नाखियो । गोविंद गुरु री करणी सेवट रग लाई ग्रर भीला रै जीव मे थावस वापरियो । भील राजावा, जागीरदारा ग्रर राज रा कारिंदा नै भट वेगार देवण सू सफा नट ग्या । गाव गाव मे सपसभा' रो साखा खोलीजी । 'सप राजस्थानी रो सवद है जिण रो म्यानो है ग्रेको ग्रर इकळास । राजा जागीरदार इण 'सप-सभा' नै विद्रोहिया री सस्था गिणी । सिरोही, बासवाडा, डूगरपुर ग्रर

लंकाउ मेवाड रा सासक गोविंद गुरु री इण सप सभा सूं थोडा डरपीज ग्या अर भीला माथै अणूताई करण सारु तुलगा। चेतियोडा भीला सामी उणा री की खास दाळ नी गळी जद सेवट उणा अगरेजा री फौजी मदद लीवो अर 1908 ई० मे इण भोला रै आन्दोलन नै दबायो। 7 दिसम्बर 1908 रा मानगढ रै भाखर माथै भीला री अेक ज ी मेळो मडियो। कैया इण भीली जमघट नै सप सभा रो सालाना इजलास कह्यो। इण मोकै अेकूकै गाव रो सरपच आपर गाव रै विकास री कारवाई गोविंद गुरु न बतावतो। मेळै मे हजारा भीला री जमघट लागोडो। अचाणचकै ई अेक अगरेजी फौज उठै पूग मानगढ रै भाखर रै घेरो घाल दियो अर साव छडा भीला माथै चारु मेर सू बन्दूका री गोळियां बरसण ढूकी।- सईकडा भील मौत रा भख वणिया गोविंद गुरु कैद हुया। सप-सभा गैर कानूनी करार करीजी। इण गत भीला रै आन्दोलन नै अगरेजा बदूका रै जोर सू जरु कर दियो। पण भीला री कुरबानी अकारथ नी गई। उणा माथै हुयोडा जुलमा सू राजस्थान मे अगरेजा री हुर्र-दुर्र हुई अर जागा जागा मिनखा रै मन मे अगरेजा सारु खार वैर दीसण लागो।

1904-5 ई० मे रुस-जापान जुद्ध मे जापानी बेंतियै रुसी बासिया नै पटक दडी रमारमा अर फफेडिया ईण सू भारतवासिया रै मन में बिस्वास जागो अर आ बात चावी हुई क यूरोप रा घमघमिया करता मुल्का नै ई पटक पछाडी दिरीज सकै। सगळा अगरेजी राज री जडा उखाडण रै जतना मे जुत ग्या। इणी समै बगाल मे आजादी रै अघड रै आडा छप्पर छावण रै मोजू-मसँ वायसराय लार्ड कर्जन 1905 मे बगाल रो विभाजन कर दियो। औ भारत री राष्ट्रीय अेकता माथै भारी घाव पाडीज्यो। सगळै देस मे इण विभाजन रो विरोध हुयो। अगरेजा कुचलण मसलण वाळो डाव लगायो। लोगा इण रै पडूत्तर मे विलायती माल रै ठोकर ठोक, उणनै सुगाय अर स्वदेसी आन्दोलण चलायो। अगरेजा री लाठाई सूं कुचलण वाळी नीति सू उठै उग्रवाद अर आतकवाद रै वळुवा रो जोर बधण लागो। उग्रवादिया मे केई अेडा हा जिका तोड-फोड अर मार काट मचा अर अगरेजा नै नठावण स रु तेवड राखी ही। अै लोग देस मे ससस्त्र क्रान्ति री धार ली। अगरेजी फौजा रा देसी सिपाया नै विडा अर क्रान्ति रा कळाप ई करण लागा। अगरेज अफसरा री हत्या क अगरेजी खजाना लूटण मे इणा नै की बुराई निगै नी आवती। मायड भाम नै आजाद करावण माथ तुलियोडा इण आजादी रा आगीवाना रै मू डै माथै भारो सू भारी कीमत चुकावती वेळा चिन्योक सळ ई नी पडतो क्रान्तिकारी साहित्य रो सिरजण हुयो, सस्त्र भेळा करीजण लागा अर बमा रै भचीड ऊठण लागा।

चोफर अगरेजा रै विरोध री लाय लगती दीसण लागी जद वायसराय लार्ड मिण्टो देसी राजावा री पल्लो पकडण रो विचार करियो। लार्ड कर्जन री धारणा आ ही क बीजा देसी राजावा आळी कळाई राजस्थान रा राजा ई आप आप रै रजवाडा मे अगरेजा रा चाकर हा वा सू उडोक ही क ब सावचेती सू

अगरेजी राज री रुखाळ अर अंगरेजा रै वैरियां री खातर्मो करैला। लॉर्ड मिण्टो हेत अर विस्वास री नीति रो आसरो लियो। राजावा साथै अपणायत जताई। 1900 मे लार्ड मिण्टो राजस्थान रा सगळा राजावा नै परवाना मेलिया जिण मे मुलक मे लग्गू बढतै राजद्रोह कानी राजावा रो ध्यान दिरायो अर अगरेजी सरकार अर रजवाडा रै हित मे विरोधी कारवाया नै दबावण री अरज करी। इण परवानै पछै देसी राजावा आप आप रै अठै क्रान्तिकारी लोगा माथै काबू पावण सारु केई कानून बणाया। राजवाडा मे समावा माथै बदिस अर भासण माथै रोक लगावण रा होकम साया हुया। क्रान्तिकारी साहित्य री राज मे आमद माथै रोक लगाईजी, इण गत रै साहित्य नै पढणो क आपरै कनै राखणो अपराध मानीजण लागो। घणकरा रजवाडा मे कर्मयोगिन, अमृत बाजार पत्रिका, काल केसरी, जमीदार जेडा रास्ट्रवादी अखबारा माथ पाबदी लगाईजी। अगरेजा रो विरोध करण वाळा सगळा अखबारा अर ग्रथा माथै रोक लागगी।

इण गत री करडी कारवाई पछै ई राजस्थान मे क्रान्तिकारी हळगळ रै कारी लागी कोयनी। रास्ट्रवादी अखबारा रजवाडा रै जुलमा री साची धूड उडावणी सरु करदी। घोराउ भारत रै किताक क्रान्तिकारी गुटा रो राजस्थान रा क्रान्तिकारिया सू नातो जुडियोडो हो। उण बेळा राजस्थान मे न्यारी न्यारी ठौड तीन क्रान्तिकारी गुट घमचक माडियोडा हा। पैलडो धडो अर्जुनलाल सेठी री अगवाई मे जयपुर मे रम्मत माड राखी ही। दूजे धडै रा आगीवान केसरीसिंघ बारहठ हा जका कोटा मे धमा चौकडी मचा राखी ही तीजे धडै रा टीकायत खरवा राव गोपाळसिंघ अर ब्यावर रा दामोदर राठी हा, इणा अजमेर नै अखाडो बणा राखियो हो।

अर्जुननाल सेठी यू तो क्रातिकारी हा पण राजस्थान मे आतक फैलावण रा वळ नी हा। वारो मानणो हो क भारत री घणकरी विपदा री वजे अगरेज है। वान भरोसो हो क मोटा अगरेज अफसरा नै मारिया सू घबरीजिया अगरेज मुलक री पिंड छोड देवला। वै चावा क्रान्तिकारो रासबिहारो बोस रै खासा मे हा। वानै राजस्थान मे ससस्त्र क्रान्ति री काम सू पीज्यो हो। अर्जुन लाल सेठो जयपुर मे वर्द्धमान विद्यालय री थरपणा करी जठै देस रै खुणै खुणै रा मोटियार पूग'र क्रान्ति री सीख लेवता। महारास्ट्र अर कस्मीर जेडी आगी आगी भौ रा मोटियार इण विद्यालय मे पूगता।

धाडा पाड र धन लूटण मे क्रान्तिकारिया नै की उजर नी हो वर्द्धमान विद्यालय रा गुरुआ माय सू अेक विस्णुदत्त आपरा चार नामी चेला त्यार करिया— मोतीचद, माणकचद, जयचद अर जोरावरसिंघ। इणा पाचा आरा जिल मे नामेज रै जैन उपासरै मे 20 मार्च 1913 रा धाडो पाडियो। उपासरै रो महत इण वेळा मारियो गयो। इण वार्के सू थोडोक पैला 23 दिसम्बर 1912 रा रासबिहारी बोस रो अगवाई मे क्रान्तिकारिया दिल्ली मे वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज

माथै बम फेंकियो हो। आ दोनूं वाका मे अर्जुनलाल सेठी री काई हाथ हो इण बात री पत्तो किणनें ई नी हो तोई अंगरेजो सरकार र दबाया जयपुर राज मानै पकड र निजरबद कर दिया। थोडा दिना पछै सेठी नै मद्रास प्रसीडेंसी री वेलूर जेळ मे मेल दिया।

अठै आ बात खरावणो अगेई वेजा नी व्हैला क पैला पैला सगळा रास बिहारी बोस नै दिल्ली मे हार्डिग्ज माथै बम फेंकण री जस देवता। पण आ बात साची कोयनी क्यू क घकै आवता अडा केई ठोस सावूस चवडै आया जिण सू सुभट लखावै क बम फेंकणवाळो जोरावरसिंघ हो। बिहार र आरै माथै धाड'र महत री मौत रै केस मे जोरावरसिंघ नै फासी री सजा रौ होकम हुवौ पण जोरावरसिंघ भवै ई नी अपडीज्यो। हार्डिग्ज माथ बम थरकाया पछै पूरै सत्ताईस बरसा ताई अठी उठी छिपतौ फिरियौ। उणरो सरगवास 1939 ई॰ मे हुयौ। हीयौं हथळी लै'र देस री आजादी खातर मे की होमण वाळा जोरावरसिंघ सरीसा क्रान्तिकारिया री गरबजोग करणो प्रथ्वी प्रलै ताई अजर अमर रेवैला।

कोटा रा सिरै क्रांतिकारी केसरीसिंघ री राजस्थान, बगाल अर पजाब रा क्रांतिकारिया सू तोजी बठोडी ही। अर्जुनल ल सेठी सू वारौ घणा घणी मेळ अर मास्टर अमीरचद सू खासी भलो ओळखाण ही। उण समै केई आजादी रा परवानां नै सूळी रै सूयै माथै चढणो पडियो अर वारै परिवार माथ केई अबखाया आय पडी। केसरीसिंघ इण गत रा परिवारा सारु पईसा री जुगाड बैठावण री ताक मे हा। इण मुद्दै सारु जोधपुर रै अक महन्त री कोटा मे हत्या हुगी। इण बाबत केसरीसिंघ, लाहेरी, रामकरण अर हीरालाल जालोरी गिरफ्दार हुया अर इणा माथै मुकदमौ दर्ज हुयौ। तीन जणा न तो बीस बीस बरस अर हीरालाल नै सात बरस री सजा बोलीजी। थोडा दिना पछ केसरीसिंघ नै बिहार री हजारी बाग जेळ मे मेल दिया।

केसरीसिंघ बारहठ री तो सगळी गवाडी ई क्रान्तिकारी। बेटो प्रतापसिंघ बम बणावण रै अपराध मे पकडीज्यो अर बरेली जेळ मे मेलीज्यौ। तर तर रा जुलमा सू कर नै जेळ मे इज प्रतापसिंघ री सरगवास हुयौ।

बावा क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस अर सचीन्द्रनाथ सान्याल सू प्रेरित हू र केसरीसिंघ बारहठ अर खरवा (अजमेर) राव गोपालसिंघ राजस्यान मे 'वीर भारत सभा' नाव री अेक छानी (गुप्त) सस्था थरपी। उणी समै रासबिहारी बोस 1909-10 ई॰ मे भूपसिंघ नाव रै अक मोटियार न अजमेर धकी मेलियौ। औ इज भूपसिंघ घकै आवता विजयसिंघ पथिक री नाव सू अगरेजा नै नाका चिणा चबा दिया। भूपसिंघ बीज क्रान्तिकारिया सारु सस्त्र भेळा करण अर राजस्यान मे क्रान्ति री आच नै सागेडी जोर पकडावण रो मसा सू राजस्थान मे आयौ हो। भूपसिंघ आवता ई राव गोपाळसिंघ सू तोजी भिडाई अर सस्त्र भेळा करण लागो। छान छानै ससस्त्र क्रान्ति री तजवीजा भिडण लागी।

1914 ई० रै दिसम्बर मईनै बनारस में भारत भर रा क्रान्तिकारी भेळा हुया अर क्रान्ति री ग्रेक योजना त्यार करी। 21 फरवरी 1915 ई० रा क्रान्ति री तारीख मुकर हुई। इण क्रान्ति री सरुवाद पजाब सूं हूवणी हो। राजपूताना मे राव गोपाळसिंघ अर दामोदर राठी नै ब्यावर, भूपसिंघ नै अजमेर अर नसीराबाद माथै कब्जो जमावण रा आदेस मिळिया हा। 21 फरवरी रा गोपाळसिंघ अर भूपसिंघ खरवा रेल्वे टेसण रै पागती दो हजार बख्तरबद फौजिया समेत जाय पूगा। टेसण रै पागती रोई मे लुक अर पैला ई मुकर सैनी (इसारै) री बाट जोवण लागा। सैनी आ मुकर हुई ही क दिल्ली अहमदाबाद रेल गाडी रै टेसण मूं हकिया पछै ग्रेक बम रो भचोड उठैला। पण सैनी हुई कोयनी क्यू क पजाब मे 19 फरवरी रा इज क्राति री भाडो फूट ग्यो। अगरेज सरकार वेळा माथै जाणै री कारवाई करनी, पजाब रा किताक क्रान्तिकारी पकडीज ग्या अर केई सस्त्रागार माथै हमलै रा वेळा पेला ई सावचेत बैठा अगरेज फौजिया री गोळिया रा निसाणा बण ग्या। क्रान्ति रो भाडो फूटण री खबर गोपाळसिंघ अर भूपसिंघ नै लागता पाण उणा आपरा फौजिया नै अठी उठी बिखैर र तितर बितर कर दिया। इण गत ससस्त्र क्रान्ति री तजवीज माथै पाणी फिरग्यो।

इण वाकै रै थोडा दिना पछै इज अजमेर पुलिस गोपाळसिंघ अर भूपसिंघ नै पकड लिया अर वानै मारवाड-मेवाड रै काकड माथै टॉडगढ रै किलै मे कैद कर दिया। भूपसिंघ फोकर ई टॉडगढ सू निकळ भागो र मेवाड रा लोगा री सहानुभूति सू करनै पाछो भावं ई नी पकडीज्यो। गोपाळसिंघ ई टॉडगढ सू तो नाठो परो पण थोडा दिना पछै किसनगढ राज मे पाछो पकडीज ग्यो। उणनै साहजहापुर री तिहर जेळ मे मेल दियो। गोपाळसिंघ री रग रग मे आजादी री उमग पिलापिल भरियोडी हब्बोळा खावती ही।

टॉडगढ सूं निकळ'र भूपसिंघ मेवाड रा भाखरा मे मिळ ग्यो केई दिना रोई अर भाखरा मे अठी उठी भटकतो रियो। इण वेळा उण आपरो नाव विजयसिंघ पथिक धर दियो अर दाढी मू डणी छोडदी पैलपरात गुरला गाव मे केई दिन आसरो लै अर सास खायो। पछै भगवा धारण कर साधु रै साग मे केई दिन ग्रेक कुटिया मे काढिया। पछै राजपूत बण काकरोली रै पागती भाण गाव मे पूग डेरा दिया इण पछै मोही, जहाजपुर हूवतो चित्तोड रै नेडै ग्रोछडी गाव मे जाय पूगो। उण समै मेवाड रै बिजोळिया ठिकाणै रै करसा माथै अणूताई सूं करनै साधु सीतारामदास री अगवाई मे करसा आन्दोलन करियो पण ठिकाणै रै जुलमा हेटै ओ आन्दोलन कीचरीजण लागो।

सीताराम रै नोरा करिया पथिक बिजोळिया जा पूगो अर करसा नै पाछा पगा करण रै जतना मे जुत ग्यो। किसान पच बोर्ड री थरपणा करीजी अर साधु सीतारामदास इण रा अध्यक्ष चुणीज्या। गाव गाव मे पचायत करसा रा छोटा मोटा कजिया रा निरेडा करण ढूकी। ठौड ठौड़ स्कूला खुली जठै टाबर,

मोटियार अर अदखड दुरादुर भणीजण लागा। इण सगळै कामा रै अेडै छेडै राजनीतिक जगावण री खप्पत ई करोजती। सगळी वाता मे सीतारामदास रै साथै मोटियार माणिक्य लाल वर्मा ई विजयसिंघ पथिक रै अडीअड वं या। ठिकाणै री चाकरी रै ठोकर ठोक मोटियार वर्मा ई पथिक वाळो गेलो पकड लियो। पथिक रै पछै बिजोळिया आन्दोलन रो भार वर्मा रै खवा इज साभियो।

पीढिया सू बिजोळिया रा करसा अणूती वेगार, केई भात री लागा अर राजनीतिक जुल्मा नै उखणियोडा तागिया खावता हा। मेवाड राज रै करसा सूं पेलै विस्व जुद्ध सारु जबरन चदो उगाईजतो हो। हळ दीठ चवदै रुपिया जुद्ध लाग वसूलोजण लागी। करसा रै मन मे अणूतो ई खार उफाणै आयोडो हो। इण करसा री पीड पपोळ अर पथिक वारै मन मे आपरी ठावी ठोड बणा राखी ही। पथिक री करणी मे अेक निडर क्रातिकारी रै साहस, लोकमान्य तिलक री कूटनीति अर गाधीजो रै सत्याग्रह रै सू गं मेळ रो झपको सुभट दीसै।

पैलपात बिजोळिया रा करसा महाराणा अर ठाकर नै आपरो मागा मानण री लिखित अरज करी। इण माथै गतूई वी गिनार नी, हुयो जद उणा सत्याग्रह आळो मारग पकडियो अर ठिकाणै नै लाग-बाग, नजराणा बीजा देवण सू चवडै धाडै नटग्या। पथिक रै चेताया करसा जुद्ध रो चदो नीं देवण माथै ई तुलगा। महाजना सू की तल्लो बल्लो नीं राखण री ई धारली। ठिकाणै री कचेडी नै सुगाय'र आपसरी कजिया रै निवेडै सारु पचायता रो आसरो लेवण लागा। इण माथै किडकिडिया खा अर ठिकाणो डडै रै जोर सू करसा रै नथ घालण रा कवाडा माथै उछर ग्यो। अलेखा नै काळ कोठडी रै हवालै करिया अर वा साथै सुणिया शेल रा रुगता ऊबा व्है जेडो कुशेता करी। ज्यू ज्यू ठिकाणै री करसा साथै कुपीता बधो आन्दोलन तर तर सवाई लाठाई पकडतो ग्यो। करसा बिजो-ळिया म करसण रोक अर जमी पडत छोड दी। आर्थिक दीठ सू ठिकाणै रा भट्ठा बैठण लागा। आन्दोलन मे लुगाया ई मिनखा साथै बरोबर हिस्सो लियो। बूढा डाडा, टावर-टीगर अर मोटियार सगळा भिडमला सू ई भारी गाड रा धणी बणगा। बिजोळिया आन्दोलन री धमचक 1922 तक सागेडीज मच्योडी री।

करसा रै बिजोळिया आन्दोलन रा समाचार देस रा नामी छापा मे छपण लागा। गणेस सकर विद्यार्थी रै 'प्रताप' अखबार मे तो इण आन्दोलन सारु नित अक जागा मुकर इज हुगी। प्रयाग रै 'अभ्युदय', कलकत्ता रै 'भारत मित्र' अर पूना सूं छपण वाळै लोकमान्य तिलक रै 'मराठा' सरीस अखबारा मे बिजोळिया आन्दोलन री धूम मचगी। महात्मा गाधी, मदनमोहन मालवीय, लोकनायक तिलक अर जमनालाल बजाज सरीसा दाठोक नेतावा रो ध्यान बिजोळिया कानी खिचियो। इण री गू ज ठेट इण्डियन नेसनल काग्रेस रै सालाना इजलास मे सुणो जण लागी। असल मे भारत री आ पेलडो इण गत रो करसा रो आन्दोलण हो। इण आन्दोलन बिजोळिया ठिकाणै अर मेवाड राज र साथै भारत सरकार री

जडा जजेड भर धूजणी छोडाय दी। भारत सरकार री विदेस विभाग करसां रें इण भान्दोलन नें घणो खतरनाक गिणियों। बिजोळिया रें करसा री पचायत नें भारत सरकार बोलसेविक रुस री कम्यून रो इज दूजो रुप मानती ही। घोखला-पोडी सरकार इण भान्दोलन नें तुरत फुरत ठडो पटकण माथे उछरगो। मेवाडी राणा नें जोर दियो क भान्दोलन री सफायो करें। भ्रे जी. जी सर राबर्ट हालैंड भर मेवाड री रेजीडेंट विल्किन्स बिजोळिया पूगा। करसा री पचायता भर ठिकाणें बिचे सुलें रा कळाप करोज्या। इण सुलें माळी वातचीत सारु करसा री पचायता कानी सू माणिक्य लाल वर्मा, मोतीचद, नारायण पटेल भर राम-नारायण चौधरी मुकर हुया। 1922 री 5 मू 7 फरवरी ताई बातचीत हुई। इण बेळा करसा री घणकरी बाता कबूलीजगी भर समझौतो पार पडग्यो। बिजोळिया भ्रान्दोलन छडिया बिछडिया करसा मे भात्मविस्वास भर दियो भर मुगती रो मारग खोल दियो।

बिजोळिया मे करसा रें भ्रान्दोलन री जो लाय लगी उण री झाळा घणी घणी भौं ताई पूगी। होडाहोड मेवाड रें कित्ताई बीजा ठिकाणा भर केई खालसा गांवा मे करसा लाग-बाग भर भेंट-बेगार री विरोध करण लागा। बगू ठिकाणें मे जोर सोर सू भ्रान्दोलन री भ्रायोजन हुयो। पथिकजी रें परपियोड राजस्थान सेवा सघ रा माणिक्यलाल वर्मा भर बीजा समाज सेविया री दौड धूप सू बेंगू रा करसा ई चेतिया। करसा मावडिया ली क वे नसें रें नेडा ई नी फुरकला भर स्वदेसी चीजा इज बरतेंला। करसा होळ होळें छूत-भ्रछूत रा भावा सू छुटकारो पा लियो। हरीजन ई करसा री पचायता रा मेम्बर भर भ्रध्यक्स ताई चुणीजण लाग ग्या। रुढीवादी जागीरदार इण नवी हवा सू खीझ'र लाठाई सू मारण कूटण माथे उछर ग्यो। बेगू रा करसा नें केई जुलम भुगतणा पडिया। पथिकजी रें मेवाड मे बडण माथे पाबदी लागोडी ही तोई छानें छुरक बेंगू पूग भर उण करसा रो भ्रान्दोलन साभ लियो। सेवट पथिकजी पकडीज ग्या भर वान पाच बरस री सजा बोलीजी।

13 जुलाई 1923 रें दिन राज री फौज बगू ठिकाणें रें गोविंदपुरा गाव रो घेरो घाल'र भाग लगा दी। पडता-गुडता नाठता करसा माथे बदूका खाली हुई। केई करसा घायल हुया भर दो तो सागे जागा इज गोळिया री भख बण ग्या। पाच सौ करसा गिरफदार हुया लुगाया टाबरा दुरादुर माथे डडा बरसिया। लाठाई भर जुलम रें जोर माथे बगू री भ्रान्दोलन कुचळीज्यो तो परो पण मिनखा रें मना मे ऊळटा घपळका रें की कारी नी लागी।

बिजोळिया भर बेंगू रें करसा री करणी रग लाई भर बूदी रा करसा ई लाग-बाग भेंट-बेगार देवण सू नट ग्या। उठें ई भ्रान्दोलन जोर पकडण लागो। राज कानी सू जोर जबरदस्ती हूवण लागी। भ्रान्दोलन रा भ्रगुवा नें रामसरमा पकडीज्या'र वानें चार बरस री सजा ठोकदी। लाठाई सू भ्रान्दोलन दबियो नी

जद मई 1923 में आदोलनकारिया माथै गोळियां बरसी। नानक भील इण बेळा मारियो गयो। राजस्थान सेवा सघ अखबारा मे बू दो रै करसा माथ हुवण वाळै जुल्मा री धूड उडाई अर बू दी सरकार माथै करसा री मागा मानण सारु जोर नाखियो। सेवट करसा री आधो दूदी मागा मानीजी जद आन्दोलन मोळो पडियो।

इण गत आजादी रै आन्दोलन रै पेलै पख मे राजस्थान मे क्रातिकारिया रौ खासो जोर रियो। जै घणाकरा क्रातिकारी जुल्म री चक्की रै पाटा बिचै पीसीज ग्या तोई वा रौ बलिदान बिरथा नी ग्यो। राजस्थान मे जन चेतना जगावण अर अगरेजा सारु खार निपजावण मे इण समै रा आजादी रा आगीवाना री भेळ घणी इज भारी रियो। बिजोळिया, बेंगू अर बू दी मे करसा रै आन्दोलना सू राजस्थान मे राजनीतिक चेतना जागी। पथिक रै अजमेर मे थरपियोड़ै 'राजस्थान सेवा सघ' बेगार नै जडामूळ सू खतम करण सारु घणो सरावणजोग काम करियो। पथिक, रामनारायण चौधरी, हरिभाई किंकर, सोभालाल गुप्त, माणिक्य लाल वर्मा, लादूराम जोसी, प्रेमचद भील, मौडसिंघ, नैनूराम सरमा इत्याद इण सघ सारु नाठ दौड करणवाळा खास गिणावणजोग नाव हा। जठ जठै करसा लाग-बाग'र बेगार री विरोध करियो उठै 'राजस्थान सेवा सघ' रा लोग करसा रा वळु बण ग्या। इण सू राजस्थान मे सेवा सघ री साख साची जमगी अर रजवाडा रा राजा उण सू हुबक खावण ढूका।

जन आन्दोलन अर राजनीतिक सस्थावां री थरपणा—
(1924–1938 ई०)

1920 ई० मे इण्डिन नेसनल काग्रेस रो नेतृत्व महात्मा गाधी रै हाथा मे पूग ग्यो। गाधीजी देस री राजनीति नै अेक नवो मोड दे दियो। वा जिकरा आन्दोलना री अगवाई करी वै खरा जन आन्दोलन कहीज सकै। महाजुद्ध री बेळा गाधीजी अगरेजा सू मेळ रा हामी हा। वानै आस ही क जुद्ध र निवेड़ै पछै अगरेज भारत नै आजाद कर देवैला। पण जुद्ध ढबिया बाद कूंगेज कोयनी। 1919 ई० रै अधिनियम सू सगळा रास्ट्रवादी नाराज हा। रौलेट अेक्ट पास हुयो जिण रै मुजब कोरै ससै रै पाण किण नै ई अपड अर बिना मुकदमो चलाया सरकार आपरी मरजी पड़ै जित्त जेळ मे बद कर सकती ही। 13 अप्रेल 1919 रै दिन जिण गत जलियावाला बाग मे मिनखा रा कत्लेआम हुया उण सू गाधीजी रो जीव हिल ग्यो अर अगरेजा न सहयोक करता विरोध करण लाग्या। सेवट 1921 मे गाधीजी असहयोग आन्दोलन सारु देस न हेलो दियो। इण आन्दोलन रौ सगळै देस माथै जबर ई असर पडियो जद राजस्थान कीकर अळगो रेवतो।

राजस्थान मे बीसवी सदी रै पैलड़ै बीस बरसा मे केसरीसिंघ बारहट सरीसा अगरेजा रा वैरी राजावा न वारै बडरा री इज्जत करतो याद दिरा

अर पाण चढावण री खिप्पत करता हा । बिजोळिया आन्दोलन रा करता धरता विजयसिंघ पथिक राजा-जागीरदार रै जुलमा सामी पग रोपण सारु लोगा नै संगठित करण मे लागोडा हा। आगला दस बरसा मे जयनारायण व्यास सरीसा दाठीक अर सचवाया राजनेता लोगा नै चेतावता मान करायो क राजा जमीदार रै जोर जुल्म वाळे जमानै रा गूदड सवटीज चुका है। वा जागीरी रै सफायै अर रियासता मे खुदमुख्तार सासन सारु हेलो पाडियो। व्यासजी रै हेलै सगळी रियासता रै लोक आन्दोलना री जडां नै पक्कावट पकडावण री गरज साजी।

जोधपुर (मारवाड़)

20 वी सदी रै तीजे दसक मे मारवाड में राठोडी धू सा बाजता हा। जोधपुर महाराजा उम्मेदसिंघ साव काचा मोटियार हा वानै राज रै कामा री को सुजरवो नी हो। राज री राच्छा कस्मीरी बामण पडत सुखदेव प्रसाद रै हाथा मे ही। सुखदेव प्रसाद जूनकी वाता री खास वळ्ळ र सुधार री बात सुणतां ई नाक मे सळ घालै। मारवाड री जनता री हालत घणीज निवळी। 1921 ई० मे लोगा री हालत मे सुधार सारु मारवाड हितकरणी सभा थरपीजी। जयनारायण व्यास अर आनन्दराज सुराणा इण रा खास मेम्बर। मारवाड रै मानखै री जूण सुधारणी इण सस्था री मसा। मारवाड हितकरणी सभा री देख रेख मे केई छोटा-मोटा जन-आन्दोलन हुया। राज मारवाड 29 अक्टूबर, 192१ रा अेक होकम साया करियो इण होकम मुजब पैला जिनावरा री मारवाड सू निकासी माथै जको रोक लगायोडी ही वा खतम करार करी जगी इण पछै मरुमुलक रै मानखै री जीवारी री गाडी गुडावण वाळा डागर-धुराव धडाधड मारवाड सू बारै लजाईजण लागा। मारवाड हितकरणी सभा नै आ बात घणी अखरी सो इण राज रै होकम री विरोध करियो। करता करता आ वात तर तर सवायो तूल पकड र जन आन्दोलन रो रुप धर लियो। मारवाड राज न सेवट आपरो होकम रद्द करणो पडियो। इण आन्दोलन री अगवाई मोटियार जय नारायण व्यास घणी सूझ सावचेती सू करी। आन्दोलन री सफलता सू व्यास घणो जस कमायो अर मारवाडी मिनखा रै मन मे ठावी ठौड बणायली।

इण आन्दोलन पछै हितकरणी सभा सुखदेव प्रसाद रै लार पडी र महाराजा सू उणनै मोकूफ करण री माग करी। इण माथै खोझ र सुखदेव प्रसाद हितकरणी सभा रा खास मेम्बरा नै मारवाड र बार काड दिया। जयनारण व्यास रै घणोज गिरै हुई तरै तरै सू उण री हेटी लगावण री कोसीस करी जी।

व्यास आपरी रम्मत मारवाड रै बारै ब्यावर मे माड दी। 1927 ई० मे 'तरुण र जस्थान नाव रो अखबार क डियो जिणमे 'वर्तमान मारवाड' कालम मे मारवाड राज री पोल खोलीजती। अखबार री मारफत देसी रियासता मे खुदमुख्तार सासन री थरपणा अर जागीरी जल्मा रै खातमै रा मारग

वखाणीजता। व्यास रा काम सेवट रग लाया अर राजस्थान री केई रियसता में आन्दोलन छिड्ग्या । केई सासक इण अखबार सू इत्ता घवरीज्या क आप रै राज मे इण माथै पाबदी लगा दी ।

'अखिल भारतीय देसी राज्य परिसद' री पेलडी इजलास 17 दिसम्बर 1927 रा बवई मे हुयौ । व्यास अर बीजा केई इण मे भाग लेवण पूगा । उठै री कारवाई सू सीख ले र व्यास अर बारा साथिया जोधपुर मे मारवाड प्रजा परिसद' री पेलौ अधिवेसन बुलावण री विचार करियौ । जोर सोर सू त्यारी हूवण लागी । राज हौकम काड र इण इजलास माथै रोव लगा दी । इण माथै रोस खा र व्यास नै बारा साथिया अक आम सभा करी अर राज रै इण होकम री घणीऽ धूड उडाई । इण माथै व्यास, सुराणा, भवरलाल सराफ नै कैद कर नागौर मे अेक खास अदालत मे आ माथै मुकदमो चलायो । फैसलै मे आनै लम्बी अर कडी सजा बोलीजी ।

'मारवाड हितकरणी सभा' री साळ-सभाळ मे नागोर रै फैसलै री खिलाफत हुई । अर लोगा प्रदरसन करियौ । पुलिस प्रदरसन करणवाळा माथ अधाधु द डडा वरसाया अर केया नै कैद कर लिया । इण समै लोगा मे उत्तरदायी सासन सारु घणी इज जोस ही सी आन्दोलन लग्यू जोर पकडतौ ग्यौ ।

जेळ सू छूटा जयनारायण व्यास मारवाड री सीव रै कांकड सू बारै ब्यावर मे मारवाड प्रजा परिसद री अधिवेसन करियौ । चादकरण सारदा इण रा अध्यक्स हा अर इण री खास ठरकाई आ री क खास मिजमान रै रुप में कस्तूरबा गाधी इण मे हिस्सौ लियौ । अधिवेसन मे मारवाड रै साथै ई राजस्थान री बीजी रियसता रा कार्यकर्त्ता ई हिस्सौ लियौ । इण समै जागीर प्रथा मे सुधार, लोगा र चुणियोडी नगरपालिकावा, व्यवस्थापिका सभा अर भासण, सभा करण आद री छूट जेडा महताउ मुद्दा बाबत प्रस्ताव पास हुया ।

1931 सू 1939 ताई मारवाड री समस्यावा नै ल अर जन आन्दोलना सू राजनीतिक जन चेतना जगाईजी । राज कानो सू दमनकारी नीति अपनाइजी । मारवाड यूथ लीग, मारवाड प्रजा मडल, नागरिक रक्सक समिति, बाल भारत सभा जेडी सस्थावा वणी अर गैरकानूनी करार करीजी । इण गत री सस्थावा री अगवाई अचलेस्वर प्रसाद सरमा, छगनराज चौपासनीवाला, मानमल जैन, भवरलाल सराफ, पुरुसोतम प्रसाद नयर रणछोडदास गट्टानी जेडा केई आजादी रै आगीवाना करी । आनै जेळ मे घाल भात भात रा जुलम ई करीज्या । जयनारायण व्यास मारवाड र बारै रिया जद ई मारवाड री राजनीतिक हळगळ सू पूरो तर जुडियोडा रिया । असल में मारवाड रा घणकरी कारवाई व्यास री सल्लासूत मुजब इज हूवती । धकै आवता व्यास रै मारवाड मे पग धरण माथ ई पाबदी लगाईजगी ।

1938 रै हरिपुर अधिवेसन मे इंडियन नेसनल कांग्रेस देसी राज्या नै ई आपरै दायरै मे लै लिया। इण सू देसी रजवाडा रै जन आन्दोलना मैं नवी फुडती सचरी। देसी सरकारा थोडो हडबडीजी अर पंना री अणूताई अर करडाण मे कमी कर थोडी उदार नीति अपणाई। मारवाड मे 1938 मे लोक परिसद री थरपणा हुगी। इण री खास मसा आ ही क मारवाड मे महाराजा री छत्तर छीया रै हेटै उत्तरदायी सासन थरपीजै। व्यास नै मारवाड मे आवण री छूट मिळगी। मारवाड मे जन आन्दोलन री बागडोर व्यास रै हाथा मे पूगगी।

बीकानेर

बीकानेर रा महाराजा गगासिंघ घणा इज निरकुस अर स्वेच्छाचारी हा। वारौ सासन मध्यकालीन सासन रौ खरीखो नमूनो व्है ज्यू हौ। दमन, उत्पीडन, देस निकाळा अर सोसण अनियै सासन री नोति रा खास पावा बीकानेर मे प्रजै कारगर हा। राज मे चौफेर ठाव रा री ठरकी जोरा माथै ही। महात्मा गाधी री जय बोलणो ई अपराध हौ अर इण माथै इज सजा हुजावती। राज मे खादी भडार ताई नी खोलीज सकतो। राजनीतिक सगठन तो आगो मजूरा क करसा रौ ई कोई सगठन नी हौ। सामाजिक सुधार अर सिक्सा र बधापै री नीत सू 1912 ई॰ मे चुरु मे स्वामी गोपालदास 'सर्वहितकारिणी सभा' री थरपणा करी अर 1920 मे आवता बीकानेर मे 'सद्विद्याप्रचारनी सस्था' थरपीजी। राज आ माथै ई करडी निजर राखतो अर राज रा सैसू इणा री पूरी टोह राखता। असल मे कोई नागरिक अधिकारा क आजादी सारु आवाज उठावण री हालत मे नी हौ। सभावा, भासणा, अखबारा अर पोथिया माथै घणी पाबदिया लागोडी ही।

सत्यनारायण सराफ, खूबराम सराफ अर वारा साथिया बीकानेर राज री निरकुसता अर जनता माथै हूवणवाळा जुल्मा री भडो फोडियो। इण बाबत सातरा लेख दिल्ली रै 'प्रिसली इण्डिया', रियासत, अर अजमेर रै 'त्यागभूमि' नाव रै अखवारा मे छपवाया। इण गत राज विरोधी लेख छपीजण सू बीकानेर सरकार बीखनागो। 1931 मे लदन मे गोलमेज सम्मेलन री वेळा व्यापन बेंटीज्या जिणमे बीकानेर महाराजा गगासिंघ री अणूताई अर राज रै कारिंदा री आपाधापी अर अत्याचारा रा भडा फोडीज्या इण सम्मेलन मे महाराजा गगासिंघ खुदोखुद मौजूद हा।

लदन सू झाळ झाळ छूटोडा गंगासिंघ बीकानेर आवता पाण दमनचक्र चलायौ। सत्यनारायण सराफ न कद कर लियो। उण रा साथी खूबराम स्वामी गोपालदास चदनमल, बदरी प्रसाद इत्याद ई पकडीज ग्या। बिना मुकदमा चलाया सगळा नै जेळा मे वद राखोया अर केई कुपोता करीजी। सेवट वा माथै राजद्रोह रै मुकदमा रा नाटक रचीज्या अर कडी सजावा बोलोजी। इण

आजादी रै आगीवानां साथै ढांढां जेड़ौ बरताव हुयौ। इण सूं बीकानेर में कैई बरसां तांई ग्रेडी घबराहठ फैली क राजनीतिक हलगळ रै सोपौ पड़ सन्नाटौ छा ग्यौ। अठै तांई क प्रजामंडल री आन्दोलन ई बीकानेर में घणौ मोड़ौ ठेट 1940 ई० में सरु हुयौ।

मेवाड़ (उदयपुर)

1922 ई० में इज ए. जी. जी. हालैंड री पंचायती सूं बिजोळिया ठिकाणै अर उठै रै करसां री पंचायतां बिचै समझौतौ हुयौ। पण ठिकाणै अर मेवाड़ राज री मांयली मंसा इण समझौतै माथै अमल करण री भवै ई नी ही। 1922 सूं 1926 तांई करसा पंचायतां इण फैसलै नै सावळ लागू करावण सारू आफळियां खायबौ करी। नेठाव सूं ठिकाणै अर मेवाड़ सरकार कनै किसान पंचायता आवेदन मेलण लागी पण ठिकाणै इणां माथै चिन्योक गिनार ई नी करियौ। इण बिचै बिजोळिया राव रौ ब्यांव हुयौ। धडेरां सूं चालती रीत मुजब करसा राव नै गोठ री नेतौ दियौ। राव री मंसा ही क करसा पैला दाईं ब्यांव री बेगार कबूल करै। करसा बेगार नी देवण री धार राखी ही। इण हालत में राव गोठ रौ नेतौ कीकर अंगेजती। राव रै नटिया खासौ कोतकरासौ हुयौ। माणिक्यलाल वर्मा अर साधु सीतारामदास करसां नै बेगार नी देवण सारू भड़कावण रै तोमत में गिरफदार हुया पण सेवट सावूत नी मिळण सूं वानै छोडणा पड़िया।

1923 सूं 1926 तांई कदैई काळ तौ कदैई अणूतौ मेह, कदैई सूखौ तौ कदैई रोळी (अणूती सी, ठार) पडण सूं बिजोळिया में फसलां खतम हुगी। करसा लेणै में कळीज ग्या। इण आफत री बेळा करसा जमी माथै लागण वाळै टैक्स में छूट री चावना राखण लागा। ठिकाणौ छूट भवै ई नी करण माथै तुळियोड़ौ इण बिचै जमी रौ नवौ बंदोबस्त हू'र टैक्स पैला करता ई घणा बधाईज ग्या। करसां टैक्स कम करावण सारू घणाई हाथ पग पटकिया अर आफळिया खाई पण की कारी नी लागी। काया हुयोड़ा करसां 1927 ई० में जमीनां छोड दी। ठिकाणौ जाणै, बाटां इज जोवतौ व्है ज्यूं तुरत फुरत इण जमीनां री लिलामी बोली लगा'र बीजां नै बेच दी। बिना जमीं रै करसा री हालत तर तर पतळी पडतीगी अर कडाका काढण री नौबत आय पूगी। इण अबखी बेळा माणिक्यलाल वर्मा फेरू करसां रौ पल्लौ पकडियौ। सेठ जमनालाल बजाज अर हरिभाऊ उपाध्याय री मदद सूं वर्मा इण बात री खप्पत करी क वैधानिक तरीका सूं करसां नै वांरी जमीना पाछी मिळ जावै। हरिभाऊ अर मेवाड़ रै राजस्व अफसर ट्रेंच रै बिचै समझौतौ हुयौ क ठिकाणौ 1922 वाळै करारनामै माथै अमल करैला अर करसां नै वांरी जमीनां पाछी दिरीज जावैला।

कितांई थथोपा दिरीज्या पण जमीना पाछी नी दिरीजी। दौ बरसां तांई करसा जीव काठौ करियोड़ा देखबौ करिया क दूजा लोग वांरी कदीमी जमीनां

जोतै है सेवट 1931 मे सागै ग्राखा तीज रै दिन माणिक्यलाल वर्मा री ग्रगवाई मे करसा सत्याग्रह करियौ। भाख फाटा कोई चारेक सौ करसा ग्राप ग्राप री जमीं मे हळ खडणा सरु कर दिया। मेवाडो फौज ग्रर ठिकाणै री पुलिस पूग ग्रर साव छडा करसा नै साचा जनराया। माणिक्यलाल वर्मा ग्रर करसा मे चाळीसेक खास टोकली कमेडी हा जिणा रै हथकडिया बेडिया जड'र जेळ मे बद कर दिया। पछै इणा नै करडी सजावा हुई। उण बेळा मेवाड राज करसा माथै ग्रणूता इज जुल्म करिया।

वर्मा रै पकडीज्या पछै हरिभाऊ ग्रान्दोलन री बाग डोर समाळी। वौ ग्राप बिजोळिया नी जा सकतौ हो क्यू क उण रै मेवाड मे बडण माथै रोक लागोडी ही। सौ उण दुर्गाप्रसाद चौधरी, ग्राकारलाल ग्रर ग्रचलेस्वर प्रसाद नै बिजोलिया मेलिया। ठिकाणै रै गुरगां ग्रारी ई साची धुनाई करी ग्रर मारकूट नै मेवाड रै काकड रै बारै काड दिया।

हरिभाऊ करसा माथै हुवण वाळै जोर जुलम कानी महात्मा गाधी रौ ध्यान दिरायौ। सेवट जमनालाल वजाज बिच पड ग्रर मेवाड राज सू समझौतौ करायौ। सत्याग्रह रुक ग्यौ। करसा न वारी जमी पाछी मिळण री ग्रास बधी। इण समझौत पछै ई मेवाड राज र ठिकाणै री कुटळाई सू घणी मोडी करसा नै धारी जमीना नीठा मिळी।

बिजोळिया ग्रान्दोलन री प्रेरणा सू 8 जुलाई 1932 रा उदयपुर मे टेक्स री ग्रापा धापी रै खिलाफ जनता जबरदस्त प्रदर्सन करियौ। मुसाहिब ग्राला पडत सुखदेव प्रसाद ग्रर राज रा केई मोटा बईमान ग्रफसरा न मोकूफ करण री माग करीजी। मेवाड राज नरमाई सू बात करण री बजाय लाठाई ग्राळी नीति रौ ग्रासरौ लियौ। लोगा माथै जबरदस्त डडा बरसिया ग्रर गोळिया चली। कोई पचास जणा लोईझाण हुया ग्रर तीस जणा गिरफदार हुया। बात घणी बिगडती दीसी जद सेवट महाराणा लोगा र नेतावा सू बातचीत कर वारी सिकायता माथै वाजब कारवाई करण री भरोसौ दिरायौ।

मेवाड राज मे 1932 सू 1938 ताई कदेई कदास नागरिक ग्रधिकारा सारु प्रदर्सन हुयबौ इज करिया पण जोग नेतृत्व री कमी सू कर न घणकरा पार नी पड सकिया। 1838 मे माणिक्यलाल वर्मा ग्रर वारा साथिया मेवाड मे 'प्रजा मडल' रो थरपणा करी। राज इण न गरकानूनी करार कर दी ग्रर माणिक्यलाल बर्मा न रमेसचन्द्र व्यास नै मेवाड राज सू बारै निकळण रा होकम दे दिया भूरेलाल नै गिरफदार कर लियौ। इण हालत मे प्रजा मडल 4 ग्रक्टूबर 1938 रा 'सविनय ग्रवग्या ग्रान्दोलन सरु करियौ। वेगोई ग्रो ग्रान्दोलन मेवाड रा केई इलाका मे फैल ग्यौ। राज फरु दमनचक्र चलायो। भासण, सभा ग्रर ग्रखबारा माथै रोक लागी। पण सत्याग्राहिया री टोळिया रियासत रै कानून नै तोड ग्रर 'प्रजा मडल जिंदाबाद' नारा लगा लगा ग्रर गिरफदार हूयबौ करी।

2 फरवरी 1933 रा माणिक्यलाल वर्मा आप माथै लागोडी पावदी नै तोड अर मेवाड मे वडियौ। जहाजपुर रै पागती वणनै मेवाड पुळिस पकड लियौ। अेक बरस री करडी सजा बोलीजो सत्याग्रह लगू हूवबो करियौ। पछै 3 मार्च 1939 रा महात्मा गांधी री मसा मुजब आन्दोलन खतम करीज्यौ। थोडा दिना पछै मेवाड राज प्रजामंडल नै मान्यता द दी इण पछ प्रजामंडल नागरिक अधिकारा अर उत्तरदाई सासन सारु लगू पचतो रियौ।

कोटा

जनता री सिवायता महाराव अर महकमा खास ताई पुगावण री मसा सू 1918ई० मे कोटा मे प्रजा प्रतिनिधि सभा री थरपणा हुई होळै होळै इण रै मेम्बरा री गिणती वधबो करी अर मिनखा विच घणी चावी हूवण लागी। इण समै भारत में विदेसी माल नै सुगावण री बात जोर पकडियोडी ही। इण सू सीख लै अर प्रजा प्रतिनिधि सभा ई लोगा न विदेसी माल रै ठोकर ठोक अर स्वदेसी माल, खादी रा गावा अर टोपी सारु हेलो करियौ। इण कारवाई सू कोटा सरकार बिडगी अर सभा री कारवाई माथै करडी निजर राखण लागी। सार्वजनिक सुरक्सा कानून, राजद्रोह, सभा अधिनियम अर सार्वजनिक समाज रजिस्ट्री अधिनियम जेडा कानून वणिया जिण सू नगरिकां री आजादी माथै रोक लगाईजी। प्रजा प्रतिनिधि सभा माथै रोक लगाईजगी।

1926 ई० मे कोटा मे 'हाडोती प्रजा मडल वण ग्यौ। धक आवता इण रौ नाव वदळीज अर कोटा राज्य प्रजा मडल' धरीज ग्यौ। 15 दिसम्बर 1931 रा प्रजामडल कोटा रै बोपारिया नै विदेसी माल री विणज-बोपार नी करण री अरज करी। इण दिस मे खासी सफलता ई मिळी। विदेसी माल न सुगावण सारु जन मत त्यार करण रै सिवाय प्रजा मडल की खास गिणावणजोग काम नी करियौ। 1939 ई० ताई प्रजा मडल कोटा रै लोगा विचै खास चावौ नी हू सकियौ।

जयपुर

राजस्थान रा बीजा रजवाडा दाई राजा री लाठाई अर आपाधापी सू लोगा मे नाराजगी ही। 1 सितम्बर, 1927 रा जयपुर मे हजारा लोग भेळा हू'र राज रै लगायोड नव टेक्स रै खिलाफ प्रदर्सन करियौ। इण बेळा लोगा री मजमों बिखेरण सारु पुळिस गाळिया चलाई जिण सू अक जणो सागै जागा इज सहीद हुग्यौ। ब्रिटिस रेजिडट सगळै स्हैर मे फौजा तनात करदी। दूजै दिन अक आम सभा हुई जिणमे पुळिस री जास्ती री जाच करावण री माग करीजी। इण वात माथै ई जोर दिरीज्यौ क सासन मे ई सुधार करिया जावै। जयपुर स्हैर मे लगू पाच दिना ताई हडताळ रौ जोर रियौ। सेवट रेजिडट रै भरोसौ दिराया लोगा रौ उफाण ठडौ पडियौ।

5 अप्रेल 1931 ई० रा जयपुर स्हैर मे 'मोतीलाल दिवस' मनाईज्यो। जयपुर सरकार इण माथै भुटगी। इण मे भाग लेवण वाळा खादी भडार रा गुलाबचद चोधरी, कुदनलाल अर किसोरसिंघ नै पकड र करडी सजावा बोलदी। बीजा लोगा साथै ई अणू ताई हुई जिणसू सगळा खळ बिचळ हुग्या अर घकला सात बरसा ताई जयपुर मे राजनीतिक हळगळ साव ठडी पडगी।

1937 ई० मे राजनीतिक कार्यकर्ता पाछा भेळा हुया अर 'जयपुर प्रजा मडल' री थरपणा हुई। इण री खास मसा खुदमुख्तार सासन अर नागरिक अधिकार हासल करणो ही। प्रजामडल रै जरियै राज्य सरकार नै साफ चेतावणी दे दी क रुढीवादी अर दमनकारी नीति तज न समै मुजब लोगा सू मेळ मिळाप री नीति अपनावै। आ ई माग करीजो क विधान सभा री थरपणा व्है अर लोगा नै भासण लिखण अर सभा करण री छूट मिळै। सरकार इण मागा नै ठुकरा दी जद प्रजामडल सत्याग्रह रो बिगुल बजायो। जयपुर सरकार ठोक पीज वाळी नीति रौ आसरौ लियो। रातोरात प्रजामडल रा खास खास लोग गिरफदार करीज्या। इणा मे होरालाल सास्त्री चिरजोलाल अग्रवाल, कपूरचन्द पाटणी, हरीसचन्द्र सरमा बीजा भेळा हा। जमनालाल बजाज रै जयपुर मे पग घरण माथै रोक लागोडी ही सो वै इण रोक नै तोडण सारु पकडीज ग्या। आरै पकडीजिया ई आन्दोलन धीमों नी पडियो अर नित नवा आन्दोलनकारी जेळा मे ठूसीजण लागा। साची धमचक मचियोडी ही अर गाधीजी सत्याग्रह पाछौ लेवण री सल्ला दे दी। थोडा महना पछै प्रजा मडल रा नेता, जेळा सू रिहा करीज ग्या। जमनालाल बजाज ई छूटग्या। प्रजामडल री सरकार सू समभोतो हुग्यो। जनता नै राजनीतिक अधिकार मिळ ग्या अर प्रजामडल नै मान्यता मिळगी। इण पछै प्रजामडल नित सवाई लाठाई पकडतीजगी।

अलवर

अलवर महाराजा निरकुस हुवण रै साथै अधाधुध खर्चाळू अणूतै इज पोलै हाथ रो मुगल बादसा दाई साही ठाठ सू रैवणो उणरो खास सौक। सौ उणरै खजानै रा बाया हर घडी बोलियोडा इज रैवता। महाराजा आप री बसी माथै नवा नवा टेक्स लगा राखिया हा। इणा टाळ 1925 रै भूमि बदोबस्त मुजब करसा माथ पचास फीसदी टेक्स ठोकीज्योडो हो। अलवर रै बनसूर अर गाजी का थाना रा करसा भूमि बदोबस्त रै नाव माथ लगायोडै टेक्सा रो विरोध करियो। महाराजा इण माथ को गिनार ई नी करियो जद करसा रेजिडट कनै सिकायत करी। महाराजा जयदेवसिंघ इण सिकायत सू घणा इज चिड ग्या। 14 मई 1925 रा कास्तकार आगै री कारवाई माथै विचार करण रै मतै सू नीमूचाना, गाव मे भेळा हुया। उण समै वख्तरवद कसियोडी राज री कडाजूड फौज ऊठै पूगो अर निहत्थै करसा माथै गोळिया चलावणी सरु करदी। पाच बीसी रै ख़ेगै टग करसा ढिगली हुग्या अर इण सू केई थोक घणा घायल हुया। गाव

रै माग लगादी जिणसूं सगळो गांव बळ'र भसम हुयो। सगळै देस में इण हत्याकांड री घणीज धूड़ उडाईजी। अलवर महाराजा माथै इण री की असर नीं पड़ियो। 1927-28 में आधा दर्जन अेड़ा अखबारां माथै रोक लगाईजी जिणां में सरकार रा काचड़ा हुवता हा। जे किणी मिनख कनै पाबंदी लागोड़ो अखबार बरामद हुवतो तो उण माथै पांच हजार रिपिया डंड रा ठोकोजता। इण गत अलवर में घणीज अणूताई हुई।

1932 ई० में मेवात रा मेवातियां राज रो टेक्स अर पढ़ाई री नीति रो विरोध करियो। थोड़ा दिनां में इण मेवातियां रो आन्दोलन भयंकर रुप लै लियो। मेवातियां री मदद में अंगरेजी राज रै बीजै इलाकां रै मुसलमानां रा झुंड रा झुंड आवण लागा। वां माथै काबू पावणो अलवर राज रै बूतै रै बारलो बात हुगी। सेवट महाराजा अंगरेजां री मदद मांगी। ब्रिटिस फौज रै आयां मेवातियां नै नीठा काबू करिया। पण इण सूं अलवर राज में ब्रिटिस सरकार रो दबदबो जमग्यो अर सेवट राजपाट छोड'र महाराजा नै इग्लंड भग्गू बणणो पड़ियो।

अक्टूबर 1937 ई० में अकर फेर प्रसासन में सुधार सारु अलवर में आन्दोलन हुयो। ठौड़ ठौड़ आम सभावां हुई अर सुधार री मांग करीजी। 1938 में प्रजा मंडल री थरपणा ई हुगी। अलवर सरकार लक्समण स्वरुप त्रिपाठी, हरनारायण सरमा इत्याद अन नेतावां नै पकड़ अर करड़ी सजावां बोलदी। हरिभाऊ उपाध्याय आन्दोलन री जाणकारी सारु अलवर पूग अर कान्ग्रेस प्रेसिडेंट नै बीचबचाव करण री सुपारस करी। इण बेळा 1939 में दूजो महाजुद्ध छिड़ण सूं आन्दोलन मत्तैई ठंडो पड़ग्यो।

भरतपुर :—

बीसवीं सदी रै तीजै दसक री सरुवात में जमीं माथै अणूतै लगान सूं करसै करसा घणा इज भीमरियोड़ा हा। राज री दमन आळी नीति सूं कित्ताई गांव रा गांव उजड़ ग्या। फोरै बंदोबस्त सूं राज लेणै सूं किंड़ोज्योड़ो हो अर आर्थिक दीठ सूं राज रा भट्टा बेठोड़ा हा। चौफेर गड़बड़ सड़बड़ हुयोड़ी ही। इण राफा-रोळ में फरवरी 1928 में ब्रिटिस सरकार भरतपुर में मेकेंजी (डंकन्जी) ने दीवान बणायो अर महाराजा नै इण बात सारु दबायो क प्रसासन रा अधिकार दीवान रै सुपरत करदै। मेकेंजी मत्तोमत्तै प्रसासन रा काम करण लागो। भरतपुर में राजनीतिक तणाव वधण लागो। दीवान री दमननीति, पुलिस रा जुलम अर मौलिक अधिकारां माथै रोक री वजै सूं नवम्बर 1928 मे 'भरतपुर राज्य प्रजा संघ' री थरपणा हुई। आ बात तेवड़ीजी क राजपूताना री 'देसी राज्य परिसद' रो इजलास भरतपुर में करियो जावै। अंगरेज, दीवान रै राज में नित वधती राजनीतिक हळगळ सूं धपळका उठण लागा। उण भरतपुर राज्य प्रजा सघ रै सचिव देसराज नै गिरफदार कर लियो अर अध्यक्स, गोपीलाल यादव रै नांव रो

गिरफदारी वारंट काड दियो । गयाप्रसाद, लाला गंगासहाय इत्याद रै घरां रा सभाळा लिरीज्या । राज रै खिलाफ भासण देवण रो तोमत घर केई जणा हकनाक कैद करीज्या । जुल्म रा कोडा अणुता इज बरसण लागा जद सेवट जनता दीवान नै हटावण री माग करी । 'अखिल भारतीय किसान सभा' भरतपुर मे दीवान रै अडखजा अर लोगा माथै उण रै जुल्मा सामी ब्रिटिस सरकार अर वायसराय रो ध्यान खीचियो । इण गत भरतपुर मे धीमै धीमै जन आन्दोलन हुयबो करियो ।

भरतपुर मे अणूताई सू उठै रा उत्माही मोटियार आगरा, रेवाडी अर भरतपुर मे छीण छीण बिखर ग्या । इण तीनू ठोडा काग्रस मडल री थरपणा री लप्पत करीजी । भरतपुर रा केई मोटियार रेल्वै टेसण माथै पडत जवाहरलाल नेहरु सू मिळिया । नेहरुजी री प्रेरणा सू उणा 1937 मे 'भरतपुर काग्रस मडल' थरपियो । भरतपुर नै राजनीतिक धुकधुकी छूटी । वारै गयोडा मोटियार पाछा बावडिया । नित बधती राजनीतिक हळगळ माथै खार खावतै इण वेळा रै अगरेज दीवान मेजर हेकाक केई नेतावा र घरा री झडतिया लिरवाई अर गोकुलजी वर्मा नै कैद कर लिया । काग्रेस मडल री राजनीतिक उखेड पछाड माथै 1937 रा जान्ना फोजदारी कानून बणियो । इण कानून राज री सगळी सस्थावा री रजिस्ट्रेसन जरुरी कर दियो । लोगा इण कानून नै 'काळो कानून' कह्यो ।

चाकरसाही रै जुल्मा सू मोटियार घणा इज ग्वार खायोडा हा । 4 मार्च 1938 रा इज जुगलकिसोर चतुर्वेदी रै घरै रेवाडी मे 'भरतपुर राज्य प्रजा मडल' थरपीज ग्यो । भरतपुर मे प्रजा मडल रो रुप नित सवायो निखरण लागो । लोगा गाव गाव मे फिर फिर नै सगठन री मसा चावी करी । भरतपुर रै अगरेज प्रसासक प्रजामडल नै गैर कानूनी गिणी क्यू क इण री रजिस्ट्रेसन हुयोडी नीं ही । लोगा माथै इण री सभावा मे भाग नी लेवण सारु पाबदी लगा दी । आम सभावा, गैर इलाका रा लोगा रै भासण माथै ई रोक लागगी । पण इण कारवाई सू प्रजा मडल री नाठ-दौड मे की कमी पेसी नी आई ।

प्रजामडल सरकार सू इण मुजब माग करी :—

(1) भरतपुर राज प्रजामडल री रजिस्ट्रेसन करै ।
(2) महाराजा री छत्तर छीया मे उत्तरदायी सासन थरपीजै ।
(3) काळै कानून नै रद्द करै ।
(4) भासण लेखन माथै लागोडी पाबदी हूटै ।
(5) सीमा रो टेक्स करसा सू नी वसूलीजै ।

मागा नी मानिया 'सविनय अवग्या आन्दोलन' री घुडकी ई पिला दी । राज मागा माथै की गिनार नी करियो जद अप्रल 1939 रा आन्दोलन छिडियो । सत्याग्राहिया रा जत्था रा जत्था गिरफदार हूवण लागा । आम सभावा हुई जठै

पुळिस लाठिया वरसावती। इण आन्दोलन में लुगाया ई हिस्सो लियो अर केई जणिया कंद ई हुई। आन्दोलन भरतपुर ताई बधियोडो नी रियो अर डीग, बयाना इत्याद मे ई लाय लगगी। प्रजामडल री अेक रपोट मुजब 600 जणा गिरफदार हुया। 6 मइना ताई आन्दोलन चालियो। सेवट झख मार नै सरकार नै समझोतो करणो पडियो। अबै 'प्रजामडल' नै 'प्रजा परिसद' रै नवै नावसू राज्य री मान्यता मिळगी। जनता नै लिखण भासण री छूट मिळगी। उत्तर-दायी सासन तो नी मिळियो पण उण सारु मारग खुल ग्यो। आन्दोलन खासकर अगरेज प्रसासक रै खिलाप हो, आवतै अेक बरस में वो हरमेस सारु जातो रियो। 22 अक्टूबर, 1939 रै दिन महाराजा सवाई बृजेन्द्रसिघ राज री करता धरता बण ग्यो। लारला 12 बरसा सू करमा रा जिक नेता अठी उठी भटकता फिरता वै सगळा पाछा आय पूगा। सीमा टेक्स कम हुग्यो। राजस्थान रै ऊगूणै भरतपुर राज मे प्रजामडल रो पेलो सफन आन्दोलन हो। ओ आन्दालन कोरो गुदमुल्लार सासन अर नागरिक अधिकारा रो मसा सू इज नी हुयो, अगरेजा नै भरतपुर सू बारै काडणो ई इण आन्दोलन रो खास मुद्दो हो।

सेखावाटी

सितम्बर 1924 में सीकर मे करसा माथै को नवा टेक्स लागा जिण सू लोगा रै जीव मे गिरगिराट सरु हुई। सेवट करसा नवो टेक्स खतम करावण माथै तुल आन्दोलन छेड दियो। रामनारायण चौधरी ठोड ठोड फिर नै लोगा न चेतावण रा कळाप करिया अर सीकर ठिकाणै रै साथ ज्यपुर राज नै ई आडै हाथा लियो। इण माथै खार खा र जयपुर सरकार रामनारायण चौधरी नै जयपुर राज रै काकड सू बारै काडण रो होकम साया कर दियो। पण करसा रो आन्दोलन लगू जोर पकडतो इज ग्यो। सेवट धवरीज र मई 1925 मे सीकर ठिकाणै करसा सू समझानो कर टक्स मे खासी छूट करदी।

1925 आळो समझोतो साव पाप रो घोप इज निवळियो। 1927 मे ठिकाणै टेक्स पाछा पला सू बिवणा कर दिया। करसा फेरु विरोध करण री धारलो। अेक ग्राम सभा कर नै सगळा तेवडलो क बधियोडो दर सू टेक्स भवै ई नी भरेला। ठिकाणै घणा ई पग पटकिया अर जुलम करिया पण करसा टस ऊ मस नी हुया। आन्दालन तर तर जोर पकडतो ग्यो। सेखावटी रा करसा नै चेता वामै अेकै रा भाव निपजा अर आन्दोलन माथ उतारु करण मे घासीराम रो भेळ घणो भारी। पचेरी रा पडत तारकेस्वर सरमा 1929 मे हस्तलिखित अखबार सू करसा री जीव बधायो अर वारी करणी नै चावी करण रा कळाप करिया। तारकेस्वरजी दाई हरलालसिघ र नेतरामसिघ गोरीर सेखावटी रै जागीरदारा री निरकुसता अर अत्याचारा रै सामी पग रोपण सारु करसा नै त्यार करण रा घणा जतन करिया।

1932 ई० मे फ़ू फ़नू में 'अखिल भारतीय जाट सभा' री इजलास हुयो - जिणसूं सेखावटी रै किसान आन्दोलन नैं घणो बल मिळियो। करसा मे भणाई - री रीत नै जोर पकडावण रो मसा सूं फ़ू फ़नू मे 'जाट बोडिंग' री थरपणा हुई। भ्रो बोडिंग करसां रै नेतावा री बैठकां भ्रर आपसरी सल्लासूत करण रो जोग जागा बण ग्यो।

भरतपुर रै करसा रा नेता देसराज सेखावटी पूग र उठै करसा रै आन्दोलन - री राछा आपरै जोग हाथा मे सभाळली। वारी करणी सू 1935 मे सीकर मे 'जाट प्रजापति महायग्य' री तजवीज विचारीजी। चौधरी घासीराम, नेतरामसिंघ गोरीर भ्रर बीजा करमा रा आगीवान इण 'यग्य' नैं सफल बणावण में जुत ग्या। गाव-गाव, ढाणी-ढाणी फिर फिर नैं आ करमा नैं इण यग्य' मे भिळण सारु बिडदाया। 'यग्य' रै नाव माये जागीरी जुल्मा रैं विरोध मे करसा नैं अेकजुट करण रो भ्रो जबरदस्त आयोजन हो। कोई 80,000 रं लगै टगै कास्तकार इण 'यग्य' मे भेळा हया। इण सू करसा रैं आन्दोलन नैं घणी लाठाई मिळी। सेवट जमनालाल बजाज बिचै पड ममफ़ोतो करायो। जमी री पेमाइस नवैं सिरैं हुई, चोथाडो टेक्स कम हुयो भ्रर पणकरा लोग जेळा सू छूटा। सगळी सुलै पछै ई देसराज'र तारकेस्वर नै देस निकाळा दिरीज ग्या।

तठा उपरात ई सेखावाटी मे करसा रा छट पुट आन्दोलन हुयबो करिया। इण बिचै सीकर रावराजा भ्रर जयपूर महाराजा मे खट पट हुगी। रावराजा नैं हटा भ्रर केप्टिन वेब नै सीकर री प्रसासक मुकरर कर दियो। इण उखेड पछाड पछै करसा रावराजा रा वळु बण ग्या। खासी खेंचम्ताण हुई। जून 1938 मे 'सीकर प्रजा समिति' कानी सूं 'सीकर दिवस' मनाईज्यो भ्रर आन्दोलनकारिया रावराजा री छत्तर छीया मे न्दयमुख्तार सासन री माग करी। 4 जुलाई रा जयपुर री फौज भ्रर लोगां मे भारी कजियो हुयो जिण मे पाच मिनख मरिया। बात घणीज बिगडण लागी। सेवट जयपुर महाराजा सीकर पूग जनता रै नेतावां सू मिळ मिळाय बानै ठंडा मीठा करिया। रावराजा घणा इज मोळा पड ग्या, महाराजा सू माफी माग र वारै मुकर करियोड प्रसासक नैं सगळी काम सूपण री हामल मरदी।

1939 मे करसा फेरु भीभरिया भ्रर 'भूमि कर' देवण सू नटग्या। वारा नेता तारकेस्वर घासीराम, नेतरामसिंघ पकडीज्या भ्रर भारत सुरक्मा कानून रैं तहत अेकूकं बरस री सजा हुई। इण गत मौजदा सदी रैं तीजैं दसक मे सेखावटी मे करसा रैं आन्दोलना री घणो इज जोर रैयो। अठै रा करसा बीजैं करसा री जोड मे घणा सावचेत हा। सेखावाटी रा आन्दोलन बीजी जागा रैं आन्दोलन-कारिया री जीव बधा'र आन्दोलन री सीख देवण री काम साजियो।

अजमेर

1925 सूं 1929 ई० रै विचै अजमेर में ठरकै सार्थं गिणावण जोग कीं राजनीतिक हळगळ नीं हुई। 1930 में महात्मा गांधी स्वराज्य सारु 'सविनय अवग्या आन्दोलन' चलायो जद अजमेर चेतन हुयौ। ठोड़ ठोड़ आम सभावा हुई, विदेसी गावां रै लांपा लागा, विदेसी दारु, अमल'र गावां री दुकानां माथै धरणा दिरीज्या अर गिरफ्तारियां हुई। गवर्नमेंट कालेज रा छोरा ईइण वेळा आन्दोलन में हिस्सौ लियो। रामनारायण चोधरी, गोकळराव असावा, कृस्णगोपाल गर्ग, बालकृस्ण कौल, मास्टर लछमीनारायण, जमालुदीन मखमूर, चन्द्रभान सरमा इत्याद अजमेर आन्दोलन रा खास दाठीक नेता हा। 1931 में गांधी-इरविन समझौतो हुयां औ आन्दोलन ई मोळौ पड़ ग्यौ।

1931 ई० पछै अजमेर में ज्वाला प्रसाद री आगीवानी में अेक क्रान्तिकारी संगठन चेतन हो। पंलपांत 1932 में अजमेर रै 'चीफ कमिस्नर' री हत्या री विरथा कळाप हुयौ। इण पछै ज्वाला प्रसाद अर वांरा भायला ब्रिटिस वायसराय री बीकानेर जातरा रै मोकै उण नै ठंडो राखण री तजवीजां विचारी। पण पुलिस रै करड़ै जाब्तै सूं तजवीज पार पड़ी कोयनी। 1935 में पुलिस अफसर पी. अे. डोगरा नै मारण री योजना वणी। सिनेमा देख'र आवती वेळा उण माथै गोळी चलाईजी जिण सूं वो सागेड़ो घायल हुयौ। ईण मामलै में ज्वाला प्रसाद अर उण रा साथी पकड़ीज्या। 12 सितम्बर 1935 रा ज्वालाप्रसाद नै दिल्ली जेळ मेल दियो। 1939 में वो दिल्ली जेळ सूं छूट'र अजमेर आयो जद लोगां उण रा वारणा लिया अर जबर स्वागत करियौ।

राजस्थान-रा रजवाड़ां सूं देस भदर-करियोड़ा लोगां रो अजमेर खास ठायो वण ग्यौ। अठै वेठा वै आप आप रा रजवाड़ां रै आन्दोलनां री साळ संभाळ करता। हरिभाऊ उपाध्याय गांधीजी कनै सावरमती आसरम में सत्याग्रह री सीख लीवी। गांधीजी वांनै राजस्थान में सत्याग्रह आन्दोलन री धुणी चेतावण सारु अजमेर मेलिया। अजमेर में रेवतां थकां उपाध्याय राजस्थान रै खुणैं खुणैं में हुवण वाळै जन आन्दोलनां नै घणी आसरो दियो।

प्रजा मंडल अर खुदमुख्तार हकूमत री मांग (1938–1949 ई०)

1938 ई० में इंडियन नेसनल कांग्रेस रै हरिपुर इजलास में आ बात अगेजीजगी क सगळा देसी रजवाड़ा भारत देस रा इज अटूट हिस्सा है। देसी राज्यां में सामाजिक, राजनीति अर आर्थिक आजादी सारु कांग्रेस उत्तीज सजग है जित्ती क भारत रा बीजा अंगरेजी सरकार रै आधीन हिस्सां बाबत है। कांग्रेस री 'पूर्ण स्वराज्य' री मसा समळै देस सारु है अर इण देस में देसी रजवाड़ां ई भेळा है। आजादी हासल करण में देस रै अेकै री पूरो ध्यान राखीजेला। इण गत्र देसी

रजवाडां बाबत कांग्रेस री नीति श्रेक दम साफ ही उणमें किणी गत रै मलगूवें री कठंई की गुंजास नी ही। देसी रजवाडा रै प्रजा मंडला श्रर बीजी राजनीतिक सस्थावां सारु कांग्रेस पूरी सहानुभूति राखती ही। प्रजामंडल मे तो उण री साभेदारी ई ही। कांग्रेस री इण गत री नीति खुलासं खराइजण सूं देसी रजवाडा मे खुदमुख्तार हकूमत सारु श्रबखण वाळा लोगा रा काळजा पूलीजं'र बैंत बैत भर्‌या हुग्या। 1938-39 ई० मे राजस्थान रा घणकरा रजवाडा मे प्रजामंडल श्रर बीजी राजनीतिक सस्थावा थरपीज चुकी ही। श्रा माय सूं घणकरी नैं राज्य सरकारा री मान्यता मिळियोडी ही। इण समैं राजस्थान री नैनी-मोटी सगळी रियासता मे नागरिक श्रधिकारा श्रर खुदमुख्तार हकूमत सारु लडाई छिडी।

जोधपुर (मारवाड़)

मारवाड रै इतिहास मे 1939 री बरस खास गिणावण जोग। जोधपुर सरकार केई चावा लोगा नै भेळा लैं'र सल्लासूत सारु श्रेक कमेटी बणाई। लोक परिसद सारु ई जोधपुर राज री रुख श्रणूतो करडाण वाळो नी हू'र मेळ मिळाप री हुग्यो। जयनारायण व्यास रै मारवाड मे बडण माथै जो पाबदी लागोडी ही वा रद्द करीजगी। फरवरी 1939 मे व्यासजी जोधपुर पूगा परा। वानै 'केन्द्रीय सलाकार समिति' रा मेम्बर नामजद करिया। व्यासजी री श्रगवाई मे 'लोक परिसद' तर तर दाठीकपणो पकडण लगी। मारवाड रै सगळै परगणा मे इण री साखा खोलीजी जिण सूं कर नै श्रठै राजनीतिक कार्यकर्तांश्रा री खासी भली फौज त्यार हुगी।

इण बेळा दूजो विस्व जुद्ध छिड ग्यो। जोधपुर राज श्रगरेजी सरकार नैं हर तरै री मदद देवण माथै तुलियोडी हो। व्यासजी जोधपुर राज री इण धुन री विरोध करियो श्रर 'केन्द्रीय सलाहकार समिति' सूं श्रस्तीफो दे दियो। हमैं वै खुदमुख्तार हकूमत सारु जनमत त्यार करण मे जुत ग्या।

मारवाड मे उण बेळा पूरण सूं ई बत्तो जमी जागीरदारा रै काबू करियोडी ही। जागीरी जनता री हालत घणीज पतळी ही। गरीब गुरबा वेगार सूं दबियोडा हा श्रर जमीदार मतोमतै लाग बाग वसूल करता। नित खेना री वेदखलिया हूवती। 'लोक परिसद सिसकती-बिलखती जागीरी जनता री हालत मे सुधार री खप्पत सरु करी जिण सूं जागीरदार इण सस्था रा वरी बण इण माथै खार खावण लागा।

जयनारायण व्यास री श्रागीवानी मे 'लोक परिसद' श्रेकण कानी खुदमुख्तार हकूमत सारु लोगा री ऊघ उडावण में जुतगी श्रर बीजै कानी जागीरी जुल्मा रै साथै जागीरा रै खातमैं सारु जूझण लागी। जागीरी इलाका मे 'लोक परिसद' रा कारिंदा माथै कित्तोऽ नाथावती हुई। मोठडी ठिकाणैं री पुलिस

स्वामी चैनदास नै चवड़ै धाड़ै भणूती इज कूटियो। इण गत री जोर जबरदस्ती'र ठोक पीज नित कठै न कठै हूवण लागी। 'लोक परिसद' लोगा बिचै घणीज चावी हुगी भर जागा जागा इणनै जस मिळण लागो जद राज रै धपळका ऊठण लागा। सेवट किडकिडिया खावनी जोधपुर सरकार 8 मार्च 1940 रा 'लोक परिसद' नै गैर कानूनी करार करदी। जयनारायण व्यास, भ्रचलेस्वर प्रसाद सरमा, छगनराज चौपासनीवाळा, भ्रभयमल जैन गणेसलाल इत्याद कैद हुया भर मरुस्तेतर मे भ्रागी भ्रागी भौ मे बिखखियोडा सैंठा किला मे बद करीज्या। सरकार रो इण दमनकारी रुख सू जन भ्रान्दोलन चेत ग्यो। गिरफदारिया रो तातो बघ ग्यो। 2 भ्रप्रेल रै दिन मथुरादास माथर री भ्रगवाई मे कोई दस हजार नेडा लोगा री जलूस निवळियो। इण सू फडफडीज र राज री पुळिस सातिपूर्ण जलूस माथै भदाधुद सोट वजाया। मथुरादास माथुर गिरफदार करीज्या। पछै रणछोडदास गट्टाणी ई भ्रपडीज्या। भ्रान्दोलन जोर सोर सू चलियो। लोगा रो जोस तर तर सवायो बधण लागो। चेतियोडी जन सक्ती सामी कुण पग रोप सकै। सेवट सरकार नै 'लोक परिसद' सू समझौतो कर गिरै मिटावण मे इज सार लखायो। 26 जून 1940 रा समझौतो हुग्यो भर व्यास समेत सगळा राजनीतिक कैदी जेळा सू छूटा। जोधपुर स्हैर मे जनता भ्रारा लाडा कोडा वारणा लिया भर भारी स्वागत करियो

मई 1941 मे जोधपुर महाराजा मारवाड मे 'प्रतिनिधि सलाहकार सभा' री थरपणा री भ्रेलान करियो। इण वेळा महाजुद्ध री धा धी जोरों माथै ही भर जागीरदार जुद्ध रा जनना मे तन मन सू चाकरी साजता हा इण सारु वा माथै महाराजा री कळी कळी खुलियोडी। सलाहकार सभा मे जागीरदारा, छुटभाया भर रावराजावा री खास ठावकी जागा मुकर करीजी। इण सभा री गठन इण गत सू तेवडियो क इण मे जमीदारा रो बहुमत हूवतो ई हूवतो। 'लोक परिसद' इण सभा रो विरोध करियो। सरकार जागीरदारा री वळू होज सो जागीरदार मणूसा इज फाटण लागा। वा भ्रापरै मोळै भटकू मालख माथै नी नी जेडा जुलम करणा सरु कर दिया। 'लोक परिसद रा लोगा माथै खार खावता वा साथै ढाढा जेडो सलूक करण लागा। रोडू रै ठाकर चौधरी उमाराम नै भणूती सतायो भर उण रै घर रै लाय लगा भर बाळ इज काढियो। 28 मार्च 1942 रा चडावल मे परिसद रै लोगा माथै सोट वाजिया जिणमै बारै जणा लोईझाण हुया। गू दोज लोक परिसद र भ्रध्यक्स भ्रमरसिंघ माथै लाठिया सू हमलो करीज्यो इण गत घसक री वारदाता नीमाज भर बीजा ठिकाणा मे ई हुई। 'लोक परिसद' री सिकायता माथ सरकार तुस्य बरोबर गिनार ई नी करती।

इण गत तडफा तोडिया र राज कनै सिकायता करिया ई नित हूवण वाळा जुल्मा रै की कारी नी लागी जद लोक परिसद' निरकुस राज सू भिड त री तेवडी। व्यासजी नै 'लोक परिसद रा डिक्टेटर मुकर करिया। उणा भ्रगरेज प्राइम मिनिस्टर री बरखास्तगी र खुदमुख्तार हुकूमत री माग करी। 26 मार्च

1942 रा आन्दोलन छिडियौ। हजारा री गिणती में लोग जलूस सारु भेळा हुया जठै व्यासजी बडो जोसीलौ भासण दियौ। पुळिस मोकै पूग व्यासजी नै गिरफदार करिया। व्यासजी पछै मथुरादास माथुर, चैनदास राधाकुस्ण 'तात' आद लग्गू डिक्टेटर वणता ग्या अर आन्दोलन जोर पकडतौ ग्यौ। इण आन्दोलन में लुगाया ई हिस्सौ लियौ। सईकडा री गिणती मे सत्याग्राही कैद हुया। जोधपुर री जेळ मे सत्याग्राही भूख हडताळ करी। हडताळिया माथै सोटा रा सटीड ऊठिया। व्यासजी समेत कैया रै वटीड लागा। बालमुकद बिस्सा सू पिटाई अर भूख री दोवडी मार सहन हुई कोयनी सो मादो पड ग्यो अर सेवट सफाखानै मे मर इज ग्यौ। बिस्सा री मौत रा समाचार सुणिया अलेखा मानखौ सफाखानै पूगौ। सगळा रै जीव मे अणूती रीस सू ओळू'वा चढण लागा।

इण गत तीन महना आन्दोलन जोरा माथै रियौ। इण बिचै महात्मा गाधी 'अंगरेज भारत छोडो' आन्दोलन छेड दियौ। मारवाड री आन्दोलन आखै भारत रै आन्दोलन साथै जुड'र अेकमेक हुग्यौ। छुटपुट मारधाड रा वाका हूयबौ करिया। जोधपुर रै स्टेडियम सिनेमा मे 17 अक्टूबर 1942 रा बब री भचीड ऊठी। इण पछै 14 अप्रेल 1943 रा सिवाणची दरवाजै रै पागती बब फूटी। बब रै वाकै मे सूरजप्रकास पापा', स्याम सुन्दर व्यास जोरावरमल बोडा इत्याद गिरफदार करीज्या। 'पापा' नै जेळ मे घणीज यातनावा सैन करणी पडी। जोधपुर मे आन्दोलन दो बरसा ताई छोळा चढियोडो रियौ। सेवट 27 मई 1944 रै दिन समझौतौ हुयौ अर राजनीतिक कैदी जेळा सू छूटा।

जेळ सू छूटा पछै जयनारायण व्यास अर वारा साथी पाछा 'लोक परिसद' नै सागेडी लाठाई देवण मे लाग ग्या। वारौ ध्येय मारवाड मे खुदमुख्तार हकूमत री थरपणा करणी हौ। जोधपुर राज मे 'विधान परिसद' बणी पण इण रै विधान मुजब सगळी ताकत महाराजा'र उणरै प्राइम मिनिस्टर रै कब्जे मे ही इण सारु 'लोक परिसद' इण विधान रौ विरोध करियौ।

इण बिचै भारत री राजनीतिक मे जबरदस्त उठक-पठक हुई। केबिनेट मिसन योजना रौ अेलान हुयौ। दिल्ली मे पडत जवाहरलाल नेहरु री अगवाई में अन्तरिम सरकार बणी। 15 अगस्त 1947 रा देस आजाद हुग्यौ। सागै दिन सू इज रजवाडा मे व्रिटिस सत्ता रौ पापौ कट ग्यौ। जोधपुर महाराजा हणवतसिंघ माथै जागीरदारा अर बीजा रुढीवादी लोगा रौ खासो असर हौ। ठिकाणेंदार अवेई नी चावता क मारवाड मे खुदमुख्तार हकूमत थरपीजै। गावा मे करसा माथै जागीरदारा रौ घणौ इज दबदबौ हौ अर केई भात रा अत्याचार हूवता।

13 मार्च 1947 रा डीडवाणा रै पागती डावडा गाव मे 'लोक परिसद' अर 'किसान सभा' रै साझै सू इजलास करण री वात मुकर हुई। उठै घणाई करसा भेळा हुया। लोक परिसद रै नेतावा अर करसा रै उठै पूगा पछै जागीरदार रा लोगा वा माथै हमलौ करियौ। सरकारी लेखै मुजब छै मिनख मरिया पण

'लोक परिसद' रा नेता वतावै क उठै बत्तीस जणा तो सागै जागा इज मरिया। 'लोक परिसद रा नेता मथुरादास माथुर द्वारकाप्रसाद पुरोहित नरसिंघ कछवाह, बसीधर पुरोहित, राधाकृस्ण बोहरा, किसनलाल साह आदि रै गभीर घाव लागा। इण जुल्म री चोफर घणीऽ हुरै दुरै हुई।

जनवरी 1948 सू जयनारायण व्यास अर वारा साथी खुदमुख्तार हकूमत सारु आन्दोलन करण री धार राखी ही, पण पाकिस्तान रै जसलमेर री सीव माथै हमलै सू कर नै आन्दोलन स्थगित करणो पडियो। पछै केन्द्र सरकार जोर दियो जद व्यासजी री अगवाई मे मारवाड मे अेक मिळी जुळी सरकार वणी जिकौ थोडै घणै हेरफेर रै साथै जोधपुर राज रौ राजस्थान मे अकीकरण हुयो जठालग काम धकायो।

बीकानेर

राजस्थान री बीजी रियासता दाई बीकानेर मे ई खुदमुख्तार हकूमत सारु घणो उधम मचियो। इण दिस मे जिको आन्दोलन छिडियो सरकार उणनै कुचलण-मसलण सारु केई दमनकारी साधन अपनाया। 'बीकानेर सुरक्सा कानून' नै अडो करडो कर दियो क किणी राजनीतिक पाल्टी री पोसाक पैरण क उणरो तगमौ (बिल्लौ) लगावणो ई गुना हुय्यो। अप्रेल 1942 मे बीकानेर महाराजा सभा, भासण इत्याद माथै पाबदी लगादी। बीकानेर 'प्रजा मडल' रै अध्यक्स रघुवीर दयाल गोयल री आगीवानी मे 29 जुलाई 1942 खुदमुख्तार हकूमत सारु आन्दोलन छेडण री तिथ मुकर हुई। इण तिथ सू पैला इज आन्दोलन घिसपिस करण रै मत्तै सू रघुवीरदयाल न बीकानेर राज री सीव सू बारै काडण री होकम दे दियो। 26 अगस्त 1944 रा रघुवीरदयाल आप माथ लागोडी पाबदी न तोड अर बीकानेर मे बड ग्यो। रघुवीरदयाल अर उण रा दो भायला गगादास कौसिक अर दाऊलाल गिरफदार हुया। वानै बीकानेर राज बारै काड दिया। बीकानेर राज री मनमानी अर राठोडी रै खिलाफ सगळै राज मे 'विरोध दिवस' मनाईज्यो अर ठौड ठौड बीकानेर रा लोगां सरकार री नाथावती री धूड उडाई।

'बीकानेर प्रजा परिसद री देख रेख मे खुदमुख्तार हकूमत सारु आन्दोलन राज रै घणा तडफा तोडिया ई मोळो नी पडियो। नित गिरफदारिया हुवती। कैदिया नै सतावण री नीत सू नी तो वा कनै अखबार ई पूगता अर नी वारै गन्नै वाळा सू मिळण देवता। सेवट जेळ मे इज राजनीतिक कैदिया भूख हडताल करी। बीकानेर मे घणो इज राजनीतिक तणाव हो गोई लोगा 'नेताजी दिवस' अर 'आजादी दिवस' धूमधाम सू मनाया अर महाराजा सू खुदमुख्तार हकूमत री माग करी।

बीकानेर सरकार दमन माथै उछरियोडी री। मार्च 1946 मे 'प्रेस अधिनियम वणा अर अखबारा माथै कित्तो ई पाबदिया लगाईजी। बीकानेर रै

ठिकाणा मे जमीदारा री ग्रणूतीज धौंस ही। मत्तामत्ती भरै पड़ै ज्यूं ई वै करसा नैलूटता कूटता। मनचाया टेक्स वसूलीजता। रतनगढ तहसील मे कागद रै करसा ग्रणतै टेक्सा रो विरोध करियो। इण माथै भुटर जागीरदार वारा घर लूट लिया ग्रर लुगाया-टाबरा दुरादुर माथै जुल्म करिया। दूधवाखारा रै जागीरदार ई वित्तो ई नाथावती करी। हनुमानसिंघ री ग्रगवाई मे करसा विरोध करियो। हनुमानसिंघ नै ई ग्रणूतो कूटियो, उणरो घर ई लुटीज ग्यो ग्रर लुगाया टाबरा साथै ई ग्रणूताई हुई। इण ग्रणूताई पछै ई हनुमानसिंघ रत्ती भर डिग्यू पिच्यू नी हुयो ग्रर जागीरी जुल्मा री विरोध करबो इज करियो। बीकानेर मे 'प्रजा परिसद' रा मघाराम वेदारनाथ, रघुबीरदयाल गोयल, कुम्भा राम ग्रार्य इत्याद करसा रै ग्रा दोलना री ग्रगवाई करी। उणा जागीरदारा रै जोर जुल्म री खिलाफत करी। वै केई वेळा गिरफतार हुया'र घणी कुपीता भेली। राजगढ, रायसीनगर ग्रर दूधवाखारा मे वडै पैमानै माथै करसा रा ग्रान्दोलन हुया जिण सू बीकानेर राज मे राजनीतिक चेतना फळी फूली ग्रर रास्ट्र भावना री वधापो हुयो। रायसीनगर रै करसा री सिरायत बीरबलसिंघ पुलिस री गोळी री भख बण ग्रजर ग्रमर हुग्यो।

सेवट 31 ग्रगस्त, 1946 रा महाराजा सादूलसिंघ नै ग्रेलान कर भरसो दिरावणो पडियो क राज मे जिम्मेवार हकूमत री थरपणा वेगीज करीजेला। चोफर इण घोसणा सू हरख ग्रर मोज मस्ती वापरगी। राज मे तणाव भसम हुग्यो। महाराजा'र, 'बीकानेर प्रजा परिसद' रा नेतावा बिचै सावळ सल्ला सूत पछै 18 मार्च 1948 रै दिन साझा सरकार बणी। इण सरकार मे जित्ता मेम्बर 'प्रजा परिसद' रा लीरीजग्रा उत्ता र उत्ता महाराजा कानी सू नामजद हुया। थोडा दिना महाराजा ग्रर लोगा रा नुमाइदा बिचै केई मुद्दा माथै खाच ताण वे ई। 30 मार्च 1949 रा राजस्थान सघ बण ग्यो जिणमें बीकानेर ई भिळग्यो।

मेवाड़ (उदयपुर)

3 मार्च 1939 रा महात्मा गाधी री मसा मुजब वारै हेलै माथै प्रजा मडल री सत्याग्रह पाछौ लीरीजग्यो। थोडा दिना पछै मेवाड सरकार राजनीतिक कैदिया नै छोड दिया। पछै मेवाड मे नवा मुसाहिब ग्राला (प्राइम मिनिस्टर) बणिया प्रजा मडल नै राज कानी सू मानता मिळगी। ग्रबै पैलपात उदयपुर मे ई लोग गाधी टोपी पेरण लागा। 26 जनवरी 1940 रा मेवाड मे 'ग्राजादी दिवस' धूम धडाकै सू मनाईज्यो। 1941 ई० मे मेवाड प्रजा मडल री उदयपुर मे पेलडो इजलास हुयो। उण वेळा ग्राचार्य कृपलानी खास मिजमान हा। इण वेळा केई ग्राम सभावा हुई ग्रर खुदमुख्तार हकूमत री माग जोग सोरा सू करीजी। उदयपुर मे खादी री नुमाइस लागी। इण नुमाइस री उद्घाटन विजयलछमी पडत रै हाथा सू हुयो। मेवाड मे सडकै सडकै मिनखा रा ऊध उडी र राजनीतिक हूस देख सरकार थोड़ी चितवगी हुई ग्रर हडबडीज र ग्रेक ग्रेड़ी 'व्यवस्थापिका

सभा' वणावण री अेलान करियो जिण रा घणकरा मेम्बर जनता सू चुणीजला। इण गत मेवाड़ मे खुदमुख्तार हकूमत सारु त्यारी हूवण लागी।

अगस्त 1942 मे ई धमचक मची। 'मेवाड प्रजा मडल' माणिक्य लाल वर्मा री अगवाई मे अगरेजा सू नातो तोड की तल्लो वल्लो नी राखण सारु महाराणा माथे जोर नाखियो। इण बेळा खुदमुख्तार हकूमत री माग ई करीजो। प्रजा मडल री रोळधट सू रिसोज'र सरकार माणिक्यलाल वर्मा मोहनलाल सुखाड़िया, बलवतसिंघ मेहता समेत पन्दरै जणा नै गिरफदार कर लिया। सभा, भासण, जलूस इत्याद माथे ई रोक लगाईजगी। इण वेळा घणा लोक अपडीज्या अर आन्दोलन री झाळा उदयपुर स्हैर सू वारै पूगी अर सगळै मेवाड मे चोफेर धपळका ऊठण लागा। नाथद्वारा, भीलवाडा, चित्तोड, भिंडर, छोटी सादडी अर केई मेवाडी इलाका मे आन्दोलन री ला लागगी। 1944 री जनवरी ताई जबर रोळधट मची। इण वेळा देस री राजनीति मे भारी, भचाभच मचियोडी ही। ब्रिटिस सरकार भारत रा नेतावा नै सत्ता सू पण सारु लल्लू चप्पू सरु करदी ही। अेडै मे मेवाड सरकार ई राजनीतिक कैदिया नै जेळा सू छोड र गिरै मिटाई।

अक्टूबर 1944 मे माणिक्यलाल वर्मा री अध्यक्सता मे प्रजा मडल री वैठक हुई जिणमे मेवाड मे म्यूनिसिपल्टिया अर 'व्यवस्थापिका सभा' फौरन सू पेत्तर बणावण री माग करीजो। सितम्बर 1945 मे प्रजामडल माथै लागाडी रोक हटगी। 1946 ई० मे घणै धूम धडाकै सू उदयपुर मे पडत जवाहरलाल नेहरु री अगवाई मे अखिल भारतीय देसी राज्य प्रजा परिसद री इजलास हुयो। इण सू जिम्मेवार हकूमत री माग विवणी जोर-चोड सू करीजण लागी।

मार्च 1947 मे उदयपुर रा प्राइम मिनिस्टर राघवाचार्य सासन मे थोडा घणा सुधारा री अेलान करियो, पण औ लोगा नै थथापी दे अर बिलमावण री कळाप ही। महाराणा रै निरकुस सासन रै मेल ई नी आई। इण सारु 'प्रजा मडल' इण सुधारा नै सुगा अर इणा रो विरोध करियो। सेवट अगस्त 1947 म देस आजाद हुयो। इण पछै राजस्थान रै रजवाडा री सघ वणियो। उदयपुर इण सघ री रजधान (राजधानी) मुकर हुयो माणिक्यलाल वर्मा री आगीवाना मे इण सघ री केबीनेट बणी। इग्यार मइना पछै इण सघ री राजस्थान मे अमीकरण हुयो।

कोटा

कोटा में जिम्मेवार हकूमत सारु विस्ताई रोळा हुया। 1939 मे 'प्रजा मडल' रै मारफत कोटा म अभिनहरि खुदमुख्तार हकूमत सारु आन्दोलन सरु करियो। 'प्रजा मडल' न लोगा म चानो करण रै मत्तै सू अभिनहरि गाव गाव

में फिर'फिर नै सभावां करी। 1939 में इज मंगरोल में पं० नानूराम सरमा री अध्यक्सता में 'कोटा राज्य प्रजा मंडल' री पेलड़ो इजलास हुयो। अठै जिम्मेवार हकूमत सारु लोगा नै चेतावरण री खप्पत हुई। 1941 ई० में अभिन्नहरि री अध्यक्सता मे 'प्रजा मडल' रो दूजो इजलास कोटा में हुयो। इणी वरस 26 जनवरी आजादी रै दिन रै रुप मे मनाईज्यो। इण मोकै अेक आम सभा मे जोर सोर सूं जिम्मेवार हकूमत री माग करीजो। कोटा महाराव सुधारा रो अेलान करियो। इण वेळा 'विधान परिसद' रो थरपणा री आस ई बधाईजो। पण राज री सगळो ताकत अजं महाराव रै हाथा मे इज ही इण सारु 'प्रजा मडल' आपरी धुन मे कारवाई करबो इज करी।

1942 में 'अंग्रेज भारत छोडो' आन्दोलन सरु हुयो। कोटा प्रजा मंडल ई जिम्मेवार हकूमत सारु आन्दोलन छेड दियो। पूरै राज मे हडताल हुई। ठोड़ ठोड जलूस निकळिया। इण धमचक माथै खार खा अर राज जुलम करण माथै उछरियो। अभिन्नहरि अर वारा साथी गिरफदार हुया। पुळिस भीड माथै सोट बजाया अर अेक जागा तो गोळिया ई बरसाई। इण सू कोटा री जनता भीभरगी। किडीदळ लोगडा टूका जिको रोड रोड नै पुळिस नै स्हैर पना रै बार काड पोळा बद करदो। कोटवाळो माथै तिरगो झिडो फरुका दियो। तीन दीनां ताई आखो स्हैर जनता रै कब्जं इज रियो। सेवट महाराव घणा लट्टा पट्टा कर लोगा रो खार थूकायो। कोटा मे नोठा पाछा कानून कायदा लागू हुया।

कोटा राज में घणां दिना तांई जिम्मेवार हकूमत सारु रोळघट मचियोडी री। स्यामनारायण अर बीजा केई लोग गिरफदार हुया। स्यामनारायण पुळिस रै जुलमा रै खिलाफ भूख हडताळ करी। पछै महाराव जिम्मेवार हकूमत रो भरोसौ दिरायो। इण गत देस आजाद हुयो जठा लग कोटा मे की न की उठक-पटक हूयबौ करी। पंला कोटा राजस्थान सघ मे भिळियो। पछै उदयपुर ई इण सघ मे भेळी भिळ ग्यौ अर इण आखें सघ रो राजस्थान साथै अेकीकरण हुग्यो।

जयपुर

राजस्थान रा बीजा रजवाडा री जोड में सवैधानिक दीठ सूं जयपुर घणो उदार मानीजतो क्यूंक सुधारा री सरुवाद पंलपरात जयपुर सू इज हुई। पण तोई जयपुर राज ई जन आन्दोलना नैं मसळण सारु लोगा माथै घणो जोर जतायो। 1 जनवरी 1940 रा राज कानी सू अेक होकम साया हुवो। इण होकम मुजब राज री चाकरी करण वाळा सगळा लोगा माथै राजनीतिक सभावा इत्याद मे भाग नी लेवण सारु पाबदी लगाईजी। इण रै पडूतर मे 'प्रजा मडल' राज री दमनकारी नीति री निन्दा करी अर राज मे खुदमुख्तार हकूमत री माग करी। फरवरी 1940 मे राज री पुळिस प्रजा मडल रै दफ्तर माथै अचाणचक धावौ बोल सगळा कागद अर फाइला जब्त कर लिया। 9 मार्च 1940 नै राज

'प्रजा मडल नै रजिस्टर करावण री दरकार करी। इण सू राजनीतिक हळगळ घोळा ग्रायगी। सेवट लोगा री रीस सू थोडी भिचकती सरकार 'प्रजा मडल' रै रजिस्ट्रेसन वाळी वात ग्रळीगळी करदी। तोई 'प्रजा मडल' री सभावा मे हिस्सौ लेवण वाळा लोगा माथै राज करडी निजर राखतो।

25 मई 1940 रा जयपुर मे 'प्रजा मडल' रौ इजलास हुयो जिणमैं जमना लाल बजाज खुदमुख्तार हकूमत री जोरा सोरा सू माग करी। नवम्बर 1941 मे सीकर मे ग्रेक सम्मेलन मे 'प्रजा मडल' रा ग्रध्यक्ष हीरालाल सास्त्री जयपुर महाराजा नैं सर्म सर जिम्मेवार हकूमत री थरपणा करण री सल्ला दीवी।

सीकर झुझनू रै करसा रा मागीवान हरलालसिंघ, नेतरामसिंघ, घासीराम इत्याद रो 'प्रजा मडल' सू घणो नेडो नातो जुडियोडो हो। इण साख ई घर्क ग्रावता किसान सभा ग्रर प्रजा मडल मिळ मिळा र ग्रकमक हुग्या। इण सू लोगा री जोर वधियो। जयपुर राज रा मोटा ग्रोर्दैदारा साथै प्रजामडल री लबी बात चीत चली जिण सू करनै करसा नै थोडो सोरो सास ग्रायो ग्रर ठिकाणेदारा कानी सू हुवण वाळी जोर-जबरदस्ती की मोळी पडी।

थोडा दिना पछै प्रजामडल रै लोगा विचै ग्रापसरी में की फिदडको पड ग्यो। चिरजीलाल ग्रगरवाल री ग्रगवाई में 'प्रगतीसील प्रजा मडल' नाव सू ग्रेक न्यारो ग्रडो वण ग्यो। इण गडवड सू कर नै 1942 मे 'ग्रगरेज भारत छोडो' ग्रान्दोलन री वेळा जयपुर मे की खास गिणावणजोग धमचक नो मच सकी। 'ग्राजाद मोर्चा' नाव सू ग्रेक नवो दल वणियों। मास्टर रामकरण जोसी, वी ग्रेस. देसपाडे, ग्रोमदत्त सास्त्री, लादूराम जोसी ग्रर हस डो रोय इण नवै दल रा खास मागीवान हा। इणा जयपुर री निरकुस सरकार रै खिलाफ ग्रान्दो-लन करियो जिको कोई डोढेक बरस कीकर न कीकर चलियो।

1945 ई० मे जयपुर महाराज राज मे की सुधारा री ग्रेलान करियो जिण मे 'प्रतिनिधि सभा ग्रर 'विधान सभा' री थरपणा खास गिणावण जोगी बात ही। यू वहीज सर्क क इण सू खुदमुख्तार हकूमत कानी पेली पावडो भरीज्यो। 'प्रजा मडल' ई इण मे हिस्सौ लियो। पेला देवीसकर तिवाडी ग्रर पछै हीरालाल सास्त्री री ग्रगवाई मे लोकप्रिय मिनिस्ट्रिया वणी। राजस्थान रै ग्रेकीकरण ताई लोगा री मिनिस्ट्री जयपुर मे कारगर री।

ग्रलवर

'प्रजा मडल' रै रजिस्ट्रेसन री बात माथै ग्रलवर मे खासी खाच ताण हुई। सेवट 1940ई० में प्रजा मडल' सरकार री मानेतण सस्था मुकर हुगी। पण थोडा दिना पछै केई मुद्दा माथै सरकार ग्रर मडल विचै खेंचताण सरु हुगी। जागीरी इलाका मे करसा नै ग्रापरी जमी माथै धणियाप व ग्रावादी (रैवास) रा

की हक नी हा। राजस्व रा रेकार्ड कदेई त्यार नी करीजता। अरं पछं ज्यूं ई मनमर्तं जागीरदार करसा नं बेदखल कर देवता। आपरो हक जतावण सारु करसा नं अणूता इज टक्का खरच करणा पडता। 'प्रजा मडल 1-2 जून 1941 रा 'माफी प्रथा सम्मेलन' रौ जुगाड बेठायौ। इण मोकं सरकार सू माग करीजी क जागीर माफी गावा रं करसा नं आपरी जमी गिरवी धरण अर वेचण रौ हक मिळणौ जोईजे। इण वेळा करसा माथं रावळं री अग्रेडी धौंस ही क लाई मन मरजी सूं आपरं खेत मे रु ख ई नी लो उगा सकता अर नीस काट सकता। ठिकाणं करसा माथे केई तरं रो लाग-बाग ई थोप राखी ही। करसा जागीरी जुल्मा रं भार सू दबियोडा टसकता हा। 'प्रजा मडल' रं मासरं करसा जागीरी जोर जुल्म रं खिलाफ आन्दोलन छेडियो। सरकार ठोक पीज मायं उछरी अर सेवट आन्दोलन मोळौ पड ग्यौ। इण समैं 'अगरेज भारत छोडो' आन्दोलन री धमचक सू पाछौ जोस बधिया 'प्रजा मडल' जिम्मेवार सरकार री मसा सू उधम माड दियौ। सोभाराम जेडा सावचेत नेता वकालत छोड आन्दोलन नं लाठाई देवण रं जतना मे आम जुतिया।

1943-45 ई० रै बिचं अलवर मे राजनीतिक हलगळ साव धीमी पडगी। 1946 रै फरवरी मईनै मे 'प्रजा मडल' जिम्मेवार हकूमत सारु पेरु उघगड माडियौ। सोभाराम, कु जबिहारी हरनारायण इत्याद गिरफदार हुया। घणी लाठाई करिया ई आन्दोलन मोळौ नी पडियो जद सेवट अक्टूबर 1947 मे महाराजा राज री प्रमासनिक परिसद' मे लोगा माय सू तीन जणा नै लेवण री अेलान करियौ। 'प्रजा मडल' खुदमुख्तार हकूमत री तेवड राखी ही इण सारु महाराजा रं अेलान माथ की खास गिनार नी करियौ। इण बेळा 16 मार्च 1948रा 'मत्स्य सघ' मे अलवर राज ई भिळ ग्यौ। अलवर रा सोभाराम इण सघ रा प्राइम मिनिस्टर बणिया।

भरतपुर

अगरेज प्राइम मिनिस्टर 1940 ई० मे राष्ट्रीय तिरगो फरुकावण माथं कानूनी रोक लगा दी। 'प्रजा परिसद' इण बात रौ विरोध करियौ अर जिम्मेवार हकूमत री माग करदी। भरतपुर सरकार इण माग सामो की ध्यान ई नी धरियौ। 1942 मे 'अग्रेज भारत छाडो' आन्दोलन रा भचीड ऊठण लागा जद 'प्रजा परिसद' खुदमुख्तार हकूमत सारु रोळौ कर दियौ। 'प्रजा परिसद' रा जुगलकिसोर चतुर्वेदी, मास्टर आदित्येन्द्र, देसराज, पडत रेवतीसरण, रमेस स्वामी, राजबहादुर, गोपीलाल यादव सरीसा नेतावा नै गिरफदार कर लिया। इण वेळा केई लुगाया अर टाबर ई पकडीज्या। सेवट आन्दोलनकारिया नें थथोपी द धीमा पटकण सारु महाराजा अेलान करियौ क 1943 में 'प्रतिनिधि सभा' री थरपणा करीज जावैला। पण 'प्रजा परिसद' माथे महाराजा रै इण अेलान रौ गत्तई की असर नी पडियो।

24 सितम्बर 1945 रा जिम्मेवार हकूमत री मांग रा ढोल जोर सूं घुरण लागा। 'वसत दरबार' रै मोकै महाराजा अेलान करियो क जनता रै चुणियोड़ो अेक मंत्री राज री केबीनेट मे लिरीजैला। 'प्रजा परिसद' खुदमुख्तार हकूमत री हूंस राखती इण सारु आ वात नी अगेजी। राजबहादुर अर रेवतीसरण री आगीवानी में काळा झिंडा बताईज्या। इण गत भरतपुर में खुदमुख्तार हकूमत सारु लगू रोळधद् मच्योडो री। सेवट देस रै आजाद हुया भरतपुर 'मत्स्य सघ' में मिळियो जद सघ में लोगा री सरकार वणी।

सिरोही, डूगरपुर अर जैसलमेर में ई जिम्मेवार सरकार री थरपणा सारु लोग घणा पचिया। सिरोही में गोकुलभाई भट्ट री अगवाई में आन्दोलन हुया। घणी उखेड पछाड पछै सेवट लोगा री जिम्मेवार हकूमत वणी जिणरा प्राइम मिनिस्टर गोकुलभाई भट्ट चुणीज्या।

डूगरपुर मे खुदमुख्तार हकूमत सारु जो रोळा रपटा हुया वामें भोगीलाल पंड्या री भेळ घणी भारी। भोगीलाल माथै केई वेळा पुळिस सोट बजाया अर जेळ मे वद करिया पण तोई वै टस ऊ मस नी हुया अर लगू जिम्मेवार हकूमत सारु की न की कळाप करतो इज करिया। 'प्रजा मडल' री साख लोगा मे जमा-वण अर भीला मे राजनीतिक चेतना जगावण री जस ई वारै खवे है। डूगरपुर में हुई जोर जबरदस्ती रा भख वणणवाळा भील नेता नानाभाई खाट अर वारै वरस री काळीवाई खास सरावणजोग नाव है।

जैसलमेर मरुखेतर रै मझ वसियोडी पिछडी रियासत ही। महारावल मनमरजी डका बजावण वाळो घणो निरकुम सासक। लोगा नै चिन्यीक छूट ई नी ही। पैलपरात सागरमल गोपा अर नारायणदास भाटी जैसलमेर रावल री निरकुसता रै खिलाफ आवाज उठाई। सागरमल गोपा नै जेसलमेर सूं वारै सगड़ दियो। नागपुर मे रेवता थका वो अखबारा मे जेसलमेर राज में हुवण वाळी धापा धापी री पोल खोलण लागो। 1939 मे सिवसकर गोपा जेसलमेर मे 'प्रजा परिसद' थरपण री हिम्मत करी पण उणनै ई जैसलमेर छोडणो पडियो।

मार्च 1941 मे सागरमल गोपा रा पिता चालता रिया। इण मातमी रै मोकै रेजिडट रै धावस बधाया सागरमल जैसलमेर आयो। सरकार जाणै ताक मे इज ही उणनै तुरतफुरत कैद कर लियो। जेळ मे उण साथै घणो अणूंताया हुई अर सुणिया वाना रा कोडा झडै जेडी जेडी कुपोता करीजी। 4 अप्रेल 1946 रै दिन जेळ मे इज उण री मौत हुगी। इण सू पेला 15 दिसबर 1945 रा मीठालाल व्यास जोधपुर मे 'जैसलमेर प्रजा मडल' री थरपणा कर चुका हा। सागरमल री मौत रा वावड लागा जयनारायण व्यास'र मीठालाल व्यास भळै केई जणा समेत जैसलमेर पूगा। 27 मई नै उणा जैसलमेर स्हैर मे चवड धाडै बजार रै मझ रास्ट्रीय झडो फरवायो अर 'इन्कलाब जिंदावाद' 'प्रजा मडल

जिंदाबाद' रै नारा सूं थाळो स्हैर गूंजा दियो। इण सूं जैसलमेर रा लोगा रा जीव खुलिया अर जोर जुल्म रौ विरोध करण री हिम्मत बधी।

अजमेर मे 26 जनवरी 1940 रै दिन 'आजादी दिवस' मनावण री पूरी त्यारी करीजी पण जिला मजिस्ट्रेट इण माथै रोक लगा दी। लोगा रोक नै सीट बरोबर ई नी गिणी अर ब्रिटिस विरोधी नारा लागाया। केई मोटियार गिरफदार हुया। पुळिस मार काट माथै उछरी। कांग्रेस कमेटी रै दफ्तर, प० ज्वाला प्रसाद, डा. जे. अेन मुकरजी अर बाबा नरसिंघदास रै घरा री झडतिया लिरीजी। केई लोग गिरफदार हुया। इण गत जोर जुल्म रौ चक्र चलियो।

1940 री 8 सूं 16 अप्रेल ताई अजमेर मे 'रास्ट्रीय सप्ताह' धूम धडाकै सूं मनाईज्यो। अजमेर मे जलियावाला बाग दिवस ई मनायो। खादी'र हाथ रै अरटियै सूं कातियोडै सूत रा गावा री मेळो लागो अर अेक ऊचै थवै माथै तिरगो झडो फरुकाईज्यो। *अगरेज नोकरसाही रै इण कारवाया सूं साची चिडकी* लागी अर झडै नै हटावण री होकम झाडीज ग्यो। मेळै रा सचिव कृस्णगोपाल गर्ग अेडी बेजा होकम मानण सूं सफा नट ग्या। पुळिस डडा रै जोर सूं झडौ उतारियौ'र गर्ग नै गिरफदार करियो।

पुळिस री डडैबाजी अर जुल्मा रै खिलाफ रेल्वै रा दस हजार मजूरा काम रोको हडताळ करदी। रेल्वै रै मजूरा नै भिडकावण री तोमत घर ज्वालाप्रसाद सरमा नै गिरफदार करियो अर छै मईना री करडी] सजा ठोकदी। सजा पूरी हुया पैला ज्वालाप्रसाद आपरै साथी कंदी रघुराजसिंह समेत पोरेदारा नै चकमौ दे'र जेळ सूं नाठग्यो अर मुलक आजाद हुयौ जठै ताई पाछौ भवै ई नी पकडीज्यो।

1942 रै भारत छोडो आन्दोलन रो ई अजमेर माथै भारी असर पडियो। अप्रेल 1945 ताई बालकृस्ण कोल, हरिभाऊ, रामनारायण चौधरी, गोकुललाल असावा, *रिसीदत्त माथुर अर सोभालाल गुप्त समेत कुल 64 जणा* गिरफदार करीज्या। ठेट सिमला सम्मेलन अर केबिनेट मिसन रै मोकै ताई अजमेर मे 'सविनय अवग्या आन्दोलन' रो घमचक मच्योडोज रेई। पछै सेवट *15 अगस्त 1947 रा देस रै आजाद हुया सगळो बाता मतैई ठाएं आयगी।*

सहायक पोथियां रो विगत

1. कमठान गंगाप्रसाद, धोलपुर का राजनैतिक इतिहास
2. केला भगवानदास, देसी राज्यों की जन जागृति
1948, प्रलाहबाद
3. गहलोत सुखवीरसिंघ, राजस्थान के इतिहास का तिथिक्रम
हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर
4. गुप्त सोभालाल, गांधीजी प्रोर राजस्थान
राजस्थान राज्य गांधी स्मारक निधि, भीलवाड़ा
5. चौधरी रामनारायण, वर्तमान राजस्थान
कृस्णा ब्रादर्स, प्रजमेर
6. चौधरी रामनारायण, प्राधुनिक राजस्थान का उत्थान
कृस्णा ब्रादर्स, प्रजमेर
7. चौधरी रामनारायण, बीसवीं सदी का राजस्थान
कृस्णा ब्रादर्स, प्रजमेर
8. जोसी सुमनेस, राजस्थान मे स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी
ग्रंथागार, जयपुर
9. पानगड़िया बी. ग्रेल., राजस्थान का इतिहास
नेसनल पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली
10. पानगड़िया बी. ग्रेल., राजस्थान मे स्वतन्त्रता सग्राम
राजस्थान हिंदी ग्रंथ प्रकादमी, जयपुर
11. बजाज रामकृस्ण, पत्र व्यवहार
सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली
12. मिश्र रतनलाल, सेखावाटी के स्वतंत्रता सेनानी
किसोर प्रकासन, मंडावा
13. मेहता पृथ्वीसिंघ, हमारा राजस्थान
हिंदी भवन, प्रलाहबाद
14. वर्मा माणिक्यलाल, मेवाड़ का वर्तमान सासन
मेवाड़ प्रजा मंडल, प्रजमेर
15. सक्सेना के. ग्रेस., राजस्थान मे राजनीतिक जन जागरण
राजस्थान हिंदी ग्रंथ प्रकादमी, जयपुर
16. सक्सेना संकर सहाय, बिजोलिया किसान प्रान्दोलन का इतिहास
पर सरमा पद्मजा राजस्थान राज्य प्रभिलेखागार, बीकानेर]
17. सक्सेना संकर सहाय, जो देस के लिये जिये
मुक्तवाणी प्रकासन, बीकानेर
18. जयनारायण व्यास, मारवाड़ में उत्तरदायी सासन प्रान्दोलन

19. भारद्वाज शांति, हाड़ोती का स्वतंत्रता संग्राम
राजस्थान विद्यापीठ हाड़ोती शोध संस्थान, कोटा
20. हीरालाल शास्त्री, प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र
21. महोदय बैजनाथ, रियासतों का सवाल
22. रघुवीरसिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान
राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
23. सुखाड़िया मोहनलाल, मेवाड़ प्रजा मंडल
नवजीवन प्रिंटिंग प्रेस, उदयपुर

अखबार, पत्रिकाएं :—
तरुण राजस्थान
प्रजा सेवक
ज्वाला
लोक दूत
रेल दूत
प्रेरणा
नवजीवन
अभयदूत
हरिजन
राजस्थान केसरी
त्याग भूमि
मारवाड़ लोक परिषद बुलेटिन

24. अभियंकर जी. आर, नेटिव स्टेट्स अँड पोस्ट वार पीरियड रिफोर्म
आर्य भूषण प्रेस, पूना
25. ब्रिटिश क्राउन अँड द इंडियन स्टेट्स
पी. अेस. किंग अँड कं., लंदन
26. केम्पबेल जे. ग्रे., मिशन विद माउंटबेटन
राबर्ट हेल, लंदन
27. भूडगर पी. अेल., कांग्रेस पालिसी टूवर्ड्स इंडियन स्टेट्स
आल इंडिया स्टेट्स पीपल्स कान्फ्रेंस, बम्बई
28. डायरेक्टरेट आफ चेम्बर आफ प्रिंसेज
ब्रिटिश क्राउन अँड द इंडियन स्टेट्स
पी. अेस. किंग अँड संस लि., लंदन
29. दुर्गादास, सरदार पटेलस करस्पोंडेंस
30. गांधी अेम. के., टू द प्रिंसेज अँड देयर पीपल
1942, कराची
31. हांडा आर. अेल., हिस्ट्री आफ फ्रिडम स्ट्रगल इन प्रिंसली स्टेट्स
सेंट्रल न्यूज अेजेंसी, नई दिल्ली

32. खड़गावत मेन. भार., राजस्थान'स रोल इन द स्ट्रगल आफ 1857
राजस्थान राज्य सरकार, जयपुर
33. लक्ष्मणसिंघ, पालिटिकल ऍड कांस्टीटयूस्नल डेवेलपमेंट इन द
प्रिंसली स्टेट्स आफ राजस्थान (1920-1949)
34. मेनन वी. पी., स्टोरी आफ दी इंटीग्रेसन आफ दी इंडियन स्टेट्स
ओरियेंट लोंगमेन, कलकत्ता
35 फड़नीस उर्मिला, टूवर्ड्स इंटीग्रेसन आफ इंडियन स्टेट्स
1919, 1947, 1968, एसिया पब्लीसिंग हाउस, बम्बई
36. सक्सेना के. मेस., द पालिटिकल मूवमेंट ऍड अवेकनिंग इन राजस्थान
मेस. चाद ऍड कम्पनी, नई दिल्ली
37. साहू पी. भार., राज मारवाड़ ड्यूरिंग ब्रिटिस पेरामाउंट्सी
–अे स्टडी इन प्राब्लम्स ऍड पालिटिक्स अप टू 1923
यूनाइटेड बुक ट्रेडर्स, जोधपुर
38. सीतारामैया पी., हिस्ट्री आफ इंडियन नेसनल कांग्रेस
जिल्द 2, पदम् पब्लिकेसस, बम्बई
39. ताराचंद, हिस्ट्री आफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया
1961, दिल्ली
40. करणीसिंघ, द रिलेसंस आफ द हाउस आफ बीकानेर विद द सेंट्रल पावर्स
41. मुंसी के. मेम., पिलग्रिमेज टू फ्रीडम
42. व्हाडा भार. मेल., जयनारायण व्यास
इंडिया पब्लीसिंग हाउस, नई दिल्ली
43. मेनन वी. पी., ट्रांस्फर आफ पावर इन इंडिया
ओरियेंट लोंगमेंस, कलकत्ता
44. तारकनाथ, सोवरेन राइट्स आफ द इंडियन प्रिंसेज
गणेस ऍड कम्पनी, मद्रास
45. फोर्ब्स, रोसीटा, इंडिया आफ द प्रिंसेज
द बुक क्लब, लंदन
46. गांधी मेम. के., द इंडियन स्टेट्स प्राब्लम
नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद
47. कुलकरणी वी. बी., द फ्यूचर आफ इंडियन स्टेट्स
ठक्कर ऍड कं. लि., बम्बई
48. लियोनार्ड मोस्ले, द लास्ट डेज आफ द ब्रिटिस राज
वेडनफील्ड निकाल्सन, लंदन
49. संदी ई. डब्लू. भार., द ट्रांस्फर आफ पावर इन इंडिया
जार्ज मेसन ऍड अनविन लि., लंदन

50. राम पाडे, पीपल्स मूवमेंट इन राजस्थान
सोधक, जयपुर
51. माथुर अेस., स्ट्रगल फोर रेस्पोंसीबल गवर्नमेंट इन मारवाड़
यूनाइटेड बुक ट्रेडर्स, जोधपुर
52. पुरुषेंद्र सूराणा, सोसियल मूवमेंट अेंड सोसियल स्ट्रकचर
मनोहर पब्लिकेसंस, नई दिल्ली
53. वरदा आर. डी., फ्राम फ्यूडलीजम टू डेमोक्रेसी
अेस. चाद अेंड क., नई दिल्ली
54. माथुर वी. डी., स्टेट्स पीपल्स कान्फ्रेंस
55. पेमाराम, अेग्रेरियन मूवमेंट इन राजस्थान (1913-1947)
पंचसील प्रकासन, जयपुर
56. मजमूदार आर. सी., ब्रिटिस पेरामाउंटसी अेंड इंडियन रेनासा
जिल्द 2, भारतीय विद्या भवन, बम्बई
57. पनीकर के. अेम, इंडियन स्टेट्स अेंड द गवर्नमेंट आफ इंडिया
मार्टिन हार्पकिंसन लि., लदन
58. सक्सेना के. अेस., द पालिटीकल मूवमेंट अेंड अवेकनिंग इन राजस्थान
अेस. चाद अेंड क., नई दिल्ली
59. सिंघ जी. अेन., इंडियन स्टेट्स आफ इंडिया, देयर फ्यूचर रिलेसस
नदकिसोर अेंड ब्रदर्स, बनारस
60. वार्नर विलियम ली, द नेटिव स्टेट्स आफ इंडिया
मेकमिलन अेंड क., लदन

जर्नल्स अेंड पेम्पलेट्स :— मार्डनरिव्यू, कलकत्ता
इंडियन रिव्यू, मद्रास
सोधक जयपुर
राजस्थान हिस्टोरिकल रिसर्च जर्नल, जयपुर
इंडियन अेनुअल रजिस्टर, कलकत्ता
प्रासीडिंग्स आफ राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस
भारत इंक्वायरी, डो. अेन. कचरु
बीकानेर, सारंगधरदास
स्टेट्स पीपल्स कान्फ्रेंस न्यूज सिरीज न.6
बीकानेर का राजनीतिक विकास, सेक्रेटरी बीकानेर प्रजा परिसद
इन साइड जोधपुर स्टेट (1947), सेक्रेटरी मारवाड़ लोक परिसद
मारवाड़-अेन इन्ट्रोस्पेक्सन, रमेसचद्र व्यास
मेवाड़ प्रजा मडल, मोहनलाल सुखाड़िया
रिपोर्ट्स आफ द राजस्थान मध्य भारत सभा
जोधपुर प्रजामडल, मिनट्स, 1935-1941

राजस्थान रौ अेकीकरण

सुखवीरसिंह गहलोत

रियासतां रौ भारतीय संघ में मिलणौ

आजादी सूं पेला राजस्थान में कुल 21 रियासतां, 2 खुदमुख्तार ठिकाणा अर अेन मझ में अजमेर मेरवाड़ा रौ ब्रिटिस इलाकौ भेळा हा। इक्कीस रियासतां में उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाडा, प्रतापगढ, साहपुरा, बूंदी, कोटा, सिरोही, करौली, जैसलमेर, जयपुर, अलवर, जोधपुर, बीकानेर, किसनगढ, झालावाड़, दांता, भरतपुर, धोलपुर, टोंक, अर पालनपुर ही। दांता अर पालनपुर रियासतां जदै राजपूताना अेजेंसी में भेळी गिणीजती। लावा अर कुसलगढ खुदमुख्तार ठिकाणा हा।[1] राजस्थान रै इण रजवाड़ां री कुल जमीं 1,35,052 मील मुरब्बा में पसरियोडी ही जिण मांयं 1,20,81,880 मानखं रौ बासौ हो। अजमेर मेरवाड़ा मे ब्रिटिस हकूमत रौ मातहत अे. जी. जी. राज करतौ। इण देसी रियासतां में अंगरेज रेजिडंट रा पालिटिकल अेजंट रेवता हा। मेवाड़ रेजिडंट अर दखणी राजपूताना स्टेट अेजेंसी रै मातहत उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा अर प्रतापगढ हा। आथूणी राजपूताना रेजीडेंसी (जोधपुर) रै हेटै जोधपुर, पालनपुर अर दांता रियासतां ही। जयपुर, अलवर, साहपुरा, टोंक अर किसनगढ रौ संबध जयपुर रेजिडेंसी सूं हो। ऊगुणी राजपूताना स्टेट्स अेजेंसी (भरतपुर) रै साथै भरतपुर, कोटा, बूंदी, झालावाड़, करौली अर धोलपुर रियासतां ही। बीकानेर अर सिरोही रियासतां सीधी अे. जी. जी. सूं जुड़ियोड़ी ही।[2] राजदूतां रै मारफत रियासतां अर भारत सरकार रै लिखा पढी हुवती अर वै रियासता रै मामलां में राजावां नै सल्ला थीजी देवता। राजावां रै राज प्रबंध रौ पूरौ ध्यान राखता अर बिना वांरी मरजी रै राजा चूळ ई नी सकता हा। असल में राजा वांरा दबल बणियोड़ा हा। जै कोई राजा वांरी मसा रै खिलाफ काम करतौ तो उण नै राजगादी सूं हटावण रा गट्टा पट्टा ई करता। उदयपुर रै महाराणा अर अलवर महाराजा न हटावण सारु अंगरेज जिकं कवाड़ा करिया वै घणाकरा राजावां नै घणा इज अखरिया। उदयपुर महाराणा फतेसिंघ तो इत्तो तंग हुयोड़ो हो क हरदम अंगरेजां रौ पापो कटण री बाटां इज जोवतो।

घणाकरा राजा अंगरेजां री मातहती मे रेवतां थकां ई समझता हा कं अंगरेजां रं पाण इज वै मोज मस्ती रा मावा लूटै है। राजा लोग विदेसा मे सं र सपाटा करण में लाखां रिपियां रौ चोखाळो कर देवता। राज रै म्हैलां री सान सोकत में ई पाणी ज्यूं रिपिया उपड़ता।

सचिव, श्री जगदीशसिंह गहलोत शोध संस्थान, जोधपुर

दूजं महाजुद्ध पछै आजादी काच मे दोसं ज्यू दीसण लागगी। दूजो महाजुद्ध ढबियां इंगलैंड मे 1945 मे मजदूर दल री सरकार चुणीजगी। इण सू भारत री राजनीति मे भारी बदळाव आयो। मजदूर दल री सरकार री मानणो हो क भारत री जनता अंडी चेतन हुगी है क हमें अंगरेज सोरं सास भारत री सासन नी चला सकं। भारत रा लोगा री एण आजाद हिंद फौज कानी घणोज तरफदारी री ही। भारतीय नाविका री विद्रोह देख'र अंगरेज समझ ग्यो क अबै देसी सिपाया रै पाण गाडी नी गुड सकैला। महाजुद्ध मे जर्मनी अंगरेजा रा खासा मरमट गाळ दिया हा अर यू लखावण लागी क अबै अमरीकी अर रुसी घोस रा डका चाफेर सुणीजण लाग जावला। इण हालत मैं ब्रिटिस सरकार मैं भारत री पिंड छोडण मे इज सार लखायो। इण बेळा राजा लोग सोचता हा क देस आजाद हुया उणा माथै जो अंगरेजी अकोडियो लागोडो है वो खतम हु र राज माथ वारो पूरी परिणामाप कायम हु जावैला।

16 मई 1946 रा वायसराय आ घोसणा कर दी क ब्रिटिस सरकार भारत री समस्यावा नै सलटावण री मसा राखै है। भारत रै आजाद हुया पछै ब्रिटिस राज अर राजावा विचै वेडा सबध नी रेवला जेडा अबार है। रजवाडा माथै नी अंगरेजी सरकार री अधिकार रेवैला अर नी वो अधिकार नवी सरकार नै सू पीजैला। पण अंगरेज सरकार भारत री नवो समस्यावा नै निपटावण मे पूरी मदद करैला। वायसराय आ बात ई कही क रियासता आपरा केई अधिकार राख सकैला पण विदेसी मामला, सुरक्सा अर सचार इत्याद भारत सरकार नै सू पणा पडैला। रजवाडा नै भारत री सविधान सभा मे नुमाई दगी दी जावला। राजपूताना री नुमाई दी वास्तै भारत री रियासता नै मिळण वाळी 93 सीटा (Seats) माय सू 13 राजपूताना न दिरीजैला। इण 13 माय सू जोधपुर जयपुर बीकानेर अर उदयपुर नै 2 2, अलवर अर कोटा न अेकूकी अर बाकी री रियासता नै कुल बचियोडी तीन सीटा दी जावैला। सविधान सभा मे राजा लोग किण तरै सू भाग लै सकैला वारी सरता मुकर करण सारु अेक 'समझोता कमेटी बणावण री राय दिरीजी।[3]

राजावा री कमेटी री इजलास 29 जनवरी 1947 रा बबई मे हुयो। इण बेळा आ बात कबूल करीजी क भारत सरकार नै जिक अधिकार सू पीज वारै टाळ बाकी सगळा राजावा कनै ई रेवैला। राजावा रै राज री सीव अर पाटवी बणण री काण कुरब सागण पेली रै ज्यू इज रेवैला। भारत री सविधान सभा वारै घरेलू मामलात क विधान मे अगेई फेर बदल नी कर सकैला।[4] इण गत री बाता जद जनता विचै पूगी तो खासो विरोध हुयो। केई राजा ई इण बाता रा हामी नीं हा। अडा राजावा मे बडोदा महाराज खास हा वै तो सविधान सभा में भाग लेणो ई सरु कर दियो।

20 फरवरी 1947 रा इगलैंड रा प्राइम मिनिस्टर लार्ड अेटली घोसणा करी क जून 1948 मे भारत नै आजाद कर देवैला। इण पछै लार्ड वेवल री ठोड

नवा वायसराय लार्ड माउण्टबेटन 24 मार्च नै काम सभाळ लियो। उण बेळा लार्ड इसमे कह्यो "माउण्टबेटन उण बेळा अगनबोट रो भार सभाळे है जद कै अगनबोट समदर रै ग्रेन बिचमे है, उण मे बारूद भरियोडो है अर उण रै ऊपरलै हिस्सै मे आग लगियोडी है।"[8]

अेक अप्रेल रै दिन राजावा री अेक बेठक बबई मे हुई। इण बेठक में बीकानेर महाराजा स् दूंलसिघ खुलासै वता दियो क वै सविधान सभा री मीटिंग में जावेला।[6] उदेपुर, जोधपुर, ग्वालियर, पटियाला अर जयपुर ई बीकानेर साथै हुया। बीजा राजावा माथै इण रो जोरदार असर पडियो। उण बेळा राजावा री सभा आ बात तै करदी क रियासता री मर्जी माथै छोड दिया जावै क वै सविधान सभा में भाग लेवै क नी। उण बेळा अखबार ई राजावा री इण रुण री सोबा करी।[7]

18 अप्रेल 1946 रा अखिल भारतीय देसी राज्य परिसद रै ग्वालियर सम्मेलन मैं जवाहरलाल नेहरु कह्यो क जो रियासत सविधान सभा मे भाग नीं लेवैला वा विरोधी रियासत गिणीजेला। मुस्लिम लीग रा लियाकतअलीखा इण बात रो अेतराज करता कह्यो क घणकरा रजवाडा कान्ग्रेस र दबाव सू सविधान सभा में आवणो हाकरियो है। इण बात रो पडूतर 24 अप्रेल ने बीकानेर महाराजा दियो अर कह्यो क रियासता सावळ सोच विचार नै आपरै खुदरै अर भारत रै फायदै मे सविधान सभा मे हिस्सो लेवण री तेवडी है। देसी रियासता रा अेक तिहाई राजा इणीज विचार सू सविधान सभा मे पूगण सारु उतारु हुया है। इण गत बीकानेर रा महाराजा रो रुण देख अर बडोदा, जयपुर, जोधपुर, पटियाला आद आपरा दूत 28 अप्रेल नै सविधान सभा मे भेज दिया। इण पछै केई रियासता रा दूत सविधान सभा में जाय पूगा।[8] भारत रै 15 अगस्त 1947 रा आजाद हुवण ताई हैदराबाद, कस्मीर अर जूनागढ टाळ सगळी रियासतां सविधान सभा मे भाग लेवण लागी अर भारतीय सघ मे मिळगी। इण बेळा आ बात नी वेठनी सी ठा नी केडा केडा बखेडा ऊठता।[9]

12 मई 1946 नै ई अगरेज सरकार खुलासो कर दियो क भारत रै आजाद हुया पछै छोटी छोटी रियासता नी रेवेला। इण सारु छोटी रियासता नै आप र पाडोस रै मोटै मोट रजवाडा क प्रातां रै साथै मिळ जावणो चाईजे।[10] राजपूताना अेजेंसी रो घणकरी रियासतां छोटी ही सो ब्रिटिस घोसणा पछै घणकरी रियासता रा राजा समझ ग्या क वारी मामत आयगी।

राजस्थान में उदेपुर महाराणा रो खास ठरको अर महाराणा ने इण बात रो पूरो भरोसो क वारै क छोडी बात घणकरा अगेजसैना। महाराणा भूपालसिघ उदेपुर मे 25 जून रा मालवा, गुजरात अर राजस्थान रा राजावां री अेक सभा बुलाई। इण बेळा 22 राजा भेळा हुया। महाराणा सगळां नै सुझाव दियो क

सँग जणा मिळ'र अेक सघ बणावा। इणरो नांव राजस्थान सघ घरो। राजस्थान सघ भारत री अेक लाठी इकाई रेवै इण सघ रा रजवाडा बण्या रेवै पण आपरा की अधिकार महासघ नै सूप देवै। सभा मे भेळा हुयोडा राजा महाराणा रै सुझाव माथै सावळ विचार करण री वादो करियो पण उण वेळा सघ मे भिळण री हामल किणी नी भरी।

उदैपुर महाराणा निरास नी हुया अर कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुसी नै आपरो कानूनी सलाहकार बणायो। मुसी री सल्ला मुजब 23 मई 1947 रा महाराणा सगळा राजावा री सम्मेलन फेर बुलायो। महाराणा सगळा नै चेतावणी दी'ही क जै सघ नी बणायो तो रियासता मवै ई नी बच सकेला।[11] मुसी इण मोकै महाराणा री वात सावळ खुलासै सगळा नै समझावण री खम्पत करी। घणाकरा राजावा रै हीयै बात ढूकगी पण जयपुर, जोधपुर, बीकानेर आद इल्लम टिल्लम कर टाळ ग्या। पछै राजस्थान सघ रो विधान ठावण सारु अेक कमेटी बणी आ कमेटी 14 फरवरी 1948 रै सम्मेलन रै मोकै राजस्थान सघ रै विधान री प्रारुप पेस कियो। आपरो बरस गाठ रै मोक 6 मार्च रा महाराणा अेकर फेर अपील कीवी जिणमे कह्यो क चार मोटी रियासता जयपुर, जोधपुर, बीकानेर अर उदैपुर नै टाळ राजपूताना अर गुजरात री छोटी रियासता अेक सघ बणा अर भारत रा अेक सबळी सावठी ईकाई बण जावै।[12] इण अपील री ई राजावा की गिनार नी करियो।

उण वेळा राजस्थान रा बीजा रजवाडा मे ई राजनीतिक हळगळ जोरा माथै ही। जयपुर रा महाराजा अेक सम्मेलन कर कह्यो क अेडो सघ बणायो जावै जिणमैं हाईकोर्ट, पुलिस, ऊची पढाई आद सो सघ री जिम्मेवारी गिणीज अर बाकी काम रियासता री देख रेख मे इज रेवै। आ बात ई सुझाईजी क साव छोटी छोटी रियासता री मसा व्है तो आपरै पाडोस री बडी रियासता साथै भिळ सक। इण सम्मेलन मे ई उठो न फुरै आळी हुई अर की खास नतीजो नी निकळियो। डूगरपुर रा महारावळ लक्समणसिंघ इण बात रा कळाप करिया क लकाऊ उगूणी बासवाडा डूगरपुर, कुसलगढ अर प्रतापगढ रियासता मिळ अर वागड प्रदेस बणावै पण आ बात ई चाली कोयनी। कोटा रा महाराव भीमसिंघ री मसा ही क कोटा, बूदी अर झालावाड अेकमेक हुर हाडोती इकाई बणा लेवै। पण आ बात ई बेठी कोयनी। इण वेळा करियोडा कळाप इण सारु पार नीं पडिया क सगळा राजावा मे अेको इकळास नी हो अर सँग आप नै दूजा सू बडा गिणता। छोटी रियासता न ओ डर बेठोडो क मोटी वानै डकार जावैला अर वारो मान सम्मान खतम हुजावैला। असल मे छोटकडी रियासता री चापळ ठीक ही क्यू क जयपुर, उदैपुर, जोधपुर, कोटा, बीकानेर रा राजा छोटी रियासता नै गटकावण री मसा राखता हा। अब इणा मे अेकै रो जोर कै तो केन्द्र सरकार देवती अर का आरी जनता जोर मारती। उण समैं ताई केई राजनीतिक

सगठन बण चुका हा ज्यू प्रजा मडल, लोक परिसद, प्रजा परिसद इत्याद।[13] ग्रा माय सू घणकरा सगठन खुदमुख्तार हकूमत री थरपणा री तेवड राखी ही इण सारु राजावा रौ सघ वानै भवै ई नी भावतो। इण सगठना री मसा ही क सुततर रुप सू महाराजस्थान वणै। ग्रखिल भारतीय देसी राज्य लोक परिसद री राजपूताना प्रान्तीय सभा सितम्बर 1946 मैं इज प्रस्ताव पास कर लियौ क राजस्थान री ग्रेक ई रियासता सुततर नी रेय सकैला। इण सारु राजस्थान री सगळी रियासता नै ग्रेक इकाई वण ग्रर भारतीय सघ मे भिळ जावणौ जोईजै।[14] ग्रठै रा विद्वान ग्रर सोजीवान लोग ई सैंग रियासता रै ग्रेकीकरण सू राजस्थान सघ बणावण माथै तुलियोडा हा।

उण दिना मे इतिहासकार जगदीससिंघ गहलोत राजस्थान प्रात निर्माण ग्रान्दोलन री जबरदस्त वकालत कीवी। वारा विचार नव भारत दिल्ली मे इण मुजब छपिया "राजस्थान मे म्हानै नी तो नागरिक हक मिळियोडा हैं, नी लिखण पढण री ग्राजादी है ग्रर नीं राजनीतिक ग्रधिकार हैं। राजस्थान रा लोगा नै उत्ता इज राजनीतिक ग्रर नागरिक ग्रधिकार मिळणा जोईजै जित्ता क उण रै पाडलै प्राता रा लोगा नै मिळियोडा है। राजस्थान ग्रेक न्यारौ प्रात वणणौ जरुरी है। राजस्थान री जनता रौ ग्रो सब सू पेलो काम है क इण प्रात रै वणा-वण री कोसिस, करै इण मारग मे ग्रवार जो ग्रवखाया दीसै वै बेगोज खतम हुजावैला ग्रर राजा लोग ई ग्रवै ग्रापा नै रोक नी सकै। इण सारु इण दिस में ग्रपा नै हुबल खावण री जरुत ग्रवै ई नी है।" इण वेला जगदीससिंघजी ग्रा ई कही क ग्रायूणौ सिंघ रौ थरपारकर (ग्रमरकोट जिलो) ग्रर रोहडी री इलाको जो सौ टक्का राजस्थानी है, ग्रर भौगोलिक सास्कृतिक, राजनीतिक ग्रर भासा री दीठ सू जोधपुर ग्रर जैसलमेर रा ग्रग रिया है, ई राजस्थान प्रात मे भिळणा चाईजै इणी तरै धोराऊ दिस मे हिसार जिलै रौ भिवानी स्हैर'र गुडगाव रौ खासौ हिस्सौ ई राजस्थान मे भिळणा जोईजै। लकाव दिस मे कदोमी राजस्थानी रियासता नै गुजराती इलाका गिण'र गुजरात काठियावाड मे भेळण री तिकडम भिडाइज री है। साच वात ग्रा है क ईडर, सिरोही, दाता, पालनपुर इत्याद प्राचीन समै सू राजस्थानी सस्कृति रा इज ग्रग रिया है ग्रर ग्रवै इणा नै फटावण री कुवदा करीजै है। दिखणाद मे कोटा क झालावाड री थोडो भाग मालवा प्रांत नै दे'र उण प्रात रौ धोराऊ-ग्रायूणौ हिस्सो लै नै ग्रेक ग्रेडो ठोस राजस्थान प्रात बणायौ जावै जिणरी ग्रापरी जूनी गरवजोग सास्कृतिक परपरा व्हैला ग्रर ग्रो लाठो राजस्थान भारत नै महताऊ देन दे सकैला।[15] ग्रो जगदीससिंघ गहलोत ग्रा वात उण समै कही जद गुजरात रा कन्हैयालाल माणिकलाल मुसी ग्रर नयानगर रा जाम सहाब महागुजरात रा सपना देखण लागा हा।[16] इण वेळा भारत रा घणकरा राजा तिकडम्वाजी मे लागोडा हा। दिखणाद भारत री रियासता ग्रापरो न्यारो संघ बणावण री उखेड पछाड में लागोडी ही। राजस्थान में ई 'राजपूत राज सघ री थरपणा री हूस मू जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, ग्रलवर ग्रर

कोटा रा दीवान मार्च 1946 मे जयपुर में भेळा हुया । इण पछै 8 जुलाई रा कोटा मे अेक मळै मीटिंग हू'र इण संघ री विधान ठावण सारूं अेक कमेटी ई बणगी पण उगूतं हायके अर बळै सू सगळी राफारोळियाँ हूनैं संघ योजना ठप्प हुगी ।[16]

18 मार्च 1848 मे राजपूताना प्रांतीय देसी राज्य लोक परिसद खुलासैं अेलान कर दियो क अजमेर मेरवाडा समेत सेंग रजवाडा मिळा अर महाराजस्थान धरणावण मे इज सार है । भारतीय समाजवादी पार्टी रा अध्यक्स राममनोहर लोहिया ई माग करी क सगळी रियासता रैं भेळ सूं राजस्थान प्रांत बणणी चाईजैं ।[17] इण गत चोफेर इण बात री चाई बधियोडी क रजवाडा नैं मिळा अर राजस्थाल प्रांत जरुर ई बणणी जोईजैं।

25 जून 1947 नैं भारत सरकार रियासता रा बखेडा निवडावण रैं मतै सू अेक न्यारो मेहकमो बणायो अर 5 जुलाई सू सरदार पटेल उण रा मिनिस्टर मुकर हुया इण मेहकमैं रा सलाहकार वी. पी मेनन बणाईज्या । इण मेहकमैं धरताई पेलान कर दियो क अेक क्रोड री सालाना आमद अर दस लाख आबादी सूं कम वाळी कोई रियासत अवेई न्यारी इकाई नी रेय सकेला । इण दीठ सूं राजपूताना रा च्यार—जोधपुर, जयपुर, उदेपुर अर बीकानेर अेडा रजवाडा हा जकं न्यारी इकाया बण सकता हा । आपरैं अेलान मुजब भारत सरकार सितम्बर 1947 मे किसनगढ अर साहपुरा रियासता नै, जिका री सीव री काकड अजमेर सू मिळियोडी, अजमेर-मेरवाडा मे मिळावण री तेवडी । किसनगढ महाराजा तो फटाक देणी दस्खत कर दिया पण साहपुरा राजा इल्लम टिल्लम करण लागा । उणा इण बात री आड लीवी क इण गत री फेसलो थारी 'मन्त्रीमडल' इज कर सकै साहपुरा री केबीनेट मे उण वेळा जनता रा नुमाई दा लीरीजग्या हा । इण आना कानी सू रियासती मेहकमैं रा सलाहकार मेनन अर मिनिस्टर पटेल नाराज हुग्या जद प्रधान मन्त्री असावा दिल्ली पूग इणा नैं समझाया क थारी मसा फकत इत्तोज है क छोटी मडी सगळी रियासता री अेक संघ बणा दियो जावै । पटेल अर मेनन आ बात मान ग्या नै किसनगढ अर साहपुरा नै अजमेर मेरवाडा मे मिळावण री फसलो कर लियो ।[18]

नवम्बर 1947 मे इण गत रा मसूबा बाधीज्या क राजपूताना अेजेंसी री सिरोही, दाता, पालनपुर, बासवाडा अर डूगरपुर रियासता मे घणाकरा लोग गुजराती भासा बोलणवाळा है इण सारु आनैं गुजरात मे मिळा देवणी है । दांता अर पालनपुर रियासता गुजरात में मिळगी पण डूगरपुर अर बासवाडा रा राजा अर जनता इण बात री विरोध करियो इण वास्तै दोनू रियासता राजपूताना मे इज रेयगी । मार्च 1948 मे सिरोही री सासन राजपूताना अेजसी सूं हटा'र बबई प्रांत री वेस्टर्न इडियन स्टेट्स अेजसी रैं तहत कर दियो ।[19] इण बाबत राजस्थान रा लोग अेतराज करण लागा जद 8 नवम्बर 1948 नैं भारत सरकार अर सिरोही रीजेंसी कोसिल बिचै अेक इकरा रनामो हुयो जिण

मुजब 5 जनवरी 1949 रा बंबई री सरकार सिरोही नै आपरै सासन मे लै लियो। आ स्थिति 25 जनवरी 1950 तक चाली पछै राजस्थान रै लोगा री रीस देखता सिरोही रा टुकडा कर उण रा 89 गाव 304 मील मुरब्बा, बंबई साथै अर बाकी रौ सिरोही राजस्थान मे मिळा दियौ ग्यौ।[20] असल मे राजस्थान रा बीजा रजवाडा मे अेकीकरण रा कळाप हुवता हा जद सिरोही में पाट खातर उत्तराधिकार रौ बखेडो मच्योडो हो। सिरोही खातर अेक अबखो मळूभो ओ पडियोडो हौ क महागुजरात रा हामी सिरोही माथै आपरो हक जतावता हा। उणा रौ मानणो हो क सिरोही रो राजघराणो कठियावाड सू सबध राखै। आबू मिंदर मे घलेखा गुजराती नित पूगै अर भूगोल री दीठ सू ई सिरोही गुजरात रै लपडती है। सिरोही रा घणकरा नेता अर लोग राजस्थान साथै मिळण री मंसा राखता हा अर आ दलील देवता क भासा अर संस्कृति रै तालकै सिरोही राजस्थान सू रळियौ मिळियौ है अर सिरोही रा सगळा लोग राजस्थानी भासा रै मारफत आपरी जीवारी री गाडी गुडावै। इण वात माथै ई गिनार कराईज्यो क ठेट सू ई सिरोही राजपूताना री रजवाडो गिणीजतो अर राजपूताना अेजेंसी में भेळो हो। घणा पेला सू इज राजस्थान रा पोतडिया रईस ऊनाळ मे अबू री भासरी लेवता आया अर आबू टाळ राजस्थान मे कठई 'हिल स्टेसन' कोयनी। दोनू घडा री बात माथ सावळ गिनार कर सिरोही नै राजस्थान मे भेळण री बात मगजीजो। पण औ सातको राख दियो क आबू रोड अर दिलवाडा मिंदर री बबई साथ कट बाळदो कर दियौ जावै। अठ आ वात ई लखाव जाण सरदार पटेल रै रियासती मेहकमै मे हुवणौ गुजरात रै साचौ फायदै आयो क्यू क सिरोही नै गुजरात रै भेळो ससोलण रै फेसल मे पटेल, री असर की न की गरज तो साजोज व्हैला। घणी खाचताण पछै ठेट 1 नवम्बर 1956 रा सेवट आबू नै राजस्थान मे ठावी ठोड मिळी पण इण री अेवजी मे सीरोज मध्यप्रदेस नै दे र गल छोडावणी पडी।

मत्स्य सघ

भारत र बटवारै सू पेला राजपूताना री ऊगणी रियासता मे कजिया हुवण लाग ग्या। अलवर अर भरतपुर मे मेवातिया रा उधगड सरु हुग्या। दोनू रियासता मे जात धरम रै नाव माथै मार काट मचगी। भरतपुर मे 209 रै लग टगै गावा रा लोग भाग छूटा अर गांव उजाड हुग्या। मेव आपरो मेवस्तान वणा-वण री मसा राखता हा। गुडगाव रै दिखणाद, भरतपुर रै घोराउ इलावै अर अलवर न भेळा मिळा अर मेवस्तान बणावण रो धार राखो हो।[21] भरतपुर दरबार मेवा नै दबावण साफ घणी आफळियां साई। इण फितूर रो असर अलवर माथै ई पडियो। अलवर रै दीवान माथै ओ तोमत हो क वो मेवा रो दुसमी है अर उण हिन्दुवा नै भडकाया। आ सिवायत ई हुई क मेवा नै डरा धमका अर जोरा मरदी सू काढ़ै है।[22] इण गत री सिकायतां सू [illegible]

सेवट भारत सरकार भक्टूबर 1947 में भलवर-भरतपुर रै राजावां भर डा. खरै नै दिल्ली बुलाया। वानै तरै तरै सूं समझाया क इण मोकै देस में भ्रमन चैन रैवणो घणो जरुरी है, उणां वादो करियो क सांति बणायां राखण सारुं कीं कसर नीं राखैला।

भलवर भर भरतपुर में हूवण वाळै कजियां रै कीं कारी नीं लागी भर नित नवी सिकायतां भारत सरकार कनै पूगण लागी। सेवट रियासती मेहकमै रा वी. पी. मेनन भचाणचकै भलवर पूग भर जांच करी तो डा. खरै गल्ती माथै लखाया। खरै नै मोकूफ कर उण री ठोड भारत सरकार दूजो भफसर लगायो। 30 जनवरी 1948 रा महात्मां गांधी साथै चूक हुई भर भेड़ा थावड़ मिळिया क भलवर महाराजा गाधीजी रै हत्यारै नै भासरो दियो। इण पछै भलवर महाराजा नै दिल्ली बुला भर भलवर राज भारत सरकार रै रियासती मेहकमै भापरी देख रेख मे लै लियो।[23]

भरतपुर राज रै खिलाफ ई केई सिकायतां दिल्ली पूगी। कहीजै क उठै रो राजा बृजेन्द्रसिंघ 'भाजादी दिवस' नी मनायो भर भारतीय नेतावां री खिलाफत करणवाळां नै नी टोकिया। भेक लाख रै लगै टगै मेव लूटीजिया कुटीजिया भर भरतपुर राज सूं बारै तगड़ीजिया। भाई सिकायत ही क वो भापरी जात रा जाटां नै गरजाटां नै कूटण सारुं सिल्ली चढावै भर हथियार बणावण रा कारखाना लगा राखिया है। प जवाहरलाल नेहरु कनै भा सिकायत ई पूगी क लोगां नै फसाद फेलावण री सिक्सा दै भर हथियारां सूं लैस कर नै मुलक रै खुणै खुणै में मेलै हैं।[24] इण हालत मे फरवरी 1948 मे महाराजा नै रियासत रो सासन भारत सरकार नै सूंपण री घुड़की पिलाईजी। महाराजा की खास खुलासो नी कर सकिया जद रियासत में भारत सरकार रा प्रसासक मेलीज ग्या।

भलवर-भरतपुर रै खिलाफ भारत सरकार जकी करड़ी कारवाई करी वा कित्तीक वाजब ही इण बात रो तो की पतियारो नी पण इण कारवाई सूं उठै हूवण वाळा कजिया मिट भ्रमन जरुर वापरग्यो।

इण पछै भारत सरकार विचार करियो क धोलपुर भर करोली री रियासतां री सीव भलवर-भरतपुर सूं जुड़तीज है इण सारु चारां नै मिळा भर भेक संघ बणा दियो जावै। चारुं रियासतां रै राजावां सामो दिल्ली में इण गत रो प्रस्ताव धरीजियो। चारुं राजा संघ मे मिळण सारुं झठ राजी हुग्या।[25] इण संघ रो नांव मत्स्य संघ धरीजियो। महाभारत रै समै इण खेतर नै लोग मत्स्य नाव सूं इज भ्रोळखता हा। उण वेळा भलवर भर भरतपुर रै राजावां रै खिलाफ जांच री कारवाई हूवती ही इण सारुं मत्स्य संघ रा राजप्रमुख धोलपुर रा महाराजा उदयभानसिंघ बणाईज्या।[26] इण वेळा भरतपुर महाराजा रा छोटा भाई भरतपुर नै मत्स्य संघ में मिळावण माथै भ्रेतराज कियो।[27] कांग्रेस री झंडी

किलै मांय नीं लगावण दियो। खासो ऊधगड़ हुयो जद सैवट सरकार थोड़ी घणी गिरफ्तारियां करी। 17 मार्च रा भारत सरकार रा मंत्री गाडगिल भरतपुर किलै में मत्स्य संघ रो उद्घाटन करियो। अलवर रा सोभाराम री अध्यक्सता में मंत्रीमंडल बणियो जिण में जुगलकिसोर चतुर्वेदी (भरतपुर), मंगलसिंघ (धोलपुर), भोलानाथ (अलवर), गोपीलाल यादव (भरतपुर) अर चिरंजीलाल सरमा (करौली), मंत्री बणिया। मत्स्य संघ री कुल जमी 7536 मील मुरब्बा, आबादी 18,37,994, अर सालाना आमद 1 9306 क्रोड रिपियां ही।[28]

इग्यारै महना में इज भरतपुर अर धोलपुर री जनता इण मंत्रीमंडल सूं धापगी। कठैई बृज प्रदेस तो कठैई मेवस्तान री माग मूंडा काडण लागी। केई लोग जयपुर रियासत में भिळण री माग करण लागा। सैवट संकरराव री अगवाई में भारत सरकार अेक कमेटी बणाई जिण नै औ काम सूंपीज्यौ क वा सावळ जाच पडताळ कर नै बतावै क घणा लोगा री मसा काई है अर मत्स्य संघ नै किण रै साथै मिळावणो वाजब है। आ कमेटी पूरी छाणबीण पछ भारत सरकार नै बतायो क घणकरा लोग राजस्थान संघ में भिळण री मसा राखै। आठ राजा ई राजस्थान संघ में भिळणो चावता हा। इण सारु सैवट 15 मई 1949 रा मत्स्य संघ नै राजस्थान संघ रै साथ अेकमअेक कर दियो। इण गत सूं घणी उठक पटक पछै सैवट ऊगणी रियासता री राजस्थान संघ रै साथै अेकीकरण हुयो।

संयुक्त राजस्थान

लखाऊ राजस्थान में डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ अर कुसलगढ छोटी छोटी रियासता ही। भारत सरकार री रियासती महकमो इण रियासता नै मध्य भारत अर गुजरात में मिळावण रा असूबा करण लागो पण इण रियासता रा राजा, जन नेता अर लोग सगळा ई इण बात नै मानण नै त्यार नी हा अर सगळा सांस्कृतिक अेक रै पाण राजपूताना री रियासता रै साथै मिळण री मसा राखता हा। रियासती महकमो अेक दूजी तजवीज सुझाई जिण मुजब राजपूताना री छोटी छोटी रियासता—कोटा, बूंदी, झालावाड़, टोंक, किसनगढ, साहपुरा, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ री रियासता अर लावा-कुसलगढ रा खुदमुख्तार ठिकाणा मिळा नै संयुक्त राजस्थान बणायो जावै। पुराणा जमाना में कोटा, बूंदी अर झालावाड़ री इलाको हाड़ोती नाव सूं ओळखीजतो अर डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ, कुसलगढ बागड़ नाव सूं चावो हो। हाड़ोती अर बागड़ रै बीचै उदयपुर रियासत ही जकी टट मूं मेवाड़ नाव सू जगचावी ही। रियासती महकमै री नीति मुजब उदैपुर मोटी रियासत हुवण सू न्यारी रय सकती ही। महाराणा री खुद री आइज मरजी ही क उदपुर री नांव बणियो रय जो मिळणो इज व्है तो दूजी छोटी रियासता उदपुर सागै भळई मिळ जावै। उदपुर प्रजामंडल रा नेता महाराणा री मरजी नै पसद नी करता हा वारो मानणो हो क राजपूताना री

राजस्थान मे भिळिया सू मैं मोटोडी रियासता ई डिगू पिच्छु हुगी । बीकानेर महाराजा सादुलसिंघ आपरै दीवान नैं महाराणा कनै मेल अर कहाडियो क महाराणा कोई अडो फेललो नी करैं जिण सू दूजा रजवाडा नैं ई मुकणो पडै । महाराणा पड तर दियो क हुमैं समैं बदळ ग्यो अर सगळी रियासता रै मुकणे में इज सार है ।[36] 20 फरवरी 1948 रा सरदार पटेल बीकानेर महाराजा नै कागद मेल'र थावस दिरायो क जठा लग मोटी रियासता रा राजा अर जनता री राय नी व्हैला उठै तक उण रियासता री ि
असल मे राजस्थान री जनता री चावः
हुजावै । 'अखिल भारतीय देसी राज्य
सभा 20 जनवरी 1948 नै इण मत री प्रस्ताव ई पास कर दियो हो । इण बेळा जागीरदार जलूस काड अर राजावा नैं भरोसो दिरायो क वै राजावा रै सागै है अर उणा री रियासता बणियोडी रेवणी चाइजै । इण सू आ बात भारत सरकार रै हीयै ढुकगी क जे सगळी रियासता री अकीकरण नी हुयो तो सामंती ताकता रा फितूर नी मिटैला । भळै जोधपुर, जैसलमेर अर बीकानेर री रियासता पाकिस्तान रै कानड रै अडोअड ही इण सारु आ माथै कदेई हमलो हु सकता हो। अं तीनू रियासता काळ रै वख मे भिळियोडी ही अर इकातरै काळ अठै रा लोगा नैं भूख-बिखै सू फफेडतो हो । असल मे रियासती मेहकमैं री मरजी तो आ ही क इण रियासता नैं काठियावाड साथ मिळा अर भारत सरकार रै सासन हेटै अेक राज्य बणा दियो जावै । राजस्थान रा जन नेता इण बात री विरोध करियो इण सारु रियासती मेहकमैं री दाळ गळी कोयनी ।

कांग्रेसी नेतावा रै सागै समाजवादी नेता ई महाराजस्थान री माग करण लागा हा । नवम्बर 1948 मे जयप्रकास नारायण उदैपुर री अेक आम सभा मे महाराजस्थान री माग करी अर आ भभकी दी क 20 नवम्बर ताई जोधपुर, जैसलमेर अर बीकानेर नैं राजस्थान मे नी मिळाया तो आन्दोलन छिड जावैला । राजस्थान री सगळी रियासता री अेक ई विधान अर सासन हुवणो जोइज ।[40] दिल्ली मे डा. राममनोहर लोहिया री अध्यक्षता मे 'राजस्थान आन्दोलन समिति'
... रियासता आगे
...
कनै महाराजस्थान बणावण माथै उछरण टाळ चारो ई काई हो । मोटोडी रियासता री रुण जाणण खातर रियासती मेहकमैं रा सचिव जयपुर अर बीकानेर रा दीवाणा सू बात चीत कीवी । जयपुर रा दीवाण सगळी रियासता री अेक इकाई बणावण रै खिलाफ हा । वै राजपूताना री तीन इकाइया बणावण री मंसा राखता हा— (1) संयुक्त राजस्थान (2) जयपुर, अलवर अर करौली नैं मिळा अर अेक इकाई (3) जोधपुर, बीकानेर अर जैसलमेर री आथूणो राजस्थान री न्यारी इकाई । भरतपुर अर धोलपुर रियासता नैं उत्तरप्रदेस मे मिळावण री सुझाव ई दिरीज्यो । इण सुझाव सू मेनन अर दीवान राजी नी

हा क्यू क वै तो सगळी रियासता री अेक इकाई वणावण रा विचार राखता हा।[40] इण माथै समाजवादी लोगा री आ डाटी ई असर करियोडी ही क जै राज पूताना री सगळी रियासता री अेक ईकाई नी वणी तो वै आन्दोलन छेड देवैला ।

3 सितम्बर 1948 रै दिन मेनन जयपुर जोधपुर अर बीकानेर इा राजावा सू वातचीत करी । तीनू राजा आप आप री रियासता रै विलय सारु त्यार नी हुया ।[41] बीकानेर महाराजा तो इण वेळा साफ कह्यो क जद बीकानेर न्यारी इकाई रै रुप मे रेवण री हकदार है तो उण माथै अणूती दबाव क्यू नाखियो जावै है ।[42] मेनन बीकानेर पूग नीठा महाराजा नै ठडा मीठा करिया । जयनारायण व्यास जोधपुर महाराजा हणवंतसिंघ सू ववई मे 9 जनवरी 1949 रा बातचीत कर वानै समझावण रा कळाप करिया ।[43] इण गत तीनू राजावा सू घडी घडी मिळ मिळाय अर मेनन वानै ज्यू त्यू समझाया अर सेवट महाराजस्थान मे मिळण सारु हाकारो भरवा हज लियो । 14 जनवरी 1949 रा उदैपुर री अेक आम सभा मे पटेल अेलान करियो क जयपुर, जोधपुर, बीकानेर अर जैसलमेर रियासता राजस्थान सघ मे मिळण सारु हामल भरदी है ।[44] जयपुर नरेस इण सघ रा राजप्रमुख अर जयपुर राजधानी मुकर हुई । मेवाड महाराणा [illegible] बणावण री वात [illegible] —

जयपुर 18+5.5=23.5 लाख रिपिया
जोधपुर 17 5+5 5=23 लाख रिपिया
बीकानेर 17+5.5=22.5 लाख रिपिया

आ बात ई खुलासै हुगी क राजप्रमुख अर विधान सभा भारत सरकार रै केरै में रेवैला । विधान सभा मे अेक लाख आवादी दीठ अेक मेम्बर चुणीजैला । इण राजस्थान री उद्घाटन 30 मार्च 1949 रै दिन हुयो ।[45] जद सू औ दिन 'राजस्थान दिवस' रै रुप मे मनाईज्या करै । जयपुर रा हीरालाल सास्त्री राजस्थान रा पेला मुख्यमत्री चुणीज्या । प्रेमनारायण माथुर, सिद्धराज दड्ढा, भूरेलाल वया, सोभाराम, फूलचद बाफणा, वेदपाल त्यागी, रावराजा हणूवतसिंघ अर नरसिंघ कछवाह मत्री बणाईज्या ।

नवी राजस्थान वणण सू मत्स्य सघ मे खळभळी मचगी मत्स्य सघ री अलवर अर करौली रियासता तो राजस्थान मे मिळण री मसा राखती पण धोलपुर अर भरतपुर रा कीं नेता सयुक्त प्रात में मिळण री तिकडम्बाजी मे लागोडा हा । सेवट भारत सरकार सकरराव अर प्रभुदयाल नै जाच सारु मुकर करिया । लोगा सू मिळ सावळ जाच कर कराय अर दोनू जणा भारत सरकार नै बतायो क थोड़ाक छिदड़केबाजा टाळ भरतपुर अर धोलपुर रो [illegible]

मानखो राजस्थान मे मिळण सारु तासडा तोडावे है। सेवट 15 मई 1949 रा मत्स्य सघ ई राजस्थान मे मिळ्यो।

अेक नवम्बर 1956 ने आवतां आबू अर अजमेर नै राजस्थान मे ठावो ठोड मिळी। इण मुजब रुपाळै राजस्थान रो खरीको उणियारो 1948 मे मत्स्य सघ बणियो जद निखरण लागो अर 1956 मे आबू अजमेर मिळिया पूथको मांखणजोग चितराम उगडियो।

इण गत 342274 वर्ग किलोमीटर मे पसरियोड़ै राजस्थान रो निरमाण हुयो जिण री सालाना आमद बीस क्रोड रिपिया अर आबादी अेक क्रोड साठ लाख ही। 1981 री मरदमसुमारी रै आकडा री ओळिया मे राजस्थान आपरी घणी घणी भौ ताई पसरियोडी जमी रै पाण भारत री कुल जमी रै 10 80% मे फेलियोडो है अर भारत री जमी री दीठ सू दूजो सगळा सू मोटो राज गिणिजै।

अेक खास गिणावणजोग बात आ है क राजस्थान नै आज वाळी फूटरी गत पसक देवण मे राजस्थानी भासा री भेळ घणी भारी रियो। आबू अर सिरोही नै महागुजरात साथै मिळावण री खप्पत हुई जद राजस्थानी भासा रै आसरै इज इण नै राजस्थान में मिळावणा पडिया। भरतपुर-धोलपुर सयुक्त प्रात मे मिळण रा मत्ता करता जद अर हाडोती रा केई रजवाडा मध्यप्रदेस मे में मिळण री मसा करी जद पेरु राजस्थानी भासा आडी आ'र काम सारियो।[66]

आज धोराळ राजस्थान रै की इलाका खातर पाडलो प्रात इण सारु इज पग पटकण रो गाड भेळी कर सकियो क उठै राजस्थानी भासा थोडी निबळी पडण ढूकगी। नीतर जिण प्रातां री भासा सबळी सावठी है उठै मगदूर है कोई पाडला सुस्कार ई करदे। इतिहास इण बात री साख पग पग माथै भरै क भासा री निबळाई हुवै तो मानखै नै अलेखा अबखायां उखणनी पडै।

टीप री विगत :—

(1) जगदीसंसिंघ गहलोत, राजपूताना का इतिहास, भाग 1, पेज 2-3
(2) मित्रा, द इण्डियन ऐनुग्रल रजिस्टर, 1, जनवरी-जून 1947, पे. 108
(3) वी. पी. मेनन, द स्टोरी आफ द इटीग्रेसन आफ द इंडियन स्टेट्स, 69
(4) व्हेई
(5) केम्पवेल-जान्सन, मिसन विद माउंटबेटन, 354
(6) टाइम्स आफ इंडिया, 3 अप्रेल, 1947
(7) (I) बाँबे क्रानिकल, 1 अप्रेल, 1947
(II) हिन्दुस्तान टाइम्स, 5 अप्रेल, 1947
(III) नेसनल हेराल्ड, 2 मई, 1947
(8) वी. बी. कुलकर्णी, ब्रिटिस स्टेट्समेन आफ द इंडिया, 489
(9) ब्रिटिस स्टेट्समेन इन इंडिया, 490
(10) मेनन, द स्टोरी आफ द इटीग्रेसन आफ द इंडियन स्टेटेस, 46 अर 479
(11) मेवाड़ राजपत्र-असाधारण अंक, 23 मई 1947
(12) मेवाड़ राजपत्र, 6 मार्च, 1948
(13) सन् 1931 मे जयपुर 1938 मे उदैपुर, कोटा, अलवर, भरतपुर, धोलपुर, करौली, साहपुरा अर सिरोही में, 1939 में किसनगढ, 1942 मे कुसलगढ, 1943 मे बांसवाडा, 1944 में डूंगरपुर, 1946 में प्रतापगढ, 1947 मे झालावाड़ में प्रजामंडल बण्या ।
1938 में जोधपुर अर जैसलमेर, 1944 में बूंदी में लोक परिसद री थरपणा हुगी ही ।
1942 में बीकानेर मे प्रजा परिसद थरपीजगी ।
(14) राजपूताना प्रांतीय देसी राज्य लोक परिसद री अक्टूबर 1946 री बुलेटिन ।
(15) जगदीसंसिंघ गहलोत री नव भारत दिल्ली, छापे रै खास नुमाइंदे सूं बातचीत जकी 16 अप्रेल 1947 रै दिन इण छापे मे छपी ।
(16) हिन्दुस्तान टाइम्स, 6 अप्रेल, 1947
(16)क लक्समणसिंघ राठोड़, पालिटिकल अैंड कंस्टीट्यूसनल डेवलपमेंट इन दी प्रिंस्ली स्टेट्स आफ राजस्थान, 136
(17) सरदार पटेल कारस्पांडेंस, 1945-50, भाग7, 424-427
(18) व्हाइट पेपर आन द इंडियन स्टेट्स, 33
(19) (I) स्टेट्स रिआरगेनाइजेसन रिपोर्ट, 139
(II) व्हाइट पेपर आन इंडियन स्टेट्स 43 अर 190-197
(20) स्टेट्समेन, 23 जुलाई, 1947
(21) हिंदुस्तान टाइम्स, 20 जुलाई, 1947
(22) वी. पी. मेनन, 252
(23) वी. पी. मेनन, 253-4

(24) राजस्थान राज्य अभिलेखागार पत्रावली, 11(17) पे, 47 (भरतपुर)
(25) मेनन, 257
(26) हिंदुस्तान टाइम्स, 1 मार्च, 1948
(27) हि. टाइम्स, 17, मार्च, 1948
(28) हि टा 20 मार्च, 1948
(29) वी पी. मेनन, 255
(30) वाइट पेपर म्रान इ डियन स्टेट्स, 53
(31) वहेई, 53-54
(32) सरदार पटेल करस्पांडेंस, 7, 396
(33) वी पी मेनन, 261
(34) मेनन, 90
(35) रिचार्ड सेसन कांग्रेस पार्टी इन राजस्थान, 109
(36) करणीसिंघ- द रिलेसस म्राफ द हाउस भ्राफ बीकानेर विद सेंट्रल पावर्स, 337
(37) वी पी मेनन, 363
(38) इंडियन न्यूज क्रानिकल, 12 नवम्बर, 1948
(39) सरदार पटेल करस्पांडेंस, 7, 422-30
(40) इंडियन न्यूज क्रानिकल, 7 दिसम्बर, 1948
(41) वी. पी. मेनन, 112-113
(42) करणीसिंघ, 340
(43) टाइम्स म्राफ इंडिया, 12 जनवरी, 1949
(44) हिंदुस्तान टाइम्स, 16 जनवरी, 1946
(45) अेडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट म्राफ राजस्थान, 1950-51 पे 2
(46) जहूरखा मेहर, राजस्थान कीकर बणियो, माणक, अप्रेल 1983 पे 14

भील आन्दोलन

जहूरखां मेहर

कहोजे क राजस्थान में सरुपांत भीलां री इज वासो ही'र बीजी जातां रै अठी उधरण सूं पेला इण मुलक रै खुणै खुणै मायं भीलां री रम्मत मंडियोड़ी ही पछै दूजी जातां आई अर लाई भीलां में अमरोका रा कदीमी वासियां (रेड इंडियनां) वाळी हुई।[1] नाठदोड़ अर मेड़ी अवखी जागा आसरो लेणो पड़ियो जठै दूजा लोग सोरै सांस पूग ई नीं सकता। आज भील राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र अर मध्यप्रदेस रै खासै लंबै चवड़ै इलाकै में छोरा छोरा बिखरियोड़ा लाधै। राजस्थान में डूंगरपुर, उदैपुर, सिरोही, बांसवाड़ा, जैसलमेर अर जोधपुर में खासा भला भील मौजूद। 1961 री मरदमसुमारी मुजब राजस्थान में 906768, गुजरात में 1124282 महाराष्ट्र में 575022 अर मध्यप्रदेस में 1229930 भील रैवै। 1971 री मरदमसुमारी री वेळा हुयोड़ी गिणती रै लेखै मुजब राजस्थान में 1396026 भील रैवै। आ गिणती देस रै कुल भीलां री 23.68 फीसदी है।[2] मेवाड़ में भीलां इलाको भोमट नांव सूं चावो है। भोमट रो इलाको केई जागीरदारां री जागीरां में बटियोड़ो हो। 1938 में ईस्ट इंडिया कंपनी अर मेवाड़ विचै हुयोड़ै इकरारनामै मुजब भोमट में अमन राखण री जिम्मी कंपनी आपरै ऊपर लै लियो। भोमट री पांतियां में बटियोड़ी ही खेरवाड़ा अर कोटड़ा।[3]

कोरै राजस्थान इज कांई संगळै देस में भीलां रा हवाला ठेट जूनकी वेळा सूं इज मिळण लाग जावै। रामायण अर महाभारत में परोटियोड़ो 'निसाद' सबद असल में भील जात री इज जूनों नांव है। पुराणां रै मुजब मनु रै वस में अंग रै बेटै वेन रै औलाद हुई कोयनी। वेन आपरी साथळ नै रगड़ी जिण सूं काळी डटोड़ सूगलो बेटो जलमियो। वो निसाद (भील) कहाड़ियो। केई लोग महादेव नै भीलां रा आदू वडेरा गिणै। बाण भट्ट री कादंबरी रै हिसाब सूं भीलां रा हवाला जूनै संस्कृत अर प्राकृत साहित्य में ई लाधै। कथासरित सागर में भील सबद मिळै। इण में भीलां रै अेक सरदार रो वखाण है जिण विंध्याचल रै राजा सामा पग रोप अर घणी मडदमी वताई।[4] मानव सास्त्री मजूमदार री मानणो है क भील सबद असल में तामिल भासा रै 'भीलवार' सूं बणियोड़ो है। तामिल में भीलवार रो म्यांनो तीर कवाण राखण वाळो जात व्है। आज तांई तीर कवाण अर भील अेक दूजै सूं काठा किड़'र जुड़ियोड़ा है। असल में तीर कवाण भील री पिछाण बणियोड़ा है। नेमीचंद जैन रै विचार सूं भील सवद संस्कृत रै भिल्ल सूं बणियोड़ो है। रावर्ट सोमार जेड़ा विद्वान 'निसाद' नै भील रो आद वडेरो

सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय

गिरणे। ग्रेडा ई केई लोग है जिके मानै क भील असल मे द्राविड 'बिल्ल' सूं बणियोडो सबद है ।[5]

राजस्थान मे मानखे रा पगलिया जोवण वाळा बतावै क अठै ग्रेक सौ हजार बरसा पेला मिनख रेवता हा । भू डा घडियोडा भाठा रे ग्रोजारा रे पाण, जिका चबल ग्रर लूणी नदिया रे ग्रसवाडे पसवाडे मिळिया है, ग्रो सार काडीजियो क राजस्थान मे वसण वाळे मिनखा रो इतिहास उत्तो इज जूनों है जित्तो क बनास, गभीरी ग्रर बागा जेडी नदिया रे पसवाडा माथे रेवणिया मिनखा रो है, ग्रेक लाख वरस जूनो ।[6] भील जे राजस्थान मे ग्राद जुगाद सू बसियोडा हा तो वारो इतिहास ई ग्रेक सौ हजार वरस जूनो हुयो । भाला रो ठेट जूनको करणो रा तो की खरीका ग्रावड लाधे कोयनी पण लकाऊ राजस्थान रा भील ग्रेकलव्य री बात पणँ ठरकै सू करै ग्रर महरिसी वाल्मीकि नै ई भील गिणै ।[7]

626 ई॰ रै ग्रेडै छेडै भीला री मदद सू नागादित्य नाव रो ईडर रो राजा उदैपुर रै पागती नागदा री थरपणा करतो निगै ग्रावै । गुहिल री ग्राठवी पीढी मे बापा जिणरी ग्राडो वेळा मे भोल ग्राडा ग्रा'र टेवको राखो । बापा नै राजा बणावण मे भोल घणोज मदद करी । टाड लिख्यो क नवै राजा रै लिलाड माथै ग्रापरै लोई सू तिलक करण रो काम जद पछै भील नै सू पोज्यो । ऊदरी ग्रर ग्रोगना रा भील देस री ग्राजादी सू पेला ताई पाट वेठण वाळै राणा रो तिलक ग्रापरै लोई सू काडता । तिलक काडिया पछै ग्रोगना रो भोल ग्रापरी बाथा मे उन्चा ग्रर राणा न गादी बेवाणतो । सोळवी सदी मे कीका (प्रताप) भीला री मडदमी ग्रर गाड रै बूतै चोथाडी सदी ताई कीडी दळ ग्रकवरी फौजा रै सामा पग रोपिया ग्रर जस धिन री भागी बणियो । वेळा-कुवेळा भीला साची टेवको राखो जिण सू बारी किरियावर चवडे धाडै ग्रगेजण रै मोजू मतै मेवाडी झिडै माथै तीर कबाण समेत भील नै ठावी ठोड मिळी ।

सिरोही, कुसलगढ, डूगरपुर ग्रर बासवाडा रै इतिहास बाबत कठा रुखाळीजती बाता मे भीला री सामधरमी पाळता हसता मुळकता ग्रापोग्राप नै होमण री ग्रलेखा मिसाला मोजूद । घणा घणा पठ्ठ बजावता सूरमा जिकण काम नै तरवार कटारी सूं पार पटकता भिचकै उडा ग्रबखा ग्रचूकरा काम भील भालै, भाठै क मुठ्ठी सू इज भचकै पार पटकता जेज नी करै । साव छडो तना जान भील रोई रा मोटा मोटा जिनावरा री सिकार ग्राख फुरकावा जितै जितै कर काडै । रोई माथरा बिचै बीम कोस री पेंडी भील सारु ग्रगेई भारी नी । रोई री बाता सारु भील री कदीमी जाणकारी रो की छेहो पार ई नी । सोजो सावचेती ग्रेडी क पत्तो खडकण री म्यानो बता देवै । पागी ग्रेडो क भाखर रै भाठै माथै पडियोडा पगा सू सावड लै'र ठेट ठायै पूग जावै । इणीज गत घसक री ग्रलेखा बाता भीला सारु चावी ।

रिंद रोई अर अबखं भाखरा बिचै जोवारी रो गाडो गुडावण रै जतनां मे जूंझता भीला माथै नवै जमानै री बाता रो रग गत्तूई नी चढियो। भोपै-भेरु अर टाणै टोटकै रो घोस भीला माथै अजै ई जमियोडी। जीवणै हाथ माथै चितराम कोरावण रो गजब ई चाव इण सारु घणकरा भील बूकियै सू कळाई ताई जीवणो हाथ केई भात रा चितरामा सू भरदै। स्हैरो जोवण सूं कटिया फटिया भील आपरी जूनकी चोखी भूंडी बाता नै आज ताई ताणिया वैवै अर कोई आ वाता नै सुगावै तो वानै घणो खारो चिडको लागै। इण सारु केई वेळा भीला रै समाज री कुरीता सुधारण रा कळाप हुया तो भील चिडकिडिया खावण लागा।

राजस्थान रै इतिहास रा जगचावा लिखार कर्नल जेम्स टाड लिप लिपाय 12 मई 1825 रा नीठा ब्रिटिस सरकार अर भीला बिचै समझोतो करायो। इण समझोतै मुजब भीला इण बात रो कवल करियो क वै चोर, धाडायतो क अगरेजी सरकार रा वैरिया नै आसरो नी देवैला। पण मन मतै रोई मे दावै जठो दोठा देवणवाळा भील समझोतै रै घेरै मे कद ताई रोडीजता। अगरेजी सरकार रै सुधारा सू कर नै खटपट सरु हुई। 1881 ई० मे अगरेज हकूमत भीला री मरदमसुमारी, भीली इलाका (भोमट) मे थाणा री थरपणा, भीला नै दारु छोडावण जेडा कळापा माथै उतरी। पोढी दर पोढी वडेरा रै खाधा माथै पळती फळती वाता नै अगरेजा रै केया सुगाय अर ठोकर ठाकण री कुण बुदीगार अगेजतो। अगरेजा रै सुधारा री मसा वावत भीला बिचै जित्ता मूंडा उत्तो वाता हूवण ढूको। उण दिना अफगान जुद्ध अगरेजा सारु मरणो करणनो हुयोडो। भीला मे आ बात जोर पकड लियो क भीला री गिणती अफगान जुद्ध सू जुडियोडी है। जुद्ध मे अणूती खरच हूवण सू अगरेजो खजानै रा बाघा बोलगा। अगरेज अणूतो आफळिया खावै है। भीला री गिणती रा लेखा इण सारु लिरीजै क मिनख दीठ टैक्स लगा अर अगरेज आमदनी री मसा राखै है।[5] सोजीवान भीला री मानणो हो क अफगान जुद्ध मे अगरेजा रै फाजिया रा घणा इज पोलाळा हुया है बचिया कुचिया केठा कद पग छोड द। भीला रा लेखा इण सारु लिरीजै क सावळ आच पडियां मोटियारा नै पकड पकड अर जुद्ध मे झोकणा है। केई बूझबूझाकडा रै हीयै अफगान जुद्ध री वाता नी ढूकी वारो मानणो हो क गिणती हुया पछै अणूतो माती लुगाया नै वारै जोड रा कोपता व्है जेडा भडा मिनखा नै सूप देवैला जर साव मरियल मडी लुगाया नै वार लै पडता मुडदार मडकल, खेलरा हुयोडा मिनखा नं सूं पैला।[6] मूंडा जित्ती वाता हूवण लागी। इण गत री घसका अर गपोडा गाव गाव चावा हुया। 1881 ई० मे सुधार कानून लागू हूवता ई भील भीमर नै भाभरा भूत हुग्या। इण वेळा बडापाल नाव रै थाणै रै थाणेदार बधूनापाल नाव रै भील नै हेर लावण मारु सिपाई मेलियो। असल मे तो इण बुलावै री जड जमी रो झगडो हो पण पेला ई भीभरियोडा भीला केठी काई वाता घडी न भागी। सेवट आ ई हुई क थाणै सू आयोडै सिपाई नै तो भीला मार इज काढियो। इत्त मे इज गई नी हुई। आगा

थागी भीं रा कोई हजार तीनेक भील भेळा हु'र पूगा थाणे माथै। वडापाल रै थाणे माथै घेरो घाल'र थाणेदार समेत सोळै जणा नै तीरा सू बींद काडिया। उदेपुर खेरवाडा मारग नै सावळ काबू कर नै थाणे'र बाणिया री दुकाना रै धू धकी चेप लाय लगादी।[10] वावड पूगा मेवाडी राणे अेक फोजी टुकडी वईर करी। इण बिचै अलसीगढ रा भील ई बिड ग्या अर साची उधगड माड दियो। अेडी भारी गडवड मची क अगरेज सरकार थे जी जी नै तुरतौतुरत उदेपुर पूग जाब्तै रा जतन करण री होकम दियो। कर्नल ब्लेयर इण वेळा भीला रै बिडण री जो वजे बताई वे इण मुजब है —

(1) भीला री मसा हो क जं वानै इण बात रो मुगो व्है क फलाणी लुगाई डाकण है तो विना अगर मगर करिया उणनै मारण री छूट तुरत मिळै।

(2) भोमट (भीली इलाका) सू पुळिस चोकिया रो पापो कटै।

(3) भीला रै आपसरी कजिया मे महाराणा मवै ई टाग नी अडावै।

(4) आगै सू मरदमसुमारी रो नांव ई नी रेवै। भीली इलाका मे गिणती फिणती हरगिज नी व्है।

इण वेला हुयोडै बखेडै री जाच कर्नल ब्लेयर करी। ब्लेयर रोळै री निवेडो करण सारु खासी माथापिच करी। भीली इलाका मे फिर फिर नै दाठीक गिणीजण वाळा भीला सू सल्लासूत करी। ब्लेयर नै भीला सू बतळ करिया इण बात रो ई गिनार हुयो क मेवाडी फौज केई वेळा भीला माथै नी नी जेडा जुल्म करिया। सगळी नाठ दोड पछै ब्लेयर भीला नै समझाया क वान मेवाड सरकार सू बातचीत करणी जोईजै जिण सू सुलै सफाई हुजाव अर आगै रोळा रपटा नी व्है। ब्लेयर री खप्पत बिरथा नी गी सेवट रग लाई अर भीला मेवाडी अफसरा सू बातचीत री हामल भरली। सगळी बाता धारिया विचारिया पछै भीला रा कोई पाचेक बीसी टाळवा दाठीक लोग मेवाडी मुत्सद्दिया सू बातचीत सारु रखबनाथ मे भेळा हुया। मुकर दिन मेवाड रा अफसर ई उठ जाय पूगा। गतौगत बातचीत हुवण लागी। ब्लेयर लिख्यो क सगळी कारवाई रा ढग ढाळा सावळ इज दीसता हा अर यू लखावण लागो क बात ठाणे आयगी। अजै बात-चीत हुवतीज ही क दाडी माय सू साप निकळियो अचाणचक अेडो राफारोळो हुयो क सगळी बात विगडगी। हुई यू क मेवाड रा मुत्सद्दी स्यामलदास[11] अेक भील मुखिया नै पूछियो क आखिर थ सरकार सू समझोतो क्यू नी करो? घोचै री छूटणो अर माथ रो फूटणो वाळी हुई। सवाई स्यामलदास भील मुखिया नै पूछियो अर सागै पल इज अणफै मे वी सिपाई आप री बदूका भरण लागा। भील समझौतो पार पटकण री धार न आया हा इण सारु सगळा साव छडा इज हा। तीर कवाण तो आगो अेकण कनै ई गाफण दुरादुर नो हो। अठी तो स्यामलदास घुडकी पिलाई अर ऊठी साग पल इज बदूका भरीजण लागी जिण

सू भील समभिया दगो हाका दडवड मचगी। भील तो पड पड नाठण लागा। इण कोतकरासं में किणी हळफळीज्योडं बदूक छोड दी। पछेस तो कुण कं ब्याव भू डो। ग्रेडो राफारोळो मचियो व सगळा डाफी चढगा। पडता गुडता भील भाखरा मिळगा। म्रा वात घणी माजणी बिगड ग्रर भीला रं गाव गाव पूगी। इण सू भरणी करणी कर नं भील ग्रान्दोलन माथं उतर ग्या। जागा जागा घणी रोळघट मची। सेवट मेवाड महाराणा खुदोखुद विचं पड पडाय भीला सू सम-झोतो करियो। इण वेळा भीला री घणखरी वाता हाकरीजगी। बडापाल रं थाणेदार ग्रर उण साथं बीजा लोगा नं मारण वाळा भीला नं माफी बक्सीजगी।[12] भोमट री मरदमसुमारी ईं टळगी।

भीला रं इण बखेडं रो बखाण चावा क्रातिकारी केसरीसिघ बारहठ इण मुजब करियो[13] :—सवत 1937 रं वेसाख मैं हिन्दुस्तान मे मरदमसुमारी हुई। मेवाड मे भीला री गिणती री बेळा ग्रेक डफोळ बोलाक थाणेदार री लप्पर चप्पर सू भारी बवडर मच ग्यो। जद भील पूछियो क म्हौरी गिणती किण सारु व्है तो थाणेदार लपरको लं लियो क थारी लुगाया माय सू लब तड ग नं लाबा डाग मिनखा ग्रर ठीगणी नं बारी जोड जोग खाटरा (गुटिया) मिनखा नं सू प देवाला। इण माथं भील भीभरग्या ग्रर ढोल पीट बलवो कर दियो। लाग बाग री जास्ती ग्रर लूट खसोट माथं रोक सू यं खार खायोडा तो हाइज। इण मोकं साचो रोळो माड दियो। थाणेदार नं मस्करी भारी पडगी। थाणेदार ग्रर उण साथं जित्ता ग्रेलकार हा सगळा नं मारिया पछं ग्राख मगरा जिलं मे राज रा ग्रादमिया रं ग्राफत करदी। विद्रोह री लाय कोई तीन लाख भीला बिचं चोफेर लगगी। सेवट इण बखेडं नं निवडावण सारु स्यामलदास, सेना रा कमाडर-इन चीफ मामा ग्रमानसिघ, लोनार्गन ग्रर पुळिस ग्रफसर रहमानखा नं महाराणा ग्रेक खासी भली फोज साथं मगरा जिलं थकी वईर करिया। मेवाड री भीलवाड री सिलसिलो टेट बबई प्रात ताई पूगोडो। भील-कजियो कठंई ग्रगरेजी हकूमत रं इलाका मे नी फैल जावं इण सारु ब्रिटिस सरकार खेरवाडा री छावणी रा दो ग्रगरेज ग्रफसरा नं उदंपुर री फोज मे मेल दिया।

खासी नाठ दोड पछं उदंपुर रा ग्रफसरा ग्रर भील पचा विचं बातचीत मुकर हुई। म्रा बात तं हुई क ग्रेक कानी राज री तोपखानो ग्रर फोज रेवंला ग्रर दूजं कानी भील ऊबा रेवंला। दोना रं ग्रेन मभ मे भील पच राज रा ग्रफसरा सू बातचीत करंला। बातचीत मे मिळण वाळा दोनू पख्खा रा लोग ग्राप साथं किणी किसम रो हथियार नी राखला। कोई पाच सौ भील पचा नं स्यामलदास समभावण लागा। ग्रागती-पागती भाखरा माथं केई दो लाख भील इण बातचीत रो नतीजो सुणण सारु ऊतावळा पडता हा। इण वेळा किणी ग्रचपळं भील कुचमाद करी ग्रर ग्रेक तीर छोडियो जिको राज रं ग्रेक सिपाई रं पग मे जा लागो। सिपाई नं थोडो खटाव राखणो हो पण उण रीस में पाछी बदूक

छोड़ दी। बदूक रौ भोटकौ हूवताई लाखा भील दगौ दगौ री आवाज सूं अंवारा गूंजा दियो। स्यामलदास इण वेळा घणी सावचेती अर नेठाव रासियौ अर भील पचा नें कह्यौ क म्हे सगळा साव छड़ा थारे बिचमें ऊबा हा पछे दगौ केडो ? किणी मूरख फौजी अणफे मे कालाई करदी है, म्हैं हुणौं उण डफोळ नें थारै सामी पेस करु। थे मन पड़ै जिकी सजा उणनें दे सको। इण माथै भील पचा आप आप री पछेडी हाथ मे लें र हिलाई। पल भर मे इज हाकादड़बड़ रुकगी। बदूक छोडण वाळै सिपाई नें हाजर करियो। इण वेळा स्यामलदास कह्यौ तीर छोडण वाळै भील नें ई लायो आवें। थोडी ताळ मे पच उण भील नें हाजिर कर कह्यौ क पेला इण कुचमाद करी सो आप इण नें डड सुणा दो। इण माथै स्यामलदास कह्यौ क कपूत वेट री गलतिया बाप माफ कर ज्यू म्हैं महाराणा रै नाव माथै इण भील न माफ करु। इण पछैपचा सिपाई सारु माफी री ऐलान ई कर दियो। सगळी बात पाछी ठाणै आयगी। पण बदूक छूटण री वेळा लाखा भील किलकारिया करी जद पूणंक भील माथै डेरै मे पडिया दोनूं अगरेज अफसरा री जीव जागा छोड दो अर दोनू जणा घोड़ा माथै काठी धरण जित्ती टेम गमावणौं ई बिरथा गिण खेरवाडा थकी ततीसा मनाया। खेरवाडा पूग दोना अेक रपोट ब्रिटिस सरकार नें मेली जिण मे लिख्यौ क मेवाड रा अफसर साव डफोळ है, बिना हथियार, बैरिया रैं बिचै ग्या परा। भीला उणा माथै हमलौ कर दियो। इण रपोट माथ ब्रिटिस सरकार महाराणा नें लिख्यौ क भीला रै रोळै नें दबावण मे मेवाड री ढिलमिल नीति री असर उण री सीव सू जुडियोड ब्रिटिस सरकार रै गुजराती इलाकै माथ ई पड सक। भीला री बखेडौ तुरत दबायो जाव। इण रै पडूतर मैं स्यामलदास रै मारफत मेवाड सरकार लिख्यौ 'जिकण ताकत रै बूतै महाराणा आपरी इण वसी माथै 1200 बरसा सूं राज करता आया है वा ताकत अवार ई महाराणा कनै मौजूद है। ब्रिटिस सरकार तौ अणदाडै आई है, म्हानै उण री मदद री की जरुत नी है। औ मुकाबलौ किणी बारलै बैरी सू नी है महाराणा आपरा लोगा नैं मार अमन री मसा नी राखै। प्रजा साति सू बेटं दाई पुचकार नें समझाई जा सक। ब्रिटिस हकूमत नै आपरै इलाकै मे बखेडै री अदेसो है तौ आपरै घर री प्रबध उणनें आप इज करणी पडसी। इण बात री जिम्मौ मेवाड री भवै ई नी है" आ ई कहीजै क साच थावी हुया अे जी जी दोनू भगोडा अगरेज अफसरा नै मोकूफ कर दिया।[14]

भीला सूं मेवाड री समझोतौ हुया मेवाडी इलाका मे तौ निवेडौ हू'र केई दिना सारु ठार वापर ग्यौ। पण घोळियै न उठायो जित्तै काळियौ वेठग्यौ। उदैपुर नें चेन आयौ जित्तै डूगरपुर मे भचामच मचगी। 13 जून 1881 रा डूगरपुर में भीला 9 मकराणिया नें मार काडिया। राज रा कारिंदा मौकै माथै पूगा तौ वा माथै ई तरवारा अर तीरा रा वार हुया। सेवट राज रा 300 बस्तरबद सिपाई भीली इलाका मे बखेडौ रफा दफा करण रै मत्तै सू मेलीज्या।

इण फोज घणी नाथावती करी। रोई में छडी विछडी भीला री सू पडकिया रै तुग्गी लगा अर पापो इज काट दियो। चार भील तो मरिया अर केई कुटीज नै लोईझाण हुया। अठी भीला रा मरमट गाळण रै मत्तं सू मेवाडी फौज 16 मार्च 1882 रा मोमट मे बड भीला नै साजा फफेडिया। सेवट दोवडी मार सू भील डरु फरु हू डाडण लागा जद 28 फरवरी 1883 रा समझोतो हुयो।[15] इण समझोतै री खास गिणावण जोग बाता इण मुजब ही :—

(1) भील भ्रा बात अंग्रेजली क किणी लुगाई माथै डाकण री तोमत धर उण रा भूंडा ढाळा नी करेला।

(2) भीला काळीजी (देवी) री सोगन लें'र समझोतै माथै पूरै अमल री कवल करियो।

(3) इण समझोतै पेटै भीला आपरा सगळा सस्तर राज नै सूं प दिया। रोई मे जीवारी रो थाको धकावण सारु भीला आप कनै कोरा तीर कबाण इज राखिया।

(4) भीला जो उधम मचायो अर मार काट करी उणरी अंवजी 2100 रिपिया डंड रा भरेला।

(5) अो ई कवल हुयो क डोडेक मईनै मे मकराणिया न मारणवाळा गुनेगारा नै राज कनै पुगाय देवेला।

इण समझोतै पछै केई दिना अमन-चैन वापरय्यो। इण गत उगणीसमी सदी रा भील आन्दोलन पार नी पडिया अर वखेडो करण वाळा भील साचा किचरीज्या। इण बात माथै सावळ गिनार करिया आ बात खटकै क भील मरण मारण माथै तुलियोडा अर उणामैं वीरता री कमी नी पछ वानै पटक पछाडी क्यू लागी। उगणीसमी सदी मैं भीला जकी उछळ कूद करी वा साव विरथा क्यू गी। इण आडो रै खुलासै सारु उगणीसमी सदी रै छेलं छेडं हुयाडी सगळी बाता नै निरखा परखा तो मैं बाता सामी आवै —

(1) उगणीसमी सदी रा भील किणी खास मुद्दै सारु आन्दोलन नी करियो। असल मे इण वेळा रो घणकरी बाता भीला र अबूझपण अर कालाई रा नामून लखावै। वापडी बूढी ढाडी लुगाया माथ डाकणपण रो काळस मड वारी क्पीता करण अर मरदमसुमारो नी हूवण देवण रो आडो करियोडा भीला री वळु कुण बणतो। आप भीला माथ सू कई सोजोवान अर सावचेत हा जिकै इण राळधट मे भेळा नी मिळिया तो वाई इचरज। इण मुजब नाकुछ नासमझी री वाता नै लें'र पग पटकण सू इण समै रा भील आन्दोलन खरीकं म्यानै मे आन्दोलन हाइज वोयनी। जद आरो जन आधार कोकर बणतो।

(2) इण वेळा भीलां री अगवाई करण वाळा पच जोग अर सावचेत नी हा। घर्ण आवता गोविंदगरु अर मोतीलाल तेजावत जेडा नेता भील आन्दोलना री राछा सामी जद आन्दोलन कारगर वणिया।

(3) उगणसमी सदी में भीली समाज मे घर करियोडी कुरीता नैं खतम करण रा कळाप करण वाळी कोई सस्या नी ही। घर्ण आवता 'सप सभा' 'अेको' अर सेवा सघ' सरीसो सस्थावा भीली समाज री कुरीता काटण रा जतन कर भीला री ऊंघ उडावण सारु वानें सावळ छछेड'र चेतावणी रा चू ठिया भरिया जद भील चेतन हुया। पेला इण गत री सस्थावा नी हुवण सू भील कुरीता मे फळीजियोडा रिया अर अेक इकळास बिना छडिया बछडिया भीला पग पटकिया तौ बात पार नी पडी।

(4) भोमट रा भील जागीरी जुल्मा सू कुटीजता अर महाजना रै हाथा सू लुटीजता। इण दोवडी मार रैं साथै राज री लाग-बाग अर वेठ वेगार सू थाँमैं साव नाजोगपणो अर निवळाई घर करियोडी ही। आप भीली समाज री कुरीता आगै ई पतळी छा मे भळै पडण वाळै पाणी दाई भीला री गत बिगाड राखी ही।

(5) उगणीसमी सदी मे भीला अहिंसात्मक आन्दोलन री आसरो लेवण री बजाय राज री फोजां सामा पग रापण रा कळाप करिया। इण गत रा झगडा सातरा हथियारा सू पार पडं। अगरेजा अर वारै पिठू रजवाडा कनै बदूक तमचा ई काई तोपा ताई त्यार ही जद गोफणा अर घोचा रै तीर कबाणा रा कठै थाग लागता।

(6) उदैपुर, डूगरपुर, सिरोही, बासवाडा अर मारवाड दाई गुजरात रा कितांई इलाका में भील वसियोडा। सगळी रियासता मे इण बात री अेको ही क भीला नैं चळण ई नी देवणा। इता रजवाडा रै फोजबळ सामी छडिया बिछडया छडा भील टिकता ई किताक।

(7) ब्रिटिस हकूमत रा सगळै रजवाडा सू घर रनामा हुया थका इण सारु अठिनै वडियै रजवाडा री टेवकी राखण सारु मेरामाड ट पावर अडीजन ऊभी।

वीसवी सदी मे जिकै भील आन्दोलन चेतिया वै पेली वाळा दाई अणखादो मे हुयोडा रोळा नी पण सावळ धार विचार नैं जुल्म जास्ती रै खिलाफ हुयोडा आन्दोलन हा। बीसवीं सदी री सरुपात मे, चिपताई तो भीला नैं गोविंदगरु अर थोडाक पछै मोतीलाल तेजावत जेडा खरीखा अर सतवता नेता मिळिया। इण बेळा अेडा जबर आन्दोलन हुया क भीली रेवास वाळा रजवाडा रैं साथै आप अगरेजी सरकार री पीडिया धूजण लागगी।

गोविंदगरु री जलम सवत् विक्रमी 1915 रा माह मइनै रै चादरण पख री पूनम (20 दिसम्बर 1858) रै दिन हुयो।[16] डूगरपुर राज रै बासिया गाव में श्रेक विणजारा गवाडी मे जलम लेवण वाळा गोविंदगरु घकं जावता भीला रै श्रान्दोलन रा श्रगुवा बणिया। गाव रै पूजारी कन लिखणी पढणी सीखण वाळा गोविंदगरु श्रसल मे भणिया तो कम पण गुणिया घणा। गाव रै इण पूजारी रो सिप्पो गोविंदगरु माथै घणो इज जमियो क्यू क साव श्रदना विणजारा गिवाडी रा हूवता थका ई सिनान श्रर पूजा पाठ करिया टाळ भवं ई नी जीमता। जिण घर मे दारु-मास रो सेवन हूवतो उण घर रै श्रन्न रो दाणो ई मूडं मे घरणो पाप गिणता। गळ मे रुद्राक्स री माळा राखता। इण गत रै सात्विक जीवन सू कर नै लोग श्रानै भगतजी श्रर गोविंदगरु जेडा नावा सू श्रोळखण लागा। भगवत् गीता माथै पक्को भरोसो राखण वाळा गोविंदगरु उण समै री राजनीति री पूरी जाणकारी राखता।

सन् 1880-81 मे दयानन्द सरस्वती राजस्थान री दोरो करियो। श्रजमेर मेरवाडा हूवता स्वामीजी उदैपुर पूगा। इण बेळा गोविंदगरु स्वामीजी सूं मिळिया श्रर खासी बेळा स्वामीजी र साथै रिया। स्वामीजी रै इण सतसग री गोविंदगरु माथै घणो इज श्रसर पडियो। कहीजै क इण सतसग रै श्रसर सू इज घकं श्रावता गोविंदगरु 'सप-सभा' री थरपणा करी।[17] तोस बरस री उमर मे गोविंद स्वामीजी सू मिळिया श्रर कोई दो बरसा ताई वारै साथै रिया। कहीजै क इण बेळा गोविंद भीला री काया कळप री घार ली। स्वामीजी सू भीला बिचै काम करण री छूट लै'र गोविंद भीला बिचै पूगा श्रर कोई चोथाडी सदी (ई० 1883-1908) ताई भीला नै सगठित करण रै जतना मे जुत ग्या।[18]

भीला बिचै घूम फिर श्रर गोविंदगरु 'सप सभा' नाव री सगठन थरपियो। श्रठै फेर श्राई बात गिणाईज सकं क गोविंदगरु न ई श्रापरी बाता भीला रै हीयै ढूकावण सारु राजस्थानी भासा री इज श्रासरो लेणो पडियो। श्राप 'सप सभा' राजस्थानी री इज सबद है। सप री श्मानी श्रेको, मेळ, सगठन, स्नेह, भाईचारो श्राद है।[19] कहीजै क सभा री थरपणा किणी राजनतिक दीठ सू नी हुई ही पण भीली समाज री कुरीता वटिया राजावा रै गिरै हुजावती। भीला मे श्रक रा जतन ई राजा-जागीरदार र भारी पड सकता हा। इण सारु जागीरदार सप सभा माथै भुटता किडकिडिया खावण लागा। गोविंदगरु सप सभा रै जरिय भीला बिचै जिण बाता नै फेलावण रा कळाप करिया व इण मुजब गिणाइज सक :—

(1) चोरी, धाडै क लूट जेडी गैरकानूनी वाता र नेडो ई ना फटकणो।
(2) दारु क मास रै हाथ ई नी लगावणो।
(3) करसण श्रर मजूरी सू परवार रो पेट पाळणो।
(4) सिनान, भजनी, घ्यान जेडी बाता श्रपणा श्रर सात्विक जीवन बितावणो।

(5) गांव गांव मणाई री पोसाळा री थरपणा कर टाबरां नै जरुर भणा-वणा। मोटियारा अर अदलडा नै ई थोडा घणां लिखण पढण जोग बणावण री कोसीस।

(6) आपसरी कजिया नै पंचायता सू निवेडणा।

(7) अन्याव अर जुल्म री सामनो पूरी ताकत सू करणो।

(8) बेठ-बेगार नी देवणी।

(9) टाबरां नै सोजीवाना री सगत मे राख अर वां में चोखा सस्कार निपजावणा।

(10) विदेसी चीजां नै सुगावता ठोकर ठोक अर देसी चीजा नै इज परोटणी।

सप सभा री घणकरी बाता री राजनीति सू की तल्लो बल्लो नीं हो तोई राजा, जागीरदार अर राज रा अफसरां नै बेठ-बेगार नी देवणो, मणूताई रै सामा पग रोपणा, राज री कचेडियो रो आसरो लियां बिना आपसरो कजिया निवे-डणा इत्याद मेडी बाता हो जिण सू राजावा अरजागिरदारां रै चिडको लागणो इज हो। उण बेळा राजा धरती माथै देवता रा दूत गिणीजता अर वारी मसा मुजब करण मे लोग आप रा धिन भाग गिणता। राज रै खिलाफ सुस्कारो करियांसू ई पाणी मे पिलाईज जावता। जद मेडी बेळा चवड धाडै बेठ-बेगार नकारण री बात घणकरां रै गळै कीकर उतरती। पछै मेक जागा री छूट दूजी जागा रा लोगा नै ई उकसावती। सो राजा-जमीदारा रै तो चिडको लागणो इज हो। सिळता सिळता गोविंदगरु अर वारी सप सभा राज रै गिरै करता [redacted] इण साव राजावा रै धपळका ऊठिया तो काई इचरज। सो इण बात मे की तत्त नी है क सप सभा री राजनीति सूं की सरोकार ई नी हो।

सप सभा रा मेम्बर भगत कहीजता अर रुद्राक्स री माळा ठठायोडी राखता। गोविंदगरु सप सभा री थरपणा पेलपरात सिरोही र भीली इलाके मे करी जकी करती करावती सगळे लकाळ ऊगूणे भीली इलाका मे पूगगी।[१७] डूगरपुर, बासवाडा, सिरोही, लकाळ मेवाड, ईडर गुजरात मालवा रा भीली इलाका रै गांव गाव मे सप सभा री जोर घणो इज बध ग्यो। गोविंदगरु री पेठ भीला बिचै तर तर बधवो इज करी। गोविंदगरु रै मू ड रा बोल भीला साह कानून हा अर इण बोल रो मोल वै माथै सटै ई जरुर राखता। गोविंदगरु री सीख मुजब भीला रै घर घर मे धुणी चेतन हुगी। भील कोई मतर बीजा तो जाणता कोयनी पण गोविंदगरु रै कह्या आपरै घर मे धुणी जगा'र घी खोपरा होमण लागा। इण होम सू भीलां रै मन मे सांति रैवती अर इण बात रो थावस हूवतो क वा माथै कोई आफत नीं आवेला।

1903 ई॰ मे माह महनै रै चादण पख मे सागै पूनम रै दिन मानागढ री पहाडी माथै मेक मोटो धुणी जगाई। गुजरात, बासवाडा अर डूगरपुर रा हजारां ई भील मेक नारेळ अर बाटकी भरियो घी लै'र मानागढ री भाखरी पूगा। घी

धुणी में होम भर नारेळ उठै इज राख देवता। मानागढ री पहाड़ी माथै नारेळां री ई भाखर चुणीज ग्यो। पछैस तो मायं बरस मानागढ री भाखरी माथै माह महनै पूनम रा तर तर सवायो मेळो भरीजण लागो। मेळो असल,में संप सभा रो सालाना इजलास हो गोविंदगरु रा डेढ लाख रै लगं ढगं भील चेला भायं बरस मानागढ रै मेळै पूगता।

सिरोही, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, मेवाड़ भर गुजरात रै भीली इलाकां रा राजा जागीरदार संप सभा रै मारफत भीलां में भेके सूं हड़बडीज भर भीलां बिचै फिदड़का नाखण रा कळाप करिया पण सावचेत भीला रै घकै वांरी दाळ गळी कोयनी। सेवट कुसलगढ, बांसवाड़ा भर डूंगरपुर रै राजावां में. ओ. जी. नै भरज करी क भील सगठित हू र न्यारो भील राज कायम करण माथै उतारु हुयोड़ा है। राजावां री सिकायत माथै भे. जी. जो. खेरवाड़ा छावणी रा फौजी अफसरां नै ताकीद करी क वै गोविंदगरु नै गिरफदार कर भीलां रा हथियार खोसलै। 7 दिसंबर 1908 (माह, पूनम, संवत् 1965) रै दिन हजारां भील मानागढ रै भाखर गोविंदगरु री सप सभा में भेळा हुया। आपरी मौज-मस्ती में भेकै इकळास री बातां में लागोड़ा हा क अंगरेजी फौज भाखरी नै चारू मेर सूं घेर नै अंधाधुंध गोळियां बरसावण लागो। कहीजै क भाखर माथै लासां रो धुम्को लाग ग्यो भर कोई 1500 नेड़ा भील गोळियां रा भख बणिया।[21] भाप गोविंदगरु कैद हुया भर वां माथै सुंथरामपुर राज रै गठरा गांव रै थाणेदार रै कतल री तोमत घर मुकदमो चलाईज्यो। असल में भो कतल पूंजा भीरा नांव रै भील करियो हो। पूंजा नै ठोक पीज भर पुलिस भा बात कहलवाई क गोविंदगरु उणनै गांजो पायो जिण सूं नसै में भापो भूलियोड़ै उण थाणेदार री कतल कर दियो। कानूनी इल्लम टिल्लम पछै गोविंदगरु नै फांसी री सजा बोळीजी। फांसी देवण री छाती पड़ी कोयनी जद सजा बदळीज भर 20 बरस री करीजी। इण पछै भपील में सजा भाधी हू र दस बरस रैयगी। थोड़ी घणी सजा काटियां पछै गोविंदगरु छूटा तो परा पण वांरै सुंथरामपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर भर कुसलगढ में बड़ण माथै पाबदी लागगो। जेळ सूं छूटां गोविंदगरु ब्रिटिस इलाकै दाहोद (गुजरात) रै पागती भालोद कस्बे में सवंगवास हुयो जठै तांई रैया।

मानागढ री भाखरी माथै भाज तांई बरसो बरस माह महीनै री पूनम रै दिन जबर मेळो भरीजै। भाखी रात भजन कीर्तन व्है।

भणूतं टैक्स भर बेगार सूं काठा काया हुयोड़ा मेवाड़ री पहाड़ा जागीर रा भील 1917 ई॰ में भान्दोलन माथै उछरिया। इण वेळा बिजोळिया भान्दोलन री धमचक जोरां माथै हो जिण सूं भीला रा कुद पड़ियोड़ा जीव ई खुलिया। जागीरी जुलमां भर बेगार री मार सूं साव घरतियां भायोड़ां गिरासिया ई भीळां साथै मिळ ग्या। घणो हाकाटहबड़ पछै भील- गिरासिया मई 1917 में महाराणा कनै पहाड़ा जागीरदार री भणूताई रै खिलाफ भपील करी। सगळी बातां

री सावळ जांच करिया पछै 16 नवम्बर 1918 रा महाराणा कूंतं[22] अर पेटियं[23] बाबत केई रियायता करी। महाराणा श्री ई भरोसौ दिरायौ क मणूती बेगार बाबत सिकायता री जांच ई करीजैला।[24] भील-गिरासिया रै महाराणा री बात जमी कोयनी इण सारू वै इल्लम टिल्लम करबौ करिया। इण वेळा खेरवाडा रै अंगरेज पालिटिकल सुपरडंट अर मेवाड रै रेजिडंट रै तोडियोडा तडफा ई बिरथा ग्या अर पहाडा में रोळवट मचियोडीज री।[25] करता करता भीला रो औ आन्दोलन ई सगळै मेवाडी मोमट में फैल ग्यौ। इण वेळा भील आन्दोलन री राछा मोतीलाल तेजावत रै सावचेत हाथा में पूगगी।

मोतीलाल भीला नै चेतावण रा जतन करण वाळा में सगळा सूं जोग, साव-चेत अर दाठीक गिणीजै। मेवाड रै आदिवासी इलाकं फलासिया रै गाव कोल्यारी में स० 1944 (ई० 1886), जेठ सुद अेकम रै दिन अेक ओसवाळ गवाडी में मोती-लाल तेजावत रौ जलम हुयौ।[26] वारै पिता रो नाव नंदलाल अर मा रो केसरबाई हौ। कोल्यारी में इज हिन्दी, उर्दू अर गुजराती भासावा सीखी। छाईस बरस री उमर में कोल्यारी रै पागती गाव झाडोल में लहरबाई सू परणी-जिया। मोटियार पणै मोतीलाल झाडोल रै जागीरदार कनै कामदारपदो संभाळियो। उण वेळा महाराणा दोरै माथै निकळता जद जागा जागा जागीर-दारा नै हाजरी देणी पडती। मोतीलाल नै झाडोल ठाकर रै साथै जहाजपुर, नाहर, मगरा अर जयसमद जावण रो मोको मिळियो। इण बेळा मोतीलाल भीला मे घणा वाला बीतता देखिया। तरै तरै सू बेगार में रगडाई, बिना तुसियौ ई दिया घास, लकडी आद लेवणा, नाकुछ बात माथै जूता सू जतराणा, भीला नै भूखा तिरसा राखणा अर बामडा में नी नी जेडी कुपीता करणी। इण गत री अलेखा बाता निजरा देखिया सूं मोतीलाल री जीव फाटग्यो। आठ बरस ताई झाडोल में कामदारी करिया पछै भीला रा भूंडा ढाळा देख ठिकाणै री नोकरी छोडदी। इण पछ केई दिना झाडोल रै इज अेक सेठ री दुकान माथै मुनीमगिरी संभाळी। अठै ई घणकरा गिराक भील इज। अठै बहिया में भीला माथै लेणै रा कोट लुणीजता देखिया। फेरू मोतीलाल रै जीव में तळतळाटी लागी। मिनख री मिनख माथै इसी अणूताई। दोनू जागा री नोकरिया री बेळा भीला साथै हुवती जुल्म-जास्ती सूं मोतलाल रो जीव हिल ग्यो। कामदार बण भीला नै कुटीजता देखिया तो मुनीम बणिया वै लुटीजता लागा। काळजो कळ-पीज अर मठोठा खावण लागो। भीला री गत माथै तरस आयी। टणकाई री कूट अर बहिया में हुवती लूट देख झाळ झाळ छूटगी। सरदा मुजब खिप खिपा'र भीला नै पर्गा करण री तेवडली। कामदारी री काळी मूंडो करियो ज्यूं इज मुनीम-गिरी रै माजणं धौवा धूड नाखता सेठा री नोकरी रै ई ठोकर ठोकदी। मोतीलाल तेजावत आपरी डायरी (मेवाड पुकार) में राजा, जमीदार, राज रा अफसर अर अहलकारा रा गरीब भीला माथै अणूता जुल्मा री घणौ खारो बखाण करियो है।[27] मणूती लूट कूट सूं भीला री पिंड छोडावण री धारिया

पछै मोतीलाल कूद पड़िया भीला विचै अर अेडो अलख जगायौ क भीला माथै जुल्म करण वाळा रा जीव जागा छोड धुकधुकी छूटगी।

भीला नै चेतावण री धारिया पछै मोतीलाल सामी पेली अबखाई आ आई क रोई अर अबखै भाखरा मे छीण छीण बिखरियोडा भीला विचै पूगै ई कीकर। सेवट अेक तजबीज विचारी। चित्तोड रै पागती मातृकुडिया मे वैसाख पूनम रै मेळै में अेक लाख रै लगै टगै करता री जमघट आयै वरस लागती। इण मे घणकरा भोमट रै गाव गाव रा भील हुवता। स० 1977 रै वैसाख पूनम रै मेळै मोतीलाल तेजावत जाय पूगा। इण वेळा घणकरा भील अणूता जुलमा सू सताई-जता सताईजता घाती आयोडा हा इज। बिजोळिया आन्दोलन ई थोडी घणी हिम्मत वधाई व्हैला। मोतीलाल पेला ठावका गमेतिया सू बातचीत करी। वानै समझाया। सगळा आ बात मान ग्या क राज री टेक्स भवै ई नी भरैला अर कोई बेगार नी देवैला। पछै अेक दूजै सू खुसर पुसर करी पछै आम सभा मे तेजा-वत री भासण हुयौ। लोगा माथै मोतीलाल री बाता जबर ई असर करियो। अेकलिंगजी री सोगन लै'र लोगा अेकी राखता, लाग-बाग अर बेगार नी देवण री भरोसौ दिरायौ। मेळौ बिखरिया गामेतिया आप आप रै गावा मे पूग अर लोगा नै 'अेकी' में भिळण सारु आखडिया लिराई। तेजावत रै हाथ रा लिखियोडा पुरचिया गाव गाव पूगा। ठौड ठौड कमेटिया बणगी अर लोग टेक्स अर बेगार नी देवण माथै तुलगा। इण वेळा मोतीलाल गाव गाव पूग अर लोगा नै अेकी आन्दोलन में भिळाया। करता करता अेकी आन्दोलन गजब ई जोर पकड लियौ। फलामिया, झाडोल, वदराना, केसरखेडी, माकतला, कैलासपुरी आद रा भील तेजावत रै झालै माथै सै की होमण सारु त्यार हुग्या। भोमट मे 'अेकी आन्दोलन' रा पग सावळ जम ग्या जद तेजावत हजारा भीला नै साथै लै र उदपुर थकी बईर हुया। मारग मे पग पग माथै लोगा अछन खमा करिया अर साथै वाळौ काफलौ तर तर भारी हुवतौ ग्यौ। भीला माथै हुवण वाळा जुलमा नै 'मेवाड पुकार' नाव सू लिख अर इक्कीस मागा महाराणा सामी धरी। हजारा भीला रा डेरा पिछोळा री पाळ माथै देख अर केई राज रा अफसर भुट ग्या अर फिदडकी नाखण रा विरया कळाप करिया। इण वेळा महाराणा 18 मागा तो मानली पण जगळात, वेठ-वेगार अर सू'र मारण सू जुडियोडी तीन वाता मानण सू सफा नट ग्या। जगदीसजी रै मिंदर रै पाअोडिया माथै ऊभ अर तेजावत अेलान करियौ क महा-राणा 18 मांगा मानली अर बाकी तीन जनता खुद मानै है सो सगळी री सगळी मागा मानीजगी है।[28]

इण वेळा लाग बाग अर वेगार रै मुद्दा माथै चेतिपोडौ भील आन्दोलन करता करता सिरोही, पालनपुर, ईडर, दांता आद रियासता में ई पूग ग्यो। 19 अगस्त 1921 रै दिन झाडोल जमीदार मोतीलाल नै गिरफदार कर । इण माथै 65 गांवा रा कोई सात हजार भील पूग अर मोतीलाल नै ।

मोतीलाल रो मान भीला बिचै घणो इज वघ ग्यो । ढोल रै ढमाका सूं गाव गांव मे मोतीलाल रा होकम पूगण लागा ।[30] 7 मार्च 1922 रा ईडर रियासत रै पाल मे 2000 भीला समेत मोतीलाल डेरा करियोडो जद मेजर सटन री फोज अचाणचक ई उठै पूग अर घना धन गोळिया बरसावण लागी । 22 जणा सागै जागा इज मर ग्या अर 29 घायल हुया ।[31] राजस्थान सेवा सघ री कूत मुजब इण वेळा मरण वाळा री गिणती अेक हजार रै नेडी नेडी ही ।[32]

7 मार्च रा मिनखा रै कच्चरघाण सू मोतीलाल अगेई नी घवरीज्यो अर न्यारी न्यारी रियासता रै गाव गाव मे फिर फिर नै भील आन्दोलन चेताया राखण रा कळाप करवो इज करियो । इण बिचै महात्मा गाधी रा खास मरजी-दान मणिलाल कोठारी अगरेजी हुकूमत कनै मोतीलाल तेजावत री पेरवी कर कोसीस करी क सरकार उणनै बरी करदै । ब्रिटिस सरकार टस ऊ मस नी हुई । मोतीलाल तेजावत री मानणो हो क उण कोई गुनाह नी करियो अर उण रा काम सामाजिक अर धार्मिक दीठ सू भीला नै चेतावण रै मतै सू करीज्या है ।[33] इण बिचै मेवाड अर सिरोही सरकारा मोतीलाल नै पकडण वाळै सारु नकद ईनाम रो अेलान करियो । ईडर राज ई इण वेळा मोतीलाल नै पकडण वाळै सारु पाच सौ रिपीया रो अेलान कियो ।[34] अगरेज अफसर ई पकडण सारु घणो फाया खाई अर बिरथा फाफा मारिया ।[35] इण बिचै भीला माथै ई घणा जुलम हुया । सरकार केई सैसू छोडिया । अेकर वावड लागा क मोतीलाल सिरोही रै भूला अर वालेरिया गावा मे छिपियोडो है । दोनू गावा मे कुल अडताळीस झू पडा इज हा । अेक रात रा अचाणचक दोनू गावा म आग लगवा दी । राई लोगा रा गूदड अर डागर दुरादुर बळ बळा अर भसम हुय्या ।[36] अेकर मेवाडी फौज छः महना सिरोही रै गाव गाव ढाणी ढाणी म मोतीलाल नै जोवती फिरी पण सेवट हार खा र पाछी उदपुर जावणो पडियो ।

सेवट 3 जून 1929 रै दिन ईडर रियासत रै खेड ब्रह्मा गाव मे मोतीलाल तेजावत गिरफदार करीज्यो ।[37] गिरफदारी वावत सुमनेसजी लिख्यो क अहमदा-वाद रा मणिलाल कोठारी महात्मा गाधी नै भील आन्दोलन बाबत राई राई अर समाचार पुगावो करता । बापू रै आदेस मुजब इज मोतीलाल तेजावत मरजी सू खेड ब्रह्मा मे जा'र गिरफदारी दीवी ।[38] ईडर रियासत आबू में अे जी जी. कनै खबर पूगती करी क मोतीलाल तेजावत नै रियासत आपरी जेळ मे नो राखणी चाव इण सारु अे. जी. जी री मसा व्है जठै ई ईडर रियासत उणनै मेलण नै त्यार है । अठी मेवाड रियासत माग करी क मोतीलाल मेवाड रो वासी है इण सारु उणनै मेवाड नै सू पियो जाव । मेवाडा माग सू अे. जी जी री इल्लत छूटी । ईडर रियासत इण आफत सू गैल छोडावणी चावती अर मेवाड उण माथै आपरो हक जता अर उणनै हासल करण सारु पग पटकती ही । 31 जुलाई 1929 नै मोतीलाल तेजावत मेवाड़ नै सू पीज्यो । उण माथै झाडोल रै

कोठार सू मक्की लेजावण अर राज रै सिपाई नै कूटण रा तोमत धर नै मुकदमा चालिया । सेवट दस बरस री करडी सजा ठोकीजी । मणिलाल कोठारी मोतीलाल नै छोडावण सारु खासी माथाफोड करी । 23 अप्रेल 1936 रै दिन जेळ सू छोटो जठा लग मोतीलाल कुल सात बरस रै लगै टग सजा भुगती । रिहाई पछै ई उदेपुर स्हैर पनाह रै वार निकळण माथै पावदी लागोडी री ।

उदैपुर मे रैवता थका 1938 मे प्रजा मडल रै प्रान्दोलन मे हिस्सौ लेवण सू पकडीज्या । पाछा छूटा पछै पत्तो पडियो क मारी काळ पडण सू भोमट रा भील भूख बिखो भुगतै है । राज सरकार सू भोमट मे जावण री छूट मागी । राज सरकार रै नटिया पछ ई भामट मे जावण सारु बईर हुग्रा पण राज रा हेरु मारग मे जाय पूगा अर पकड नै पाछा उदैपुर ला पुगाया । घर आगै पुलिस री पोरो लाग ग्यो । कहोजे क 1939 मे भीला नै माडाणी फोज मे भरती करण लागा जद मोतीलाल तेजावत पेरु भीला मे प्रान्दोलन छेडण री मत्तो करियो।[39] मेवाड हकूमत पूरो जोर लगा लगा अर भरोसौ दिरायो क मरजी बिना किणी भील नै जोरामरदी भवै ई फौज मे भरती नी करीजैला जद आन्दोलन री बात नीठा भळी गळी हुई । 1942 मे 'भारत छोडो आन्दोलन' री वेळा मोतीलाल तेजावत नै पेरु जेळ हुई ।[40] कोई तीनेक बरस री जेळ पछै 1945 मे रिहा हुया उदैपुर सू बारै निकळण माथै पावदी लागी जिकी 1947 मैं देस आजाद हुयौ जठै ताई लागोडीज रैई ।

देस रै आजाद हुया पछै 5 दिसबर 1963 रा भीला बिचै आजादी री मलख जगावण वाळै इण भीला रै सगळा सू सिरै नेता री सरगवास हुयो ।
इण गत उगणीसमी सदी रा भील आन्दोलन तौ पार नी पडिया पण बीसमी सदी री सरुवाद मे इज पेला गोविंदगरु अर पछै मोतीलाल तेजावत भीला नै चेतावण रा कळाप करिया । इणा रो करणी रग लाई । भील आन्दोलन अेडा छोळा चढिया क भील आबादी वाळी रियासता इज काई ।ब्रटिस हकूमत रै ई गिर हुगा ।

भील आन्दोलना सू हडवडीजियोडी भीली रियासता केई वेळा पच पचायती सारु नामी लोगा री मदद ई लीवी । तेजावत रा भील चेला जद पक्को धारली क वै हळ दीठ सवा रिपियै अर साढी बार सेर धान टाळ भवै ई को नी दवैला । ईडर नरेस आपरै खास मरजीदान हरभगवान बगाली रै मारफत कहाडियो क ज भील हळ दीठ अढाई रिपिया अर पच्चीस सेर धान देवणो क्बूल करलै तो समझोतो हू सकै । भील इण सुझाव रै ठोकर ठोव दी अर सवा रिपिय नै साढी बारै सेर धान सू वत्तो की देवण सारु हरगिज नी हामरिया ।[41]

सिरोही मे भोलां रा रोळा घणा इज बध ग्या अर रियासत घणा ई पग पटकिया तोई भील काबू नी आया जद सेवट स्टेट रै दीवाण रमाकात मालवीय

आपरै कानी सूं अरज कर नै बिजोळिया मे करसा रै आन्दोलन रा चावा नेता विजयसिंघ पथिक नै सुलै सफाई करावण सारु बुलाया। पथिक आपरै साथी रामचद्र वैद्य अर ब्रह्मचारी हरि रै साथै सिरोही पूग नै भीला अर स्टेट बिचै राजीनामैं री कोसीस करी। मणिलाल कोठारी ई भील आन्दोलन सूं जुडियोडा रिया। उरण रै बाबत विजयसिंघ पथिक कह्यो "मणिलालजी राजस्थान रा गरीब भीला सारु जो घणमोलो काम करियो वो भूलणजोग नी है।" राजस्थान सेवा सघ रा लोग ई बेळा कुबेळा भीला री घणी चाकरी करी। घर्के आवता भीला बिचै काम करण वाळा मे माणिक्यलाल वर्मा भोगीलाल पाड्या, बालेस्वर दयाल, बलवतसिंघ मेहता, हरिदेव जोसी अर गोरीसकर उपाध्याय रा नाव खास गिणावणजोग है। इण भीली इलाका मे स्कूला री थरपणा अर भीली समाज मे सुधार रा केई कळाप करिया।[42]

लोक गीत किणी समाज रा खास आरसी गिणीजै। भीली लोक गीता मे वारै जन आन्दोलन री भणक साफ सुणीजै। इण लोक गीता में अगरेजा नै पूरबिया राजा अर भूरियु इरयाद कह्या है। भीला मे अगरेजा रै विरोध रा केई लोग गीत चावा। इण लोक गीता मे लाग बाग, वेठ बेगार, कूत अर जागीरी जुल्मा री ई घणी धूड उडायोडो लखाव। भील आन्दोलन अहिंसक अर महात्मा गाधी र बतायोडै गेलै मुजब हो इण री साख ई लोक गीत भर। आप महात्मा गाधी री जै जैकार रा गीत ई भील घणै ठरकै सू अजे ताई गावै।[43] असल मे भील आन्दोलन नै अहिंसक राखण री जस ई गोविंदगुरु अर मोतीलाल तेजावत रै खवै इज है।

टीप :—

(1) 1492 ई. में क्रिस्टोफर कालवस पेलपात अमरीका पूगो। पछैम तौ हजारा री गिणती मे यूरोप रै खुणैं खुणै सू लोग अमेरिका पूगण लागा। यूरोपवाळा बदूक, बारुद, तोप समेत अमेरिका पूगा जद क सैठै रा बदीमी वासी जका घर्के आवता 'रेड इडियन' कहीज्या तीर अर भालै सूं इणा सामा पर रोवण री अकारथ खप्पत करी। सेवट आ हुई क रेड इडियन तौ मुकता मुकावता ठेट आधूणी- अमेरिका री रोई अर भाखरा में जाय पूगा। सगळै अमरीका मे यूरोपवाळा धस अर कब्जो जमा लियो।

(2) प्रेमसिंघ कांकरिया, भील क्राति के प्रणेता-मोतीलाल तेजावत, पेज 86

(3) पेमाराम, ऐग्रेरियन मूवमेंट इन राजस्थान, 75

(4) प्रेमसिंघ कांकरिया, भील क्राति के प्रणता, 84

(5) राम पाडे, ट्राईबल्स मूवमट, पेज 36 माथै विजयकुमार त्रिवेदी रो लेख।

(6) (I) दसरथ सरमा, राजस्थान थ्रू द एजेज, 33

(II) द स्टोन ऐज कल्चर आफ राजस्थान

(III) इस्टीट्यूट आफ हिस्टारिकल स्टडीज, कलकत्ता री आठवीं कांफ्रेंस रै

मोर्क सुवियोडो सोवेनियर, पेज 10-12

(IV) राजस्थानी संस्कृति रा चितराम, 116-117

(7) कांकरिया, भील क्रान्ति के प्रणेता, 83

(8) सक्सेना के. ग्रेस., राजस्थान में राजनीतिक जन जागरण, 72-73

(9) (I) सक्सेना, रा. मे रा. ज. जा., 73

(II) बैनी गुप्ता, संक्षिप्त वीर विनोद, 217

(10) (I) पेमाराम, अॅग्रेरियन मूवमेंट इन राजस्थान, 84

(II) सक्सेना, पालिटिकल मूवमेंट ॲंड अवेकनिंग इन राजस्थान, 167

(III) सक्सेना, राजस्थान मे राजनीतिक जन जागरण, 73

(11) इतिहास रा जगचावा विद्वान अर वीर विनोद रा लिखारा।

(12) राज० में राजनीतिक जन जागरण, 74

(13) पालीवाल, जावलिया अर मानव, क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंघ, व्यक्तित्व ग्रेवं कृतित्व, 241-245

(14) केसरीसिंघ बारहठ लिखी कविराजा स्यामलदास री जीवनी अकी क्रांतिकारी बारहठ केसरीसिंघ, व्यक्तित्व ग्रेवं कृतित्व पोथी रै पेज 244 मायँ छपी।

(15) सक्सेना, राजस्थान मे राजनीतिक जन जागरण, 74

(16) (I) सुमनेस जोसी, राजस्थान मे स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी, 2

(II) भील क्राति के प्रणेता-मोतीलाल तेजावत, 16

(17) सुमनेस जोसी, राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानी, 2

(18) (I) सुमनेस जोसी, राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानी, 3

(II) प्रेमसिंघ कांकरिया, भील क्राति के प्रणेता, 16

(III) पेमाराम, अॅग्रेरियन मूवमेंट इन राजस्थान, पेज 76 री तीजी टीप

(19) पदवयी सीताराम लाळस, राजस्थानी सबद कोस ख 4, जि. 3, 6169

बडभागी दीना विविद, सपत हित सनमान।
सप राखणी सीखियो, थिर चित राजस्थान॥

(ऊमरदान लाळस, ऊमर काव्य)

राखै सप जिकाधन राखै, 'बांको' दाखै साच विध
न्याय नीमडै जिते नीमडै, राज वधै ज्या तणोरिध॥

(बांकीदास)

(20) (I) सुमनेस जोसी, राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानी, 4

(II) कांकरिया, भील क्रान्ति के प्रणेता, 16-17

(21) सु. जो., राज. के स्व० से., 7

(22) कूंता=धान री कटाई पछै लाटै री वेळा राज रा अफसर पूग अर बिना नाप तोल करियां समळै धान रो अंदाजो लगा अर राज री पांती मुकरर कर देवता।

(23) पेटियो=राज रा कारिंदा काम काज माथै जावता जद वांरी रसाई रो सराजाम पासामी नै करणो पड़तो। घमस में खाज खाळो हो. अे. पेटियो कहीज सकै।

(24) उदैपुर रेजिडेंसी जागीर रेकार्ड, फाइल 19, बस्ता 60, 1917

प्रभिलेखागार, बीकानेर)

(25) (I) फारेन पालिटिकल, फाइल 1276 I, 1923 (नेशनल प्रार्काइव्ज, दिल्ली)
(II) पेमाराम, अग्रेरियन मूवमेंट इन राजस्थान, 77

(26) (I) भील क्रान्ति के प्रणेता-मोतीलाल तेजावत, 20
(II) बी. अेल. पानगड़िया, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम, 30

(27) मोतीलाल तेजावत री डायरी री हाथ लिखी नकल श्री जगदीससिंघ सोध संस्थान में मोजूद है, आ नकल 51 पेज मे है।

(28) (I) भील क्रान्ति के प्रणेता, 41
(II) राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी, 177

(29) (I) मेवाड़ वकील री खेरवाडा पालिटिकल अेजंट नै रपोट, 21, 25 अर 27 अगस्त, 1921
(II) उदैपुर रेजीडेंसी जागीर रेकार्ड, फाइल 91 बस्ता 65, 1921
(III) अेग्रेरियन मूवमेंट इन राजस्थान, 77

(30) पेमाराम, अेग्रेरियन मूवमेंट इन राजस्थान, 78

(31) (I) पेमाराम, अेग्रेरियन मूवमेंट इन राज., 87
(II) फारेन पालिटिकल, फाइल 428 पी (छानी), 1923

(32) नवीन राजस्थान, 7 मई 1922, पे.1

(33) (I) राजपूताना अे. जी. जी. नै मोतीलाल तेजावत री चिट्ठी. 25 मई, 1924
(II) फारेन पालिटिकल, फाइल 185-पी 1924
(III) राजपूताना अे. जी. जी. री भारत सचिव नै चिट्ठी, 17 फरवरी 1925

(34) (I) ईडर महाराज कुमार री महीकाटा पालिटिकल अेजट नै चिट्ठी, 28 सितम्बर 1928
(II) उदैपुर रेजिडेंसी, जागीर रेकार्ड, फाइल 64, ब. 68, 1922-23

(35) पेमाराम, अेग्रेरियन मूवमेंट इन राजस्थान, 96

(36) सुमनेस जोसी, राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी, 178

(37) (I) ईडर स्टेट कोंसल रजिडट री महीकाटा रै पालिटिकल अेजंट नै छानी चिठ्ठी न 821, 10 जून, 1929
(II) फारेन पालिटिकल, 276-पी., 1929

(38) राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी, 178

(39) (I) मेवाड़ रेजिडट रो प्राइम मिनिस्टर नै डी. ग्रो., 24 नवम्बर 1939
उदैपुर कान्फीडेन्सियल रेकार्ड, फा. 116, ब. 12, 1939

(40) पानगड़िया, राजस्थान मे स्वतन्त्रता संग्राम, 30-31

(41) संकर सहाय सक्सेना, बिजोलिया किसान आन्दोलन का इतिहास, 200-1
पद्मजा सरमा

(42) पानगड़िया, राज. में स्व. संग्राम, 31

(43) (I) प्रेमसिंघ कांकरिया, भील क्रान्ति के प्रणेता-मोतीलाल तेजावत, 110-111

(II) राम पांडे, ट्राईवल्स मूवमेंट, 53-60 मायें भगवतीलाल जैन री लेख

अंगरेज राजस्थान में कोकर बढ़िया हुए बाबत भी लोक गीत भीलां बिचे चावो :-

रईने केवा बोले रे
मगरो जोवे श्रावे रे
पुसतुं पुसतुं भावे रे
है मरिय पूसी ने दूं कामे मे
मगरो माए ते कुंण मोटो मगरो रे
बावन सोरा बावन
राजाना है सोरा बावन
बावन रजवाडा बावन
सारा हकरे करे
श्राबू मगरो श्राबू बाजे है
श्राबू हकरे गाजे है
भूरिया नुं राज करे
जिनु राज बाचे
हिरोई वालुं राजा
राजाउं वसन मागे
भोव राजा भोव
भूरियामे वसन श्राले
भूरियु राई ने बाले
श्राबू मगरो श्रालो
राजा मटी गीयूं
राजामे भुरियुं मोलवे
मारे सोलु मांडु
थोडी जगा श्रालो
मारे झुंपडी माडु
राजा भोलवाई गियो
जगा श्रालो दीदी
भुरियुं कोठी माडे
बावन राजा माते
नवो कानून काडे
भूरियुं राज करे
श्राबू नेई काडियो
गीत जातु मेलो
भूरियुं हुई भावे है ।

चालाक ग्रर ठग ग्रंगरेज खिळता खिळता महाराणा ने ठग ग्रर कोकर खेरवाड़े मे

ब्रिटिस छावणी-मरपी हुए बावत ई लोक गीत त्यार —

रईने केवा बोले रे
खडक माथे खेरवाडु
नवी कपनी माडे
भूरियु नवी सावणी मांडे
जमी मोल लिये
पाडा वारी खाल जतरो
खालडे जमी माये
खालडा जतरी जमो माते
भूरियु बगलो माडे
रे वेवणजी हामरो मारी वाता
खालडा नों हेवो काटे
हेवो लाबो करे
धरती मायणे लागु
देवे देवे धरती
मगरा माये भोलु राजा
राजा भीलवी सीहृ

अगरेजा नै "—ीया राजा' बता भर चित्तोड़ माथै हमलै बाबत लोक गीत —

रइने केवा बोले रे
पुरवनु है भूरियू रे
मगरो जोबे भावे रे
फौजे हइयार करे रे
दरीमा वेले हाले रे
रबीयानी फौज मन्दी थाई रे
पुरबीय भूली पेरीय रे
पुरबीया पासु जाये रे
वेते जातु रेईये रे
मेवाड जीती लीदी रे
देवता हेले माइवा रे
भील जाले मेलो रे
पुरबीया राजा

लाग-बाग भर जागीरी जुल्मा सु जुडियोडा ई केई मोनी लोक गीत —

रे इतरो दुख कुन सेवे राज, इतरो दुख कुन सेवे राज
रे इतरो दुख वेढ तो पेरो मरे राज, पेरो मरे भो राज
रे मारी भरजो सुनज्यो राज, मारी भरजो सुनज्यो राज
रे खर धान रो भोगे मती लेवो राज
खड धान रो भोग मती लेवो राज